



www.sukhiparivar.com

समृद्ध सुखी परिवार

₹25

दिसंबर 2011



देवताओं में अग्रपूज्य श्री गणपति

कृष्णलीला के गूढ़ रहस्य



रक्षा कवच है माँ का आशीर्वाद



VASU CREATION

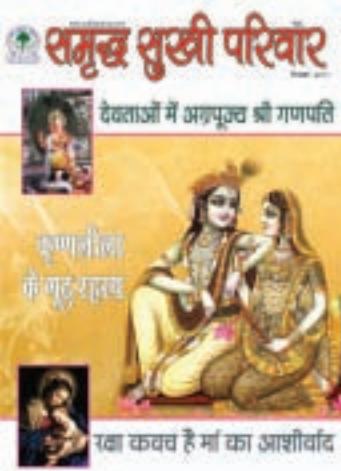
B-4/1626, RAI BAHADUR ROAD, LUDHIANA - 141 008

Phone No. 0161-2740154, 98142-62392

Mfrs. of PREMIUM RANGE OF GIRLS, LADIES & GENTS NIGHT WEARS

—: SPECIALISTS IN :—

LONG KURTA ♦ 3PC SET ♦ MATERNITY WEAR ♦ JIM WEAR ♦ CAPRI SET & SLEX SUIT



समृद्ध सुखी परिवार

सुखी और समृद्ध परिवार का मुख्यपत्र

वर्ष : 2 अंक : 11

दिसंबर 2011, मूल्य : 25 रु.

मार्गदर्शक
गणि राजेन्द्र विजय

परमशक्ति
मनीष जैन

अध्यक्ष: सुखी परिवार फाउंडेशन

संपादक
ललित गर्ग
(9811051133)

कला एवं साज-सज्जा
महेन्द्र बोरा
(9910406059)

सलाहकार मंडल
दीपक रथ, दीपक जैन-भायंदर,
अशोक एस. कोठारी, दिनेश बी. मेहता,
निकेश एम. जैन, कुशलराज बी. जैन,
नवीन एस. जैन, श्रीणिक एम. जैन-मुंबई,
बिन्दू रायसोनी,
चंदू वी. सोलंकी-बैंगलौर,
मुकेश अग्रवाल-दिल्ली,
विपिन जैन-लुधियाना

वितरण व्यवस्थापक
बरुण कुपार सिंह
+91-9968126797, 011-29847741

: शुल्क :

वार्षिक: 300 रु.

दस वर्षीय: 2100 रु.

पंद्रह वर्षीय: 3100 रु.

कार्यालय

ई-253, सरस्वती कुंज अर्पाटमेंट
25 आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज
दिल्ली-110092

E-mail: lalitgarg11@gmail.com

शीतल-सुखद होती है पुण्य की छाया

पुण्य की छाया शीतल, सुखद होती है। इहलौकिक, पारलौकिक, भौतिक, आध्यात्मिक सब सुख इससे मिलते हैं। पुण्य के बिना सत्संग नहीं मिलता, ज्ञान के बिना क्रिया नहीं होती, क्रिया के बिना मुक्ति नहीं होती, मुक्ति के बिना सच्चा सुख नहीं मिलता। अतः जीवन में अधिकाधिक पुण्य का आचरण करें, जीवन को मंगलमय बनाएं।

-गणि राजेन्द्र विजय

- 6 अहिंसा है जीवन का अमृत
- 6 भय एक मानसिक विकार है
- 8 बिन राधा, कृष्ण हैं आधा
- 9 आओ खुशियां खोजें, आनंद मनाएं
- 10 रक्षा कवच है मां का आशीर्वाद
- 11 आत्मा का घर : भौतिकता का घर
- 12 जादू-चमत्कार है अंतर्मन से की प्रार्थना में
- 13 भारतीयता के जीवंत प्रतीक थे राजेन्द्र बाबू
- 14 शिवलिंग का महात्म्य
- 14 फैंगशुई में सुख-समृद्धि के उपाय
- 15 हम प्रणाम क्यों करते हैं?
- 15 रसोई में जल कहां रखें
- 16 देवताओं में अग्रपूज्य श्री गणपति
- 17 मां-बाप और बच्चों में संस्कार
- 18 मौन की साधना
- 18 खाएं अंगूर-बीमारी रखें दूर
- 19 शरीर बल से मनोबल श्रेष्ठ होता है
- 19 कर्तव्यनिष्ठा
- 20 कैसा हो आपका वास्तु सम्मत ऑफिस
- 21 सरहिन्द का चक्रेश्वरी देवी मंदिर
- 21 स्नान का महत्व
- 22 महान समाज सुधारक संत पीपाजी
- 23 फैशन के नाम पर क्रूरताएं
- 26 भक्ति का अर्थ
- 27 जांबाज नारियां
- 27 तो कामयाबी आपकी है
- 28 कृष्णलीला के गृह रहस्य
- 29 रंग चिकित्सा है सुरक्षित उपचार प्रक्रिया
- 30 कहानी क्रिसमस वृक्ष की
- 31 गुणकारी वनौषधि अमलतास
- 32 दान देने से मिलती है समस्याओं से मुक्ति
- 32 उपयोगी टोटके
- 33 पांचों वक्त के नमाजी कादरी जैन धर्म के मुरीद
- 33 यह कैसी सामाजिकता है
- 34 मानस में समन्वय की भावदृष्टि
- 35 विधु अशुभ नहीं तो विधवा अशुभ क्यों?
- 36 कैसे हो चतना की शुद्धि
- 37 धन भी ईश्वर का अश है, उसका सम्मान करें
- 38 मां, बेटा और बहू
- 38 सतवाणी
- 39 आदमी सबके बाद क्यों?
- 40 The Turning of the Wheel of Dharma
- 40 Goal of this Tradition
- 41 Humankind's Greatest Virtue
- 41 Engage Karma Through Devotion
- 42 सफलता और साधन
- 45 प्रकृति की रंगशाला अल्पोडा
- 46 जीवन एक उत्सव है

- बल्लभ उवाच
- आचार्य सुदर्शनजी महाराज
- डॉ. अर्चना दुबे
- सीताराम गुप्ता
- हरिओम शास्त्री
- आचार्य चंदन मुनि
- डॉ. जमनालाल बायती
- डॉ. रामसिंह यादव
- सुरेश जायसवाल
- मुरली कांठेड़
- स्वामी चिन्मयानंद
- मुकेश अग्रवाल
- डॉ. विभा सिंह
- आचार्य शिवमुनि
- रचना भोला 'यामिनी'
- सुरेन्द्र शर्मा
- ऐलाचार्य श्री श्रुतसागरजी
- साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
- प. दयानंद शास्त्री
- महेन्द्रकुमार मस्त
- वंदना
- ललित शर्मा
- आचार्य विजय नित्यानंद सूरि
- आचार्य श्री विद्यानंद मुनि
- कहैया अगननी
- किशन धीरज
- रमेश भाई ओझा
- मंजुला जैन
- डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
- शशिभूषण शलभ
- आचार्य शैलेन्द्र पांडेय
- निकेश जैन
- विपीन जैन
- डॉ. मनोहर भंडारी
- ओमप्रकाश पोददार
- अनोखीलाल कोठारी
- आचार्य महाश्रमण
- श्री श्री रविशंकर
- सत्यनारायण पंवार
- मुनि तरुणसागर
- गणेश मुनि शास्त्री
- Lama Doboom Tulku
- Jaggi Vasudev
- Gani Rajendra Vijay
- Ramnath Narayanswami
- डॉ. श्याम मनोहर व्यास
- पुखराज सेठिया
- मनीष जैन



समृद्ध सुखी परिवार का अक्टूबर-2011 अंक मिला। इसका मुद्रण तथा साज-सज्जा पहले की तरह ही आकर्षक और सुरुचिपूर्ण लगा तथा संकलित सामग्री भी प्रेरणादायक, रोचक और ज्ञानवर्धक प्रतीत हुई। ओमप्रकाश मंजुल के लेख 'करवाचौथ पर बृहद दृष्टि' से एक नई जानकारी मिली। डॉ. निजामुद्दीन का लेख 'सच की रोशनी' भी अच्छा लगा। 'गमदेवग' के बारे में पुखराज सेठिया का लेख पढ़कर अच्छा लगा।

—कृष्ण कुमार ग्रोवर
एफ-बी/16, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-27

सास रगभित सामयिक संपादकीय पढ़कर मन प्रसन्न हुआ। प्रकाश देता हर दिया प्रणाम्य है। जनता को ऐसे प्रकाशसंभंग के पीछे पूरी शक्ति से खड़ा होना है। सराकर को अपने पतन को रोकना चाहिए, न कि पतन-अन्याय पर ऊंगली उठाने वालों को दबाने की कोशिश। पत्रिका इतनी सुदर और प्रकाशित सामग्री इतनी उपयोगी होती है कि बिना पढ़े नहीं रहा जाता। जिसे पढ़ने को देता हूँ वह बार-बार आग्रहपूर्वक पढ़ने को ले जाते हैं। मानव कल्याण को समर्पित इस पत्रिका परिवार को बधाई।

वही पूजा है जो लोकहित में जिया किया है सुलक्ष्य अपने भगीरथों का प्रयास देखो, गुजारा कैसे सफर न पछो। उठा के छोटी सी कंकड़ी जो उछाल फेंकी हंसी-हंसी में उगा रही है सरोवरों में वह कैसी-कैसी लहर न पूछो।

—श्याम श्रीवास्तव

988 सेक्टर-आई, एल.डी.ए
कानपुर रोड, लखनऊ-226012 (उ.प्र.)

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका सितंबर 2011 मेरे हाथों में है। इस नामाभिधान से महिलावादी पत्रिका का आभास होता है। बहुत सामान्य सा। जबकि पत्रिका सौंदर्य, शुभता और विविधता से भरी हुई है। आलेखों में युगीन रफतार और पाठकीय धैर्य का भी पूरा ध्यान रखा गया है। शानदार कलेक्शन और समाजोपयोगी संरचनाओं ने इसे भरपूर पठनीयता प्रदान की है। दूसरा नाम समृद्ध सुखी परिवार | दिसंबर-11

तो 'शतदल' होना था। सबसे उत्कृष्ट है एंटन चेखव का मनोगत। मुनि तरुणसागरजी और मां आनंदमूर्ति के चन्द्रन प्राणों में उत्तर गए। बल्लभ उवाच, ताराचंद आहूजा, श्यामसुंदर दास और योगी अनूप मात्र पोषण ही नहीं करते, बदलते संदर्भों में पौराणिक आठ्यानों और शास्त्रीय प्रतिमानों को सिद्ध करते हैं। यह ठकुसुहाती नहीं है, सचमुच पत्रिका ने अपनी परिवर्तनकारी वैचारिकता से अभिभूत कर दिया। संपादकीय विचारोत्तेजक है।

—इंदिरा किसलय
बल्लालेश्वर, रेणुका विहार, शताब्दी चौक
नागपुर-440027 (महाराष्ट्र)

समृद्ध सुखी परिवार का कलेक्शन उत्कृष्ट दर्जे का है। पारिवारिक परिवेश के इर्द-गिर्द व्याप विषयों पर केन्द्रित पत्रिका वह सुकून व आत्मीयता देती है जो कि रक्तरंजित व असामाजिक समाचारों से अटे पड़े अनगिनत समाचार-पत्रों में खोजे नहीं मिलती। अल्प समय में पत्रिका को स्थापित करना आपके साहित्यिक जुनून का परिणाम है।

—डॉ. ललित फरक्क्या 'पार्थ'
'श्रद्धाश्रय', 14 गोविंद नगर, दशपुर
मंदसौर-458001 (म.प्र.)

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका मिली। मैंने सद्विचारों के रूपों को हृदयों की मंजूषा में सौंचत करने से मानवमात्र का कल्याण संभव है। सारभूत संपादकीय, सुपाठ्य एवं प्रेरक सामग्री, बाह्य एवं अंतरिक साजसज्जा की संपन्नता एवं लोकमंगल के संदेश ने प्रभावित किया। मूर्छित समाज एवं कराहती मानवता के लिए उक्त पत्रिका संजीवनी के समान है। इस कोटि की पत्रिकाएं अत्यल्प मात्रा में निकल रही हैं। सुपाठ्य एवं चिंतनशील सामग्री पहेतु आपका पुनः आभार।

—डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी
24-आंचल कॉलोनी, श्यामगंज
बरेली-243005 (उ.प्र.)

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका का अक्टूबर व नवम्बर अंक प्राप्त हुआ। विश्वसनीयता की

समृद्ध सुखी परिवार

सिल्क पारम्
का एस्टेट
नारी सम्मू
चों का पर्यावर

जल विद्युत
परिवर्तन का पर्यावर

व्यापक दृष्टि चाहिए जीवन के प्रति

कसौटी पर खरी उतरने वाली इस पत्रिका की उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री हो या चमचमाता हुआ आवारण पृष्ठ, बेहतरीन प्रिंटिंग हो चाहे सामाजिक सरोकार से जुड़े संवेदनशील मुद्दों को उठाने की समझ, अध्यात्म व जानकारी से परिपूर्ण इसका लाजवाब संपादकीय सब मिलकर इसे एक संग्रहणीय व अनुठी पत्रिका बनाते हैं।

अभी तक दीये की इतनी ही व्याख्या सुनी थी कि जो स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी देने की प्रेरणा देता है। मगर अक्टूबर अंक के संपादकीय को पढ़कर जाना कि सर्वत्र रोशनी फैलाने वाला दीया भी हमसे कुछ चाहता है। निश्चित रूप से जब हम भ्रष्टाचार, कालेधन, राजनीतिक अपराध जैसे दुश्मनों का सर्वनाश कर विजयी होंगे तभी सच्चे हिन्दुस्तानी कहलाने के अधिकारी होंगे।

—सरोज जैन
डी-5/9, मॉडल टाउन, दिल्ली-19

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका का नवम्बर-2011 अंक मिला। आपकी पत्रिका साज-सज्जा एवं अमूल्य सामग्री की दृष्टि से उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणाप्रद है।

—महेन्द्र कुमार जैन 'भगतजी'
आर-1/66, सेक्टर-1, राजनगर
गाजियाबाद-201002 (उ.प्र.)



दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित 'समृद्ध सुखी परिवार' पत्रिका का विमोचन करती हुई



आओ रोशनी के साथ चलें

इंडियन स्पाइनल इंजुरी सेंटर के हैरिटेज बार्ड में मेरे पुत्र के सहरोगी मि. टोनिस ने डॉक्टरों के दल के सम्मुख जीवन का एक बड़ा सच व्यक्त करते हुए कहा कि व्यक्ति जिस दिन रोना बंद कर देगा, उसी दिन से वह जीना शुरू कर देगा। यह अधिव्यक्ति थके मन और शिथिल देह के साथ उलझन से घिरे जीवन में यकायक उत्साह का संगीत गुंजायमान कर गयी।

नैशंय पर मनुष्य की विजय का सबसे बड़ा प्रमाण है आशावादिता और यही है जीत हासिल करने का उद्घोष। आशावादी होने के अनेक कारण हैं, इसमें तनिक भी सदेह नहीं। पर निराशा के कारणों की सूची भी लंबी है, इसे भी नकारा नहीं जा सकता।

अच्छी बातें भी रोज दिखने को मिलती हैं, नियमितता भी रोज मिलती है, शुद्धता भी कुछ अंशों में कायम है, सच्चाई और ईमानदारी के उदाहरण भी हमें याद दिलाने जितने मिल जायेंगे उनको अभी कुछ लोग जी रहे हैं।

सूर्य रोज समय पर उगता है। चिंडियां भी तभी चहकती हैं। अखबार रोज आते हैं। ट्रेन रोज चलती हैं, स्कूल रोज लगता है। बैंकों में करोड़ों के लेन-देन रोज होते हैं, लेकिन धोखा देने या गलत काम करने का भय नहीं रहा। रेल लेट हो रही हैं, अस्पतालों में मरीज इलाज के लिये तरस रहे हैं, चारों ओर अराजकता एवं अनुशासनहीनता बिखरी है, हर व्यक्ति अपनी जिम्मेवारी से मुंह छुपा रहा है। गलतियों पर गलतियां और 'मेरे कहने का मतलब यह नहीं था' ऐसा कहकर रोज बयान बदले जाते हैं। आश्वासन कब किसने पूरे किए। झूटे मामलों की संख्या न्यायालयों में लाखों की तादाद में है। स्वार्थ के कारण कार्यालयों में फाईलों के अंबार लगे हैं। सड़कें, गलियां गंदगी से भरी पड़ी हैं। सरकारी खजाने, अब जंगल में नहीं, कागजों में लूटे जाते हैं। विकास की राशि अंतिम छोर तक दस प्रतिशत भी नहीं पहुंचती। यहां तक कि हंसी भी नकली, रोना भी नकली, दानदाता भी नकली, भिखारी भी नकली, डॉक्टर भी नकली, दवा भी नकली, इलाज भी नकली। इन सबके पीछे मनुष्य की दूषित मनोवृत्ति है।

मनुष्य की इस मनोवृत्ति को ही मैं अक्सर अपने सम्पादकीय में चर्चा का विषय बनाता रहा हूँ। समस्याओं को उजागर करता हूँ। निराशा और अंधेरा ही मेरे सम्पादकीय में अधिव्यक्त होते हैं। क्या आशा और रोशनी का सचमुच अकाल हो गया है? फिर क्यों नहीं अच्छाई एवं रोशनी की बात होती? क्यों नहीं हम नेगेटिविटी से बाहर आते? सत्य और ईमानदारी से परिचय कराना इतना जटिल क्यों होता जा रहा है? आज का जीवन आशा और निराशा का इतना गाढ़ा मिश्रण है कि उसका नीर-क्षीर करना मुश्किल हो गया है। आशा विजयी स्तर पर आये, वह दबे नहीं।

आशा की ओर बढ़ना है तो पहले निराशा को रोकना होगा। इस छोटे-से दर्शन वाक्य में मेरी अभिव्यक्ति का आधार छुपा है। मोजार्ट और बीथोवेन का संगीत हो, अजंता के चित्र हों, वाल्ट व्हिटमैन की कविता हो, कालिदास की भव्य कल्पनाएं हों, प्रसाद का उदात्त भाव-जगत हो... सबमें एक आशावादिता घटित हो रही है। एक पल को कल्पना करिए कि ये सब न होते, रंगों-रेखाओं, शब्दों-ध्वनियों का समय और सम्भता के विस्तार में फैला इतना विशाल चंदोवा न होता, तो हम किस तरह के लोग होते? कितने मशीनी, थके और ऊबे हुए लोग! अपने खोए हुए विश्वास को तलाशने की प्रक्रिया में मानव-जाति ने जो कुछ रचा है, उसी में उसका भविष्य है। यह विश्वास किसी एक देश और समाज का नहीं है। यह समूची मानव-नस्ल की सामूहिक विरासत है। मनुष्य में जो कुछ उदात्त है, सुंदर है, सार्थक और रचनामय है, वह सब जीवन दर्शन है। यह दर्शन ऐसे ही है जैसे एक सुंदर पुस्तक पर सुंदरतम पंक्तियों को चिह्नांकित कर दिया गया। ये रोज-रोज के भाव की ही केन्द्रित अभिव्यक्तियां हैं। काई एक दिन ही उत्सव नहीं होता। वह तो सिर्फ रोज-रोज के उत्सव की याद दिलाने वाली एक सुनहरी गांठ होता है।

पुराना कैलेंडर बदलते बक्त हमेशा उस पर बक्त के कई निशान दिखाई देते हैं- लाल, काले और अनेक रंगों के। इस बार लगा जैसे बक्त ने ज्यादा निशान छोड़े हैं। देश-विदेश में बहुत घटित हुआ है। अनेक राष्ट्र आर्थिक कर्ज में बिखर गये तो अनेक बिखरने की तैयारी में हैं। अच्छा कम, बुरा ज्यादा। यह अनुपात हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। शांति और भलाई के भी बहुत प्रयास हुए हैं। पर लगता है, अशांति, कष्ट, विपत्तियां, हिंसा, भ्रष्टाचार, आतंकवाद और अन्याय महामारी के रूप में बढ़ रहे हैं। सब घटनाओं का जिक्र मेरे पृष्ठ के कलेवर में समा ही नहीं सकता।

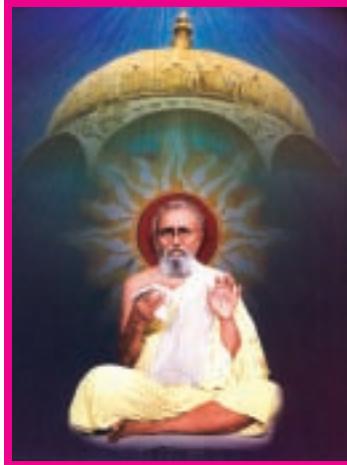
सबसे बड़ी बात उभरकर आई है कि झाँपड़ी और फुटपाथ के आदमी से लेकर सुपर पावर का नेतृत्व भी आज भ्रष्ट है। भ्रष्टाचार के आतंक से पूरा विश्व त्रस्त है। शीर्ष नेतृत्व एवं प्रशासन में पारदर्शी व्यक्तित्व रहे ही नहीं। सबने राजनीति, कूटनीति के मुखौटे लगा रखे हैं। सही और गलत की परिभाषा सब अपनी अलग-अलग करते हैं। अपनी बात गिरगिट के रंग की तरह बदलते रहते हैं। कोई देश किसी देश का सच्चा मित्र होने का भरोसा केवल औपचारिक समारोह तक दर्शाता है।

खेल के मैदान से लेकर पालियामेंट तक सब जगह अनियमिता एवं भ्रष्टाचार है। गरीब आदमी की जेब से लेकर बैंक के खजानों तक लूट मची हुई है। छोटी से छोटी संस्था से लेकर यू.एन.ओ. तक सभी जगह लॉबीवाद फैला हुआ है। साधारण कार्यकर्ता से लेकर बड़े से बड़े धार्मिक महांतों तक में राजनीति आ गई है। पंच-पुलिस से लेकर देश के प्रधानमंत्री तक निर्वाच की कहीं कोई सुनवाई नहीं है। भगवान की साक्षी से सेवा स्वीकारने वाला डॉक्टर भी रोगी से व्यापर करता है। जिस मातृभूमि के आंगन में छोटे से बड़े हुए हैं, उसका भी हित कुछ रूपयों के लालच में बेच देते हैं। नैतिक मूल्यों की गिरावट की सीमा लांघते ऐसे दृश्य रोज दिखाई देते हैं। इन सब स्थितियों के बावजूद हमें बदलती तारीखों के साथ अपना नजरिया बदलना होगा। जो खोया है उस पर आंसू न बहाकर प्राप्त उपलब्धियों से विकास के नये रास्ते खोलने हैं। इस बात को अच्छी तरह समझ लेना है कि अच्छाइयां किसी व्यक्ति विशेष की बोपैती नहीं होतीं। उसे जीने का सबको समान अधिकार है। जरूरत उस संकल्प की है जो अच्छाई को जीने के लिये लिया जाये। भला सूरज के प्रकाश को कौन अपने घर में कैद कर पाया है?

—राकेश सिंह

मनुष्य में जो कुछ उदात्त है, सुंदर है, सार्थक और रचनामय है, वह सब जीवन दर्शन है। यह दर्शन ऐसे ही है जैसे एक सुंदर पुस्तक पर सुंदरतम पंक्तियों को चिह्नांकित कर दिया गया। ये रोज-रोज के भाव की ही केन्द्रित अभिव्यक्तियां हैं। काई एक दिन ही उत्सव नहीं होता। वह तो सिर्फ रोज-रोज के उत्सव की याद दिलाने वाली एक सुनहरी गांठ होता है।





अहिंसा है जीवन का अमृत

अहिंसा का अर्थ इतना ही नहीं कि किसी जीव को न मारो, यह तो अहिंसा का एक निषेध पक्ष है। इस शब्द का आशय बहुत व्यापक है।

यदि विचार किया जाए तो किसी को कष्ट देना, मारना, दुखित करना, या कष्ट उठाने पर बाधित करने का अधिकार किसी को नहीं। जब आप किसी को जीवन दे नहीं सकते, तो उसके जीवन को लेने का अधिकार ही क्या है आपको? मन, वचन, काया द्वारा किसी को हानि पहुंचाना भी हिंसा की श्रेणी में आता है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरे के मन, तन पर एक आधात लगता है, चोट पहुंचती है। चाहे वह कोई जीव हो या प्राणी, मानव या वनस्पति इस सिद्धांत को तो आज का विज्ञान भी नहीं मानता है। सर जगदीशचन्द्र बोस पेड़ों की टहनियों को तोड़ना देखकर रोने लगते थे।

पेड़ पौधे, पशु-पक्षी, जीव सब में रुदन, हंसी, अनुभव, सुख, दुःख समझने की शक्ति को आज नास्तिक विज्ञान भी मानता है।

फिर अपने किसी कृत्य द्वारा, किसी भी वस्तु को हानि पहुंचाने का विचार करना या पहुंचाना भी हिंसा ही तो है।

आप अपने ऊपर ही घटित कीजिये इस तथ्य को, एक अंगुली के बदले तीन अंगुलियां उठ जाती हैं।

आपको एक कांटा लग जाए क्या अनुभव होगा?

आपको मारने की धमकी दे दी जाए कैसा लगेगा आपको।

आपको यदि किसी भावी आधात की शंका करा दी जाए तो क्या होगी

आपकी मानसिक स्थिति?

स्वयं पर इन परिस्थितियों को घटाइये।

क्या आप पीड़ा, दुःख, कष्ट, डर को सहने की शक्ति रखते हैं। जब नहीं, तो फिर किसी को देने का अधिकार भी नहीं रखते।

आप दूसरों पर यही घटित होने या करने की आशा क्यों करते हैं?

हिंसा से द्वेषभाव पैदा होता है, और यही शत्रुता तथा अन्याय और पाप को जन्म देती है। अतः अहिंसा का मुख्य उद्देश्य प्राणी मात्र पर मन, वचन, काया द्वारा दयाभाव रखना, उन्हें अपना रूप समझना है। द्वेष, क्रोध, आवेश ईर्ष्या को कम करना, प्रत्येक प्राणी का भला चाहना, कल्याण की भावना को जागृत करना है।

परिवार, समाज एवं राष्ट्र व विश्व को एक रूप समझकर न्याय की दृष्टि पैदा करना-अहिंसा का प्रथम लक्ष्य है। हर जीव में जान है-

जैसे हम अपनी जान को प्यार करते हैं, उसी प्रकार हर जीव करता है। जब हममें अपनी सुरक्षा की भावना है तो हर प्राणी मात्र में वही भावना है और अपनी सुरक्षा हेतु वे अपना प्रतिकार भी करते हैं।

एक छोटी सी चींटी दब जाने पर कैसे काटती है?

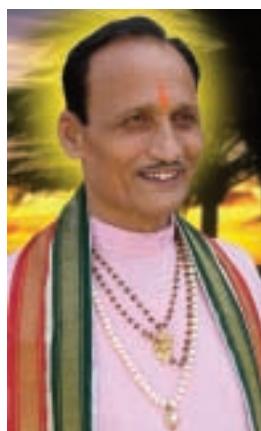
एक क्षुद्र कांटा चुभने पर कैसा दर्द देता है?

परन्तु यही कांटे फूलों को जन्म देते हैं।

यहीं चीटिया मानव को परिश्रम और एकता का पाठ सिखाती है, फिर क्या कारण है कि-

“मानव में हिंसा की प्रवृत्ति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। अपनी जिह्वा के स्वाद और शरीर के लिए वह इन प्राणियों को अपना भोजन बनाने से भी नहीं चूकता। यह पाशविकता मानव को मानवता से दूर पतन की ओर खींच रही है। इसलिए अहिंसा का ज्ञान, इसके तत्त्वों को समझने का ज्ञान मानव में उत्पन्न होना आवश्यक है। तभी यह विश्व एक कल्याणमय रणभूमि बन सकता है।”

अहिंसा जीवनामृत है। इसका पान ऐसे कीजिए कि इसकी खुमारी से जीवन आलोकित हो उठे। फिर ज्योति से ज्योति जलती चली जाएगी। ■



भय एक मानसिक विकार है

॥ आचार्य सुदर्शनजी महाराज

भय, मन का एक विकार है। भय से उसका व्यक्तित्व भी ढह जाता है। जो परमात्मा का प्यार है, सबसे पहले उसके अंदर निर्भयता आती है। भय की कोई वास्तविकता नहीं होती है, इसे अपने मन के पास फटकने भी न दें। यह स्वयं हमारे द्वारा पैदा किया हुआ एक विकार होता है। खेल-खेल में कायर बनाये जाने वाले बच्चे जीवन के अन्तिम समय तक डरपोक बने रहते हैं।

कहते हैं कि नेपोलियन जैसा बहादुर सेनापति भी बचपन में किसी बिल्ली से डर गया, तो जिन्दगी भर बिल्ली से डरता ही रहा। युद्ध में उसके विरोधी स्वयं को परास्त होता देख बिल्लियों के समूह नेपोलियन के सामने छोड़ दिया करते थे। मनोविज्ञान इसे एक मनोविकार मानता है।

जब मनुष्य मन से भयभीत होता है तो उसके मस्तिष्क की ग्रन्थियां सक्रिय होकर स्राव करने लगती हैं और वह उसकी दृढ़ता को कमज़ोर कर देती है। इसका प्रभाव अलग-अलग व्यक्तियों पर अलग-अलग प्रकार से पड़ता है। बच्चों को बचपन से ही बहादुर बनाने का प्रयास करें। उन्हें

धर्मवीर, शूरवीर अथवा कर्मवीर बनाएं। जैसे शिवाजी की मां ने उन्हें बनाया। मदालसा ने अपने मन मुताबिक अपने बच्चों को बनाया।

कुछ लोगों के बात-बात में रोंगटे खड़े हो जाते हैं, घबराने लगते हैं, डर से कांपने तक लगते हैं। कुछ लोग तो चूहे, छिपकली, कुर्से आदि से इतना डरते हैं कि वे इनके पास आना तो दूर, ईर्द-गिर्द फटकना भी पसंद नहीं करते।

भय वाला व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में असफल होता है। जिसके पास आत्मविश्वास व आन्तरिक मजबूती है, वह बड़ा से बड़ा कार्य चुटकी में कर देता है। यदि डरना ही है, तो पाप से डरें, कुरुक्षेत्र से डरें। ताकि आप परमात्मा के प्यारे लाडले बन सकें। ईश्वर ने आपको डरपोक बनकर जीने के लिए नहीं भेजा है। आप भयमुक्त जीवन जीना सीखें। आप अपनी छिपी हुई शक्तियों को जागृत कर ऊंचाई के शिखर को छूएं। सद्कार्यों से निर्भयता आती है, जीवन में उच्चता आती है। ■

‘समृद्ध सुखी परिवार’ मासिक पत्रिका निम्न

वेबसाइट पर भी उपलब्ध है:

www.sukhiparivar.com

www.herenow4u.net

www.checonjainam.org



शीतल-सुखद होती है पुण्य की छाया

हमारे नीतिकारों ने सात सुख कहे हैं- (1) निरोगी काया, (2) घर में माया, (3) प्रियवचन सुत नारी, (4) पुत्र आज्ञाकारी, (5) सुस्थानवासा, (6) राज में पासा और (7) वैकुण्ठ में वासा।

इन सात सुखों में छह सुख इलालैकिक हैं और सातवां पारलौकिक है। जिसे ये सातों सुख मिल जाते हैं उसके दोनों लोक संवर जाते हैं। पुण्य के उदय से मिलन वाले 7 सुखों की अल्पता, बहुलता एवं परिपूर्णता पुण्य का ट्रेलर है और दुःखों की बहुलता पाप का ट्रेलर है, लेकिन सुख और दुःख की परिभाषा हर जीव जानता है।

जीवनरूपी पुस्तक का लेखक कोई दूसरा नहीं है बल्कि जीव स्वयं ही अपने हाथों से अपने सुख-दुःख का आलेख लिखता है। अगर हमने पुण्य के लेख, सदाचरण की कहानी लिखी है तो हमें भी आनंद आएगा और दूसरों को भी और अगर हमने पाप के लेख, दुष्कर्म की कहानी लिखी है तो हमारे कृत्यों से न हमें सुख मिलेगा न दूसरों को।

दुःख आठ कहे गए हैं- (1) घर में टोया, (2) अलग होवे बेया, (3) आंगन में बोर, (4) पड़ोसी चोर, (5) अलग होवे नीर, (6) मूर्ख से शोर, (7) पराया जोखा और (8) हाथ में हुक्का।

ये सामान्य बोलचाल के आठ दुःख हैं। ये सभी दुःख इलालैकिक हैं, पारलौकिक नहीं। पूर्व पाप के फल हैं। दुःख एक जन्म में ही होता है। अभी का दुःख अभी खत्म हो जायेगा लेकिन उसका अंतरंग कारण जो पाप है वह दोगों जन्मों में रहता है। पुण्य से पाप की संख्या दुगुनी है। भगवान ने नौ पुण्य ही कहें हैं जबकि पाप अठारह। अठारह पाप को भी नौ पुण्य खत्म कर देते हैं। ये संख्या में पाप से आधे हैं, शक्ति में अनेक गुणा अधिक हैं। पाप अनंत संसार में अनंतकाल तक परिश्रमण करता है लेकिन पुण्य उस अनंत को काटकर जीरो कर देता है। पुण्य में वह शक्ति है जो पाप की संपूर्ण शक्ति को हमेशा के लिए समाप्त कर देता है। मगर पाप में वह शक्ति नहीं जो पुण्य को हमेशा के लिए खत्म कर दे।

पुण्य और पाप की परिभाषा अनेक ग्रंथों में हुई है। सभी मत-ग्रंथों ने इन्हें निर्वाप रूप से स्वीकारा है। महर्षि वेदव्यास ने 18 पुराणों की रचना करके राजा जनक को भेट किए। राजा ने देखा कि इतने बड़े पुराण मैं इतने कम समय में कैसे पढ़ पाऊंगा, राजकाज में इतना व्यस्त रहता हूं कि समय मिल ही नहीं पाता। राजा ने कहा-महर्षिर! आप मुझे इन पुराणों का सार दो वाक्यों में कह दिया-

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्!

परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीड़नम्!

अठारह पुराणों में व्यास ऋषि के दो वचन सारभूत हैं कि जो परोपकार है वह पुण्य है तथा जिसमें स्वार्थ के वश होकर दूसरों को पीड़ा पहुंचाई जाती है वह पाप है।

तथागत बुद्ध ने आलंकारिक भाषा में कहा है-“पाप का फल जब तक

पकता नहीं, मीठा लगता है, परन्तु जब पकने लगता है तब वह बड़ा कड़वा और दुःखदायी लगता है। पुण्य का बीज बोते समय कष्टप्रद होता है किन्तु जब उसका फल लगता है तो बहुत मीठा और रसप्रद लगता है।”

तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वाति का कथन है- ‘शुभः पुण्यस्य’-शुभ कर्म पुण्य है।

आचार्य पूज्यपाद ने तत्वार्थ राजवार्तिक ने भी यही परिभाषा दी है-

पुनाति आत्मानं पूयतेऽनेनेति पुण्यम्।

-जो आत्मा को पवित्र करे वह पुण्य है।

इसी प्रकार पाप की परिभाषा करते हुए आचार्यों ने कहा है-

‘पांशुयति मलिनयति जीवम् इति पापम्।’

-जो जीव को मलिन करता है, धूलि धूसरित बना देता है वह

है पाप।

आचार्य मलयगिरि कहते हैं-

पातयति नरकादिव्यति पापम्।

-अर्थात् जो आत्मा को नरक आदि दुर्गतियों में गिराता है वह कार्य पाप है।

महर्षि वेदव्यास ने कहा है-

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति, पुण्यं ऐच्छनित मानवः।

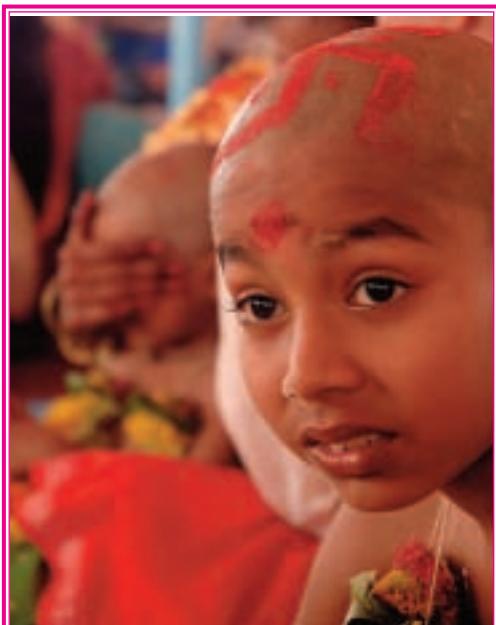
फलं नेच्छन्ति पापस्य, पापं कुर्वन्ति मानवाः॥

-मनुष्य की एक विचित्र भावना है कि वह फल तो चाहता है पुण्य का, किन्तु पुण्य करना नहीं चाहता, पाप का फल नहीं चाहता, फिर भी दिन-रात पाप ही करता जाता है।

आज व्यक्ति की दिनचर्या पर हम दृष्टिपात करें तो दिन के चौबीस घंटों में से अधिक समय पाप में व्यतीत होता है। पहले

जमाने में व्यक्ति सुबह उठते ही सर्वप्रथम भगवान का ध्यान करते, सामायिक करते, बड़ों को नमस्कार करते, ईश स्तुति करते। फिर उठकर गय, कुत्ते को रोटी, गुड़, चारा आदि देते, कबूतरों को दाना डालते, मोहल्ले के पशुओं को पानी पिलाते, तालाब में रही मछलियों को आटे की गोलियां खिलाते। इस प्रकार जीव रक्षात्मक शुभ कार्यों से मन, वचन, काय से पुण्य का बन्ध करते। जबकि आज तो व्यक्ति उठते ही नहाता है। पानी के असंख्य जीवों की हिंसा करता है। पहले व्यक्ति के द्वारा स्व शरीर के निमित्त बहुत कम जीवों की हिंसा होती थी तथा प्राकृतिक संपदा का अपव्यय भी नहीं होता था। कपड़े अधिक गदे नहीं होते तब भी रोजाना धुलाई की आदत बन गई जिसमें जल के जीवों की हिंसा का पाप अत्यधिक हो गया।

आज की संस्कृति बेड टी की संस्कृति है। बेड टी से पूर्व भी वे किन्हीं महापुरुषों का ध्यान करने के बजाय टीवी चला देते हैं। जबकि श्रावक वे होते हैं जो नाशते और भोजन से पूर्व यह भावना भाते हैं कि नगर में जो भी साधु-साध्वी विराज रहे हैं वे पधारे, मैं उन्हें दान दूँ। अपने भोजन में से कुछ हिस्सा दान के लिए निकालते हैं। भोजन में से एक पदार्थ का त्याग करते हैं। एक विग्रह छोड़ते हैं। ऐसा भोजन पापबंध की जगह पुण्यबंध



का कारक होता है। आज पानी के लिए इंसान से भी अधिक पशु तड़पते हुए मारे-मारे फिरते हैं। प्रत्येक घर में विपुल मात्रा में पानी व्यर्थ बहता है। गर्मी आने पर इंसान दिन में तीन-तीन बार नहा लेता है। घंटों बाथटब में रहता है, स्विमिंग पूल में तैरता है मगर उसके मन में यह बोध नहीं जगता कि गली-मोहल्ले में एक भी टंकी नहीं जिसमें पानी ही डाल दिया जाए जिसे पीकर पशुओं की प्यास बुझ जाए। व्यक्ति बर्तन मांजने में दिनभर 10-15 बाल्टी पानी व्यर्थ बहा देता है। इससे हिंसा का पाप लगता है। यदि वह दिनभर में इसका आधा पानी भी पिला देता है तो एक पशु के जीवन की रक्षा होती है।

अनादि काल से संग्रहवृत्ति का बोलबाला रहा है। घर में वस्त्राभूषण-भण्डोपकरण का अम्बार लगा है मगर वृत्ति ऐसी कृपण होती है कि जरूरतमंद को बिल्कुल नहीं देते। ऐसी मनोवृत्ति पुण्य बंध में बाधक है। आज पुण्यानुबंधी पुण्य का अर्जन करने वाले प्राणी कम होते जा रहे हैं। जो पुण्य से पुण्य को बढ़ाते हैं उन्हें जीवन में किसी भी प्रकार का

दुःख नहीं देखना पड़ता। जीवन यात्रा निर्बाध गुजरती है। निम्न एवं मध्यमवर्गीय इंसान धन के अभाव से दुखी है तो उच्चवर्गीय परिवार धन के अतिभाव से दुखी है। मानसिक शार्ति, आत्मसंतुष्टि का सुख दोनों में से किसी को नहीं है। इन सब स्थितियों के देखकर भगवान् में नौ पुण्यों का विधान किया जिनके आचरण से जीवन से दुःख मिटते हैं, सुख बढ़ते हैं। जो इनका सम्प्रकृति रूप से आचरण करता है वह निश्चित रूप से शारीरिक, मानसिक, परिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक सभी दुःखों से मुक्त होता है। अनन्तानन्त आत्माओं ने इस पथ पर चलकर सच्चे सुख को प्राप्त किया है।

पुण्य की छाया शीतल, सुखद होती है। इहलौकिक, पारलौकिक, भौतिक, आध्यात्मिक सब सुख इससे मिलते हैं। पुण्य के बिना सत्संग नहीं मिलता, ज्ञान के बिना क्रिया नहीं होती, क्रिया के बिना मुक्ति नहीं होती, मुक्ति के बिना सच्चा सुख नहीं मिलता। अतः जीवन में अधिकाधिक पुण्य का आचरण करें, जीवन को मंगलमय बनाएं। ■

बिन राधा, कृष्ण है आधा

● डॉ. अर्चना दुबे ●

राथा परमतत्व ब्रह्म की वह अभिन्न शक्ति है जिसके साथ वे सदैव रमण करते हैं। वेदों तथा पुराणादि ग्रंथों में माना गया है कि पहले ब्रह्म एक ही था। जब उसमें सूजन की आकांक्षा जाग्रत हुई, तब वह दो भागों में विभक्त हो गया। एक भाग 'पुरुष' कहलाया और दूसरा 'प्रकृति'। पुराणों के अनुसार यह पुरुष 'कृष्ण' माना गया और प्रकृति 'राधा'। 'प्र' का अर्थ होता है- श्रेष्ठ और 'कृति' का अर्थ होता है- सृष्टि। इस प्रकार सृष्टि में जो भी श्रेष्ठ है, वही प्रकृति है। विशेषकर शाक्त-साधना में प्रकृति को परमपुरुष से श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि प्रकृति ही पुरुष की शक्ति है। बिना शक्ति के शक्तिमान का क्या मूल्य हो सकता है?

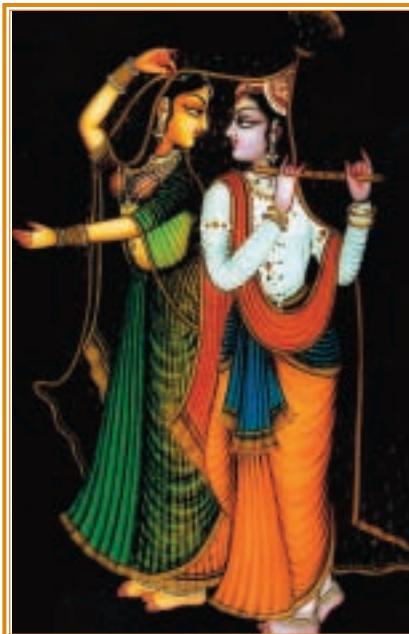
वस्तुतः दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री, सीता आदि सभी राधा के ही रूप हैं। कुछ परम-शक्ति राधा और कृष्ण के साथ रास रचाने वाली वृषभानुजा राधा में भेद मनाते हैं, अधिकांश विद्वानों का मत है कि गौलोकवासिनी राधा और वृषभानुजा राधा में कोई भेद नहीं है। वह एक ही हैं। संपूर्ण ब्रह्माण्ड इन्हीं के अधीन है। देखा जाए तो राधा की संपूर्ण शक्तियों का वर्णन करने का सामर्थ्य किसी में नहीं है। राधा की महिमा का गान करने में तो स्वयं व्यासजी एवं शुक्रदेवजी ने अपने को असमर्थ पाया, इसीलिए भागवतपुराण में उन्होंने मात्र संकेत भर कर दिया है क्योंकि राधा स्वयं में इतनी विराट है कि उनका वर्णन वाणी या लेखनी से किया जाना संभव ही नहीं है। उनकी विराटता का अनुभव तो हृदय में किया जा सकता है।

भगवती राधा शक्ति के अनेक रूपों में विद्यमान हैं। वेद, पुराण, उपनिषद उनकी महिमा गाते नहीं थकते। 'राधोपनिषद्' और राधिकातापनीचोपनिषद् तो उन्हें सर्वश्रेष्ठ देवी की संज्ञा देते हैं। 'गाथा सप्तशती' में कहा गया है कि राधा वह है जो सभी देवों द्वारा आराधित है। ब्रह्मवैरत पुराण में जब यशोदा राधा से उनके ही नाम का अर्थ पूछती है तो राधा कहती है-

राशब्दश्च महाविष्णुर्विश्वानि यस्य लोमषु

धात्री माता हमेतेषां मूलप्रकृतिरीश्वरी।

विश्वप्राणिषु विष्वेषु धा धात्री मातृवाचकः



तेन राधा समाख्यात हरिणा च पुरा बुधै॥
अर्थात् जिनके रोमकूपों में अनेक विश्व विद्यमान हैं, वे महाविष्णु ही 'रा' शब्द हैं और 'धा' विश्व के प्राणियों तथा लोकों में मातृवाचक धाय शब्द है, अतः मैं इनकी दूध पिलाने वाली माता मूल प्रकृति और ईश्वरी हूं। इसी कारण पूर्वकाल में श्रीहरि तथा विद्वानों ने मेरा नाम 'राधा' रखा।

राधा के जन्म के विषय में कहा जाता है कि राधा का जन्म भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को हुआ। ये श्रीकृष्ण से लगभग 11 महीने बड़ी थीं। कहा जाता है कि बरसाने के परम धार्मिक, संयमी किन्तु निस्संतान वृषभानु जब ब्रह्ममुहूर्त में यमुना किनारे पहुंचे तो वहां उन्होंने एक कमल के फूल पर दिव्य प्रकाश देखा। पास जाकर देखा तो वहां एक छोटी सी कन्या विराजमान थी। वृषभानु प्रसन्नचित्त होकर उसे घर ले आए और कीर्ति रानी को सौंप दिया। धीरे-धीरे राधा ने घुटनों चलना शुरू कर दिया किन्तु आखें नहीं खालीं। जब साढ़े ग्यारह महीने बाद श्रीनंद-यशोदा के घर श्रीकृष्ण विराजे तब बर्धाइ देने कीर्ति रानी भी वहां गई। उनकी गोद में नहीं राधा थी। यशोदा के घर जाकर उन्होंने श्रीकृष्ण के पास ही राधा को सुला दिया और यशोदा से बतियाने लगीं। बातों-ही बातों में कीर्ति ने यशोदा को बताया कि मेरी पुत्री साढ़े ग्यारह मह मी हो गई है, किन्तु उसने अभी तक नेत्र नहीं खोले हैं।

जब दोनों ने पालने के पास जाकर देखा कि राधा की आखें खुल गई हैं और वे प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण के साथ खेल रही थीं तब वे आश्चर्यचकित रह गईं। तभी उन दोनों ने कृष्ण और राधा की सर्गाई कर दी। यह अलग बात है कि लौकिक रूप से दोनों का विवाह नहीं हो पाया।

यह सत्य है कि श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाएं राधा के अस्तित्व के कारण ही हैं। राधा पूर्ण शक्ति हैं तो कृष्ण उसकी चांदनी। इस प्रकार ये दोनों ही एक स्वरूप हैं। भगवान् के दिव्य लीला विग्रहों में विविध नाम धारण करके यह शक्ति सदा उनके साथ रहती है। न कृष्ण राधा के बिना रह सकते हैं और न राधा कृष्ण के बिना। ये दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। सच ही है कि राधा के बिना कृष्ण है आधा। ■

● चिंतन ●

सीताराम गुप्ता

खुशियां तो हमारे चारों और बिखरी पड़ी हैं। आनंद के क्षण हमारी बाट जोह रहे हैं कि आओ और मुझमें समा जाओ। लेकिन नहीं। डॉक्टर ने कहा है इसलिए पार्क में दौड़ने या टहलने चले जाते हैं। क्या कभी पार्क के सौंदर्य को पूरी तरह निहारा है?



आओ खुशियां खोजें, आनंद मनाएं!



मनुष्य का मूल स्वभाव है खुशी अथवा आनंद। हम सब हर पल हर घड़ी आनंद में ही तो जीवा चाहते हैं। जीना भी चाहिए। इसलिए तो हर पल आनंद की खोज में लगे रहते हैं। आनंद प्राप्ति के लिए न जाने क्या-क्या करते रहते हैं। अच्छा खाते हैं, अच्छा पहनते हैं, घर को भी खुब सजाकर रखते हैं लेकिन बात बनती नहीं। किसी को पढ़ने में आनंद आता है तो किसी को लिखने में कोई चापलूसी करने में आनंद प्राप्त करता है तो किसी को चापलूसी करवाने में ही आनंद की प्राप्ति होती है। लेकिन जितना हम आनंद पाने के लिए भाग-दौड़ करते हैं, छटपटाते हैं आनंद उतना ही हमसे दूर भागता है। फिर कैसे प्राप्त करें आनंद? जीवन को कैसे खुशियों से भरें?

आनंद का सीधा संबंध है सहजता और सरलता से। हम जितने सहज और सरल होते हैं उतने ही अधिक आनंद में होते हैं। लेकिन क्या आज हमारा जीवन सहज और सरल रह गया है? शायद नहीं। जीवन के हर क्षेत्र में भागमभाग। एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़। जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रतियोगिता, विश्लेषण और दूसरों से तुलना।

आज हम बाहर की दुनिया में खुशी तलाशते हैं। चीजों में सुख तलाशते हैं। धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा में आनंद खोजते हैं। हमारी खुशी, हमारा आनंद हमारी मनचाही वस्तु या घटना पर आधारित है। मनचाही वस्तु पा लेते हैं या मनचाही घटना घटित हो जाती है तो हम खुश बरना हमारे दुखों की सीमा नहीं रहती। तो फिर सच्ची खुशी या आनंद कैसे प्राप्त हो? सच्ची खुशी या आनंद पाना है तो उसे चीजों और घटनाओं से मत जोड़िये। खुशी को बाहर तलाश करने की बजाय उसे अदर खोजिये। आनंद का वास्तविक स्रोत हमारे भीतर है। हमारा मन तथा हमारे मन के भाव ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। यदि मन आनंद से भरा है तो बाहरी संसार में चीजों की कमी भी हमारे आनंद में कमी नहीं कर सकती। सकारात्मक विचारों से ओत-प्रोत मन ही सच्चा आनंद प्रदान करते में सक्षम है।

बशीर बद्र कहते हैं:

मकाँ से क्या मुझे लेना, मकाँ तुमको मुबारक हो,
मगर ये धासवाला रेशमी कालीन मेरा है।

खुशियां तो हमारे चारों और बिखरी पड़ी हैं। आनंद के क्षण हमारी

बाट जोह रहे हैं कि आओ और मुझमें समा जाओ। लेकिन नहीं। डॉक्टर ने कहा है इसलिए पार्क में दौड़ने या टहलने चले जाते हैं। किसी तरह तीन चक्कर पूरे हो जाएं तो छुट्टी मिले। हमेशा तनाव में रहते हैं। क्या कभी पार्क के सौंदर्य को पूरी तरह निहारा है? पेड़-पौधे, फूल-पत्तियां सब आपसे मिलने के बेचैन हैं। आपसे मिलना, बात करना चाहते हैं रुकिए जरा उनसे मिलिए सचमुच आनंद आएंगा। वे आपकी पीड़ी आपके तनाव को सोख लेंगे। आपको प्रफुल्लित कर देंगे, अपने जैसा बना देंगे। रोज पांच-सात मिनट का समय इन फूलों से, इन पेड़-पौधों से मिलने के लिए निकलिए। आपको अपने घर में बनावटी फूलों के या आजकल के बिना सुगंध के फूलों के गुलदस्ते सजाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। आप प्रकृति की अपेक्षा कृतिमता में कब तक आनंद की खोज करते रहेंगे?

हिल स्टेशन पर जाकर सूर्योदय तथा सूर्यास्त देखने की बड़ी उत्सुकता होती है। अच्छी बात है लेकिन क्या आपके शहर में सूर्य नहीं निकलता और छिपता? छत पर जाकर या बालकनी में से भी सूर्योदय व सूर्यास्त के दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है और बिल्कुल नए अंदाज में। सूरज, चांद-सितारे- ये सब हमारे साथ-साथ ही तो चलते हैं हमारे जीवन में आनंद की वर्षा करने के लिए। लेकिन इस वर्षा का लुक्फ हम नहीं उठाते। क्यों?

आप बच्चों के साथ दुकान पर जाते हैं और बच्चे से पूछते हैं कि कौन-सी चॉकलेट चाहिए। बच्चा कहता है कि लेमन पीऊंगा या लॉटीपाप लूंगा। लेकिन नहीं, ये नहीं लेना। आप वही दिलवाते हैं जो आपके अच्छा लगता है। जिससे आपके अहम् की तृष्णि होती है या खुशी मिलती है। लेकिन इससे क्या आपको खुशी या आनंद की प्राप्ति होती है? नहीं। वास्तव में सच्चा आनंद दूसरों को आर्दित करने में है।

आप गर्मियों में प्याऊ लगवाते हैं अच्छी बात है। शर्बत पिलवाते हैं। सड़क पर टेंट लगाकर सब्जी-पूरी बांटते हैं पर क्या कभी किसी भूखे को सब्जी-रोटी खरीदकर दी है। किसी मजदूर, किसी कामगार, किसी कूरियर वाले को जो जेठ की भरी दुपहरी में आपके घर के दरवाजे की घंटी बजाता है एक गिलास पानी के लिए पूछा है? जो प्यासा होने पर भी आपसे एक गिलास पानी मांगते हुए झिझकता है उसे पानी पिलाकर देखिए तो सही कितना आनंद आएगा। कोई भिशुक आपके सामने हाथ फैलाता है उसे अपने घर में नहीं तो घर के बाहर बरामदे में ही सही अपने हाथों से भोजन करा के तो देखिए, कितनी तृप्ति मिलेगी आपको! क्या ये सच्चा आनंद नहीं?

आनंद बहुत अधिक धन-दौलत, शोहरत और बड़ी-बड़ी उपत्यक्यों में नहीं अपितु रोजर्मरा की छोटी-छोटी चीजों और घटनाओं में ज्यादा है। आप कुंवर नारायण साहब से पूछिए कि उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने पर कैसा लगा और एक छात्र से, जिसे किसी प्रतियोगिता में इनाम के तौर पर एक पैन मिला है, पूछिए कि उसे कैसा लगा तो संभव है छात्र को ज्यादा आनंद की प्राप्ति हुई हो। लोग प्रायः खुश होने के लिए भविष्य का इंतजार करते रहते हैं। जीवन में एकमात्र बड़ी खुशी या आनंद के इंतजार में, जो एकदम अनिश्चित और असंभव है, असंख्य छोटी-छोटी खुशियों को नजरअंदाज कर देना कहां की बुद्धिमानी है? आओ जीवन के हर पल में हर क्षण में खुशी खोजें और आनंद का उत्सव मनाएं।

-ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

रक्षा कवच है माँ का आशीर्वाद



अपने गुरु गोरख की कृपा से जब गोपीचंद सन्न्यासी होकर अपनी मां से प्रथम बार भिक्षा मांगने गए तो उनकी माता ने कहा, बेरे, तेरे सन्न्यासी बन जाने के बाद मैं तुझ को क्या भिक्षा दे सकती हूं। किन्तु तीन बातें बता सकती हूं, संभव हो तो इनका पालन अवश्य करना। एक, मजबूत किले में रहना। दो, स्वादिष्ट भोजन ही करना। और तीन, नरम बिस्तर में सोना।

गोपीचंद ने कहा, माँ, मुझ सन्न्यासी के लिए यह कहां संभव होगा। तब माता ने समझाया, मजबूत किले का अर्थ है कि शास्त्रों में महापुरुषों ने जो व्रत बताए हैं उनका दृढ़ता से पालन करना। स्वादिष्ट भोजन का अर्थ है कि जब भूख लगे तभी कृच्छ खाना। और नरम बिस्तर का अर्थ है कि जब बहुत ज्यादा नींद सताए तभी सोना। माता द्वारा दिया गया यह उपदेश असल में उनका आशीर्वाद था।

विदेश जाते समय महात्मा गांधी ने भी अपनी माता के सामने तीन प्रतिज्ञाएं की थीं। एक, मैं मां का स्पर्श नहीं करूंगा। दो, कभी मदिरा पान नहीं करूंगा। और तीन, पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूंगा। गांधी ने आजीवन इन व्रतों का पालन किया। इस प्रकार अपनी माँ पुतली

माता के वचन बच्चों के लिए रक्षा-कवच का काम करते हैं। माता का आशीर्वाद अमोघ होता है। इसलिए हमारे उपनिषदों में माता को देवता कहा गया है।

बाई के आशीर्वाद से गांधी बीसवीं सदी के युगपुरुष सिद्ध हुए। बचपन में भीमराव अम्बेडकर बड़े ही शारती और बातूनी थे। वे पड़ोस के बच्चों को बहुत परेशान करते थे। उनकी इस आदत से माँ भी चिरंति रहती थीं। एक दिन उन्होंने भीमराव को समझाया, तुझे तो गौतम तथा कबीर बनना है। वे लोग किसी को भी परेशान नहीं करते थे। नहं भीमराव ने उत्साह में आकर कहा, माँ, उनके जैसा ही बनूंगा और अब से कोई शाररत नहीं करूंगा।

अगले दिन फिर वही शिकायत आई। पर माँ ने धैर्य नहीं खोया। रात को उनके लिए खीर बनाई और उनके सिर पर हाथ फेरते हुए समझाया, बेटा! तू पढ़ने में बहुत होशियार है। तुझे मन लगाकर पढ़ना चाहिए। इसके बाद जब उन्होंने भीमराव के आगे खीर परोसी, तो वे अचानक पूछ बैठे, माँ, तुम क्या मुझे गौतम बुद्ध बनाना चाहती हो? माँ ने कहा, नहीं बेटे! मैं तुझे सन्न्यासी नहीं बनाना चाहती। अच्छी पढ़ाई कर के तुझे दूसरों को भी राह दिखानी चाहिए। तुम्हें ऐसा समाज बनाना चाहिए, जिसमें सभी को विकास के समान अवसर प्राप्त हों। ऊंच-नीच का भेदभाव न हो।

यह माता का आशीर्वाद था। आगे चलकर बाबा साहब ने स्वतंत्र भारत का संविधान लिखा जो एक नए समाज की व्यवस्था है।

गांधारी ने दुर्योधन को आदेश दिया था कि गंगा स्नान करके मेरे सामने नग्न अवस्था में आओ, इससे तुम्हारा शरीर वज्र हो जाएगा। माता का यह वचन आदेश के साथ-साथ उनका अमोघ आशीर्वाद और रक्षा कवच भी था किन्तु दुर्योधन को लाज आई और वे माता के सामने बैसे नहीं जा सके। इसीलिए उन्हें युद्ध में भीम से पराजित होना पड़ा। भीम ने शरीर के उसी स्थल पर प्रहार किया जो वज्र नहीं हो सका था।

माता के वचन बच्चों के लिए रक्षाकवच का काम करते हैं। माता का आशीर्वाद अमोघ होता है। इसलिए हमारे उपनिषदों में माता को देवता कहा गया है। सुब्रह्मण्यम् भारती कहते थे, ‘परमात्मा के साथ पिता का संबंध आदर्श है और माता का यथार्थ।’ वह माता व्यष्टि रूप से जन्म देने वाली हो सकती है या समष्टि रूप में भवानी, देवी या भारत माता हो सकती है।

विदेश जाने से पूर्व विवेकानन्द ने अपनी माँ से आज्ञा मांगी। तब माँ ने अचानक कहा, जरा वह चाकू उठाकर मुझे दे। विवेकानन्द ने चाकू की नोक की ओर से पकड़ा और हत्थे वाला हिस्सा माँ की ओर बढ़ाया। तब माता ने आशीर्वाद दिया, जा बेटा! तू सचमुच दूसरों का हित सोचता है। ■

हमारे संरक्षक

‘समृद्ध सुखी परिवार’ पत्रिका के नियोजित प्रकाशन के लिए 11 हजार रुपये की राशि प्रदत्त करने वाले संरक्षक सदस्य होंगे जिन्हें पत्रिका आजीवन निःशुल्क प्रेषित की जायेगी और पत्रिका में उनका नाम प्रकाशित किया जाएगा। हमारे प्रथम संरक्षक सदस्य हैं— श्री जयंतीलाल वालचंद खेंचा, निवासी घानेशाव, प्रवासी अंधेरी वेस्ट मुम्बई

आत्मा का घर : भौतिकता का घर

श्रावक के विशेष गुणों के वर्णन में हम आठवें गुण पर विचार कर रहे हैं। श्रावक का 8वां गुण है—अनेकनिर्णयमधारविवर्जितनिकेतनः।

श्रावक के रहने का स्थान ऐसा होना चाहिए, जिसमें अनेक द्वार न हों। द्वार उतने ही होने चाहिए, जो हमारे लिए उपयोगी हों। आगर अनेक द्वार हुए तो मौका पाकर, चोर, जार, आदि घुस आवेंगे और गृहस्थ के लिए अनिष्टकारी सिद्ध होंगे।

आज हम बाहर की बजाय अन्दर के घर के बारे में विचार करेंगे। शरीर रूपी घर में आत्मा रूपी देवता निवास करता है। इस शरीर रूपी घर में पुरुषों के 9 द्वार और स्त्रियों के 12 द्वार खुले हैं।

पुरुषों के— 2 आंख, 2 कान, 2 नाक, 1 मुँह, 1 मल द्वार, 1 मूत्र द्वार, ये 9 द्वार हैं।

स्त्रियों के— नौ तो उपर्युक्त हैं ही बाकी दो स्तन, सन्तान-द्वार, ये तीन बढ़ जाते हैं। अतः 12 द्वार खुले हैं।

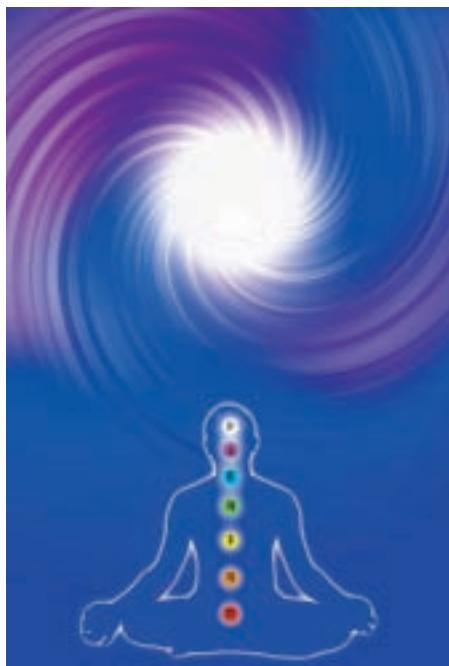
विशेषतया इन इन्द्रिय-द्वारों से अज्ञात-ज्ञात अनेक भाव प्रविष्ट हो रहे हैं। आंखें कुछ देखना चाहती हैं, कान कुछ सुनना चाहते हैं, जीभ कुछ स्वाद लेना चाहती है तथा शरीर नाना प्रकार के स्पर्श चाहता है।

वैसे देखा जाए तो 'इदि परमैश्वर्य' धातु से इन्द्रिय शब्द बनता है। आंख, कान जैसी इन्द्रियों की हमको अमूल्य संपत्ति प्राप्त हुई है। ऐसी संपत्ति कुबेर के भण्डार में भी नहीं मिल सकती है। मगर हमारी इन्द्रियों में एकता नहीं है। ये विभक्त हैं। इनमें भिन्न-भिन्न इन्द्रिया भिन्न-भिन्न चीजें चाहती हैं। इसलिए हमारे शरीर रूपी गृह में संघर्ष हो रहा है। घर के अंदर (काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर) चोर आकर बैठ गये हैं। जहां अनेक द्वार खुले रहते हैं, वहां किसी न किसी द्वार से चोर घर के अंदर अवश्यमेव प्रवेश कर जाते हैं। चोर तीन बातों से आते हैं—

- (1) दरवाजे खुले रहने पर।
- (2) सोने वाले को नींद आ जाए।
- (3) जहां अंधकार होता है, वहां चोरों को अवसर मिलता है।

आत्मा रूपी घर में मोह रूपी नींद, अज्ञान रूपी अंधकार और आस्रव रूपी द्वार खुले हैं। काम, क्रोध, मद, लोभ रूपी जब आत्मा रूपी घर में प्रवेश करते हैं तो उत्पात मचा देते हैं। घर के अंदर की कोई भी वस्तु सुरक्षित नहीं रह पाती। ये चोर घर में सुसे तो मानें हमारे घर के ही सदस्य बन गए। क्रोध कहता है, मैं आपका संगी हूँ, काम कहता है, मैं आपका साथी हूँ। हटने का नाम ही नहीं लेते हैं। ये बड़े विचित्र चोर हैं।

कहा जाता है कि एक घर का मालिक कुछ गुमाश्तों, मुनीमों और नौकरों को अपने घर की सार-सम्हाल सौंपकर स्वयं विदेश चला गया तथा वहां जाकर ऐसा आबाद हो गया कि न स्वयं आया और न ही पत्र आदि दे सका। इस तरह 32 वर्ष बीत गए। मुनीम आदि जितने थे, उन्होंने सेठ की संपत्ति पर यथाशक्य अधिकार कर लिया। 32 वर्ष के बाद सेठजी आये और अपने घर के सामने बैठ गये तथा उन आदिमियों से कहा—यह मेरा घर है, आप लोग इसको छोड़ दें। घर में बैठे हुए आदिमियों ने कहा, आपका घर नहीं, यह तो हमारा घर है। हल्ला-गुल्ला सुनकर बहुत से आदमी इकट्ठे



हो गए। अंत में सेठजी ने कहा कि बेवकूफों! यह मेरा घर है, सेठजी ने अपना पूरा नाम, धाम बताया। तब उन्होंने सोचा, अब हमारी पोल यहां नहीं चलेगी। मालिक के आने पर चोर स्वयं हैरान हो गये और वहां से नौ दो ग्यारह हो गए। इसी प्रकार जब हमको आत्मज्ञान (अपने स्वरूप का बोध) हो जावेगा तो ये चोर (काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या आदि) नहीं ठहर सकेंगे, चाहे वे कितना ही संख्या में क्यों न हों।

श्रीमद रायचंद्र ने कहा है कि करोड़ों वर्षों का अंधकार हो, मगर रोशनी की एक चिनगारी आ जाए तो करोड़ों वर्षों के अंधकार को नष्ट होते देर नहीं लगती है। अगर आपके हृदय में आत्मज्ञान रूपी रोशनी पैदा हो जाए तो नष्ट हो सकते हैं। घास चाहे कितनी ही पुरानी वर्षों न हो गई हो मगर चिनगारी पड़ने पर स्वतः समाप्त हो जाती है। उसी प्रकार आत्मज्ञान हो जाए, तो चोर आ ही नहीं सकते। हमारे आत्मरूपी घर के द्वार खुले होंगे तो हमारी साधना नहीं होगी। इसलिए, उन्हें बंद रखना चाहिए, चोरों को प्रवेश करने का मौका नहीं देना चाहिए।

जैनागम में दो शब्द आते हैं— आस्रव और संवर। आस्रव का अर्थ है कर्मों के आने का

द्वार, संवर का अर्थ है— निरोध-रोकना। आस्रवों के द्वार हमारी आत्मा मिलन हो रही है। इसके द्वार खुले रहने से आत्मा रूपी घर में पुण्य-पाप रूपी पानी भर रहा है। पुण्य-पाप दोनों ही हेय हैं। गीता में कहा है— “त्रैगुण्यविषया वेदा नेस्त्रैगुण्यो भवार्जुन!” अर्थात हे अर्जुन! तीनों- सत्त्व रजस, तमस गुणों से ऊँचा उठ। अर्थात पुण्य से भी ऊँचा उठ। तत्वतः आप पुण्य-पाप दोनों से ही ऊपर उठेंगे तो आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्राप्त होगा।

एक बार बुद्ध भगवान पर किसी व्यक्ति ने उनकी निन्दा करते हुए तथा उनके प्रति अपनी नाराजगी प्रकट करने के लिए थूक दिया। पर, बुद्ध शात रहे जब वह आदमी घर गया तो सोचने लगा कि बुद्ध पर मैंने व्यर्थ ही बिना किसी कारण के थूक दिया, ऐसा मुझे नहीं करना चाहिए था। दूसरे दिन वह बुद्ध के पास जाकर बोला—कल मैंने आप पर थूक दिया था, मुझे इसका बड़ा दुःख है। बुद्ध ने कहा—कल की भूल को आज याद किया जा रहा है, यह दूसरी भूल है। भाव यह है कि मनुष्य को अतीत तथा भविष्य की कल्पनाओं में समय नष्ट न करते हुए वर्तमान को ही सुरक्ष बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। बुद्ध की मान्यता थी कि एक नदी में कोई दुर्वारा स्नान नहीं कर सकता। नदी तो सतत प्रवाहशील है, वह जल जिसमें स्नान किया था, वह गया। उसी प्रकार हमारा जीवन बहता हुआ जा रहा है और हम बीती बातों को याद करते हैं, यह हमारी भयंकर भूल है। हमको वर्तमान में जीना चाहिए।

आद्य शंकराचार्य ने विवेकचूडामणि में जीवन्मुक्त का लक्षण बताते हुए लिखा है—अतीतानुसधानं भविष्यदविचारणम्। औदासीन्यमपि प्राप्ते जीवन्मुक्तस्य लक्षणम्।

अर्थात अतीत का अनुसंधान-खोज, जिक्र, चर्चा न करना, भविष्य की चिंता न करना, वर्तमान में जो कुछ आ रहा है, उससे उदासीन रहना, जीवन्मुक्त का लक्षण है।

प्रस्तुति: राजेश बंसल, जयपुर



जादू-चमत्कार है अंतर्मन से की गयी प्रार्थना में

आप प्रभु से वार्ता करने का मन बना रहे हैं, आप भगवान से कुछ कहना चाहते हैं, उससे निवेदन करना है, परम पिता परमात्मा से शिकायत है या उसको ही शिकायत करनी है या उससे बात करनी है। यदि आप ऐसा ही कुछ सोच रहे हैं तो हृदय से पवित्र भाव से प्रार्थना कीजिए। आप पायेंगे कि वे आपके पास ही खड़े हैं। भगवान आपकी सहायता के लिए हर समय तत्पर हैं, वे आपके मार्गदर्शन के लिए आपके पास ही उपस्थित हैं। जब आदमी गलती करता है, ठोकर खाता है या रास्ते से भटक जाता है या किसी कठिनाई में फंस जाता है तो उसे प्रेरणा चाहिए, उसे शक्ति चाहिए, मार्गदर्शन चाहिए, सहारा चाहिए, संरक्षण चाहिए। उसे यह संरक्षण, सहारा या मार्गदर्शन या सहायता किसी अलौकिक शक्ति से, परमात्मा से, ईश्वर से ही मिल सकती है।

ऐसी कोई भी प्रार्थना जो मनुष्य सांसारिक लाभ के लिए करता है, प्रायः निम्न स्तर की या घटिया मानी जाती है। पर जब प्रार्थना किसी उच्च उद्देश्य के लिए, समग्र मानवजाति के कल्याण के लिए, प्राणीमात्र के हितार्थ की जाती है तो वह हृदय के गहन स्थल से की जाती है, वह शक्तिशाली होती है, प्रभावी होती है। ऐसी प्रार्थना सर्वशक्तिमान प्रभु के हृदय के अधिक निकट होती है और निश्चय ही प्रभु का हृदय छूती है। प्रभु का तथा मनुष्य का यह प्रार्थना के माध्यम से बना संबंध सात्त्विक होता है। परमात्मा के साथ सबसे निम्न श्रेणी का संबंध तामसिक संबंध होता है, इसे सबसे घटिया संबंध कहा जा सकता है, ऐसे संबंध में प्रार्थना करने वाला भगवान से व्यापारी सरीखे संबंध जोड़ता है। ऐसे संबंध क्रोध, गुस्सा, ईर्ष्या, धूरा आदि अमानवीय गुणों पर, जो मानव को हानि पहुंचाने वाले हो, आधारित होते हैं। ऐसी प्रार्थना मनुष्य की सदबुद्धि पर अंकुश लगाती है, विपरीत प्रभाव डालती है। इन दोनों प्रकार की प्रार्थनाओं के मध्य एक श्रेणी और होती है जिसे राजसिक प्रार्थना कहा जा सकता है। इस श्रेणी की प्रार्थना में अनन्त या असीमित भौतिक लाभ की प्रार्थना ईश्वर से की जाती है। सात्त्विक प्रार्थना में वृहद् रूप से मानवीय समग्र कल्याण की प्रार्थना की जाती है।

प्रार्थना से शुद्धिकरण होता है यह क्रिया प्रभु के साथ आदान-प्रदान की कही जा सकती है। प्रार्थना मात्र धार्मिक क्रियाओं का करना मात्र ही नहीं है या कुछ धार्मिक कविताओं का पाठ करना या उच्चारण करना मात्र ही नहीं है बल्कि प्रार्थना करने वाले का पूर्ण समर्पण भाव प्रार्थना में आना चाहिए। किसी उच्च उद्देश्य की पूर्ति के लिए आत्मा निम्न धरातल से ऊपर उठनी चाहिए, वहाँ से सुमधुर संगीत की ध्वनि आनी चाहिए, स्पंदन होना चाहिए, ध्वनि न होते हुए भी ध्वनि सुनाई देना चाहिए, बिना आघात के हृदयतंत्र को सुनाई देना चाहिए। पिता के रूप में भगवान तथा संतान के रूप में मनुष्य एक रंग में रंगे हुए, गुरुग्रंथ साहब के अनुसार दिखाना चाहिए। सूफी मत के अनुसार प्रार्थना का उद्देश्य परमात्मा के अंतर्दर्शन ही एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए। जिसे सूफी साहित्य में अन-अल-हक कहा गया है जिसका अर्थ होता है 'मैं ईश्वर हूँ'। इसे ही संस्कृत में अहम् ब्रह्मास्मि कहा गया है। ईसाइयों के पवित्र ग्रंथ बाईबिल में भी इसी प्रकार का उल्लेख मिलता है 'मैं महात्मा ईसा की कृपा से जीवित हूँ तथा ईसा मुझ में है'।

प्रार्थना आंखें और कान बंद करके अपने को प्रभु के चरणों में समर्पित करते हुए हृदय के गहन स्थल से की जानी चाहिए। ऐसी प्रार्थना तत्काल प्रभु के पास पहुंचती है। इसे ही संसार से निर्लिप्ति रहनी चाहिए। प्रार्थना में अबोध शिशु के समान साधारी एवं संसार से निर्लिप्ति रहनी चाहिए। प्रार्थना में निरर्थक क्रियाओं को कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए।

यदि प्रार्थना पूरे विश्वास एवं अंतर्मन से निष्ठा के साथ नियमित रूप से की गई है तो वह निरर्थक नहीं जायेगी। ऐसा नहीं है जोर से बोलकर की गई हो, वह शाब्दिक हो या अशाब्दिक, वैयक्तिक हो या सामूहिक इनमें से किसी का भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा। प्रार्थना के लिए पूर्व से समय तथा स्थान निश्चित होना चाहिए। प्रार्थना में अबोध शिशु के समान साधारी एवं संसार से निर्लिप्ति रहनी चाहिए। प्रार्थना में निरर्थक क्रियाओं को कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए।

प्रार्थना आंखें और कान बंद करके अपने को प्रभु के चरणों में समर्पित करते हुए हृदय के गहन स्थल से की जानी चाहिए। ऐसी प्रार्थना तत्काल प्रभु के पास पहुंचती है। जो खुले मन से ईश-प्रार्थना करते हैं, श्रीकृष्ण के समान प्रभु उनकी तत्काल सुनवाई करते हैं, उनकी प्रार्थना पर प्रभु तत्काल ध्यान देते हैं। उच्च श्रेणी के भक्त तत्काल ही भगवान को अपने सामने पाते हैं और वे देखते हैं कि जादू-सा असर हो रहा है।

महाराष्ट्र में पैदा हुए संत नामदेव ने जब भगवान विष्णु से प्रार्थना की तो ऐसा विश्वास किया जाता है कि मर्दिर में मृति सजीव हो गई, दर्शकों ने मृति में हलचल देखी, अनुभव की। कहते हैं भगवान विष्णु ने भक्तों की भेट स्वीकार की। राजस्थान की भक्त कवयित्री मीराबाई जब कृष्ण के प्रेम में सुधरुद्ध खोकर प्रार्थना करती तो उसे सांसारिक बंधनों का ध्यान ही नहीं रहता था। उसके इस प्रकार के व्यवहार से दुःखी एवं अप्रसन्न होकर परिवारजनों ने उसे जहर पिलाना चाहा तो वह जहर ही अमृत में परिवर्तित हो गया, उसको मरवाने के प्रयत्नों में एक बार सांप भेजा गया तो वह चंदन की माला बन गया। ऐसा जादू होता है अंतर्मन की प्रार्थना का।

प्रार्थना से हमारे मन में गहराई से अंतर्चेतना जागृत होती है। कोई इसे आत्मा की छिपी शक्ति या देवीयशक्ति या छिपी ज्ञानेन्द्रिय का जागृत होना मान सकता है। प्रार्थना से कार्य करने की इच्छा जागृत होती है, विकसित होती है तथा सही दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, प्रार्थना से ही समय पर कार्य करने की प्रेरणा मिलती है, मार्गदर्शन मिलता है।

-बी-186, राधाकृष्ण नगर, भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)

भारतीयता के जीवंत प्रतीक थे राजेन्द्र बाबू

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गांधी-मार्ग के निष्ठावान पथिक, मानवता के सच्चे सेवक, निष्काम कर्मयोगी और सच्चे अर्थों में भारतीयता के प्रतीक थे। भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 26 नवम्बर 1949 को संविधान सभा के समापन समारोह में कहा था, 'यदि हम संविधान निदेशक सिद्धांतों को प्रभावी बना सके तो भारत इस संघर्षग्रस्त विश्व में बहुत बड़ी भूमिका निर्वाह कर सकेगा।'

स्वतंत्रता प्राप्ति की घड़ी 14-15 अगस्त की रात को उन्होंने संविधान सभा में कहा था 'हमारी एक ही महत्वाकांक्षा व इच्छा है, प्रत्येक के लिए स्वराज का निर्णाया।'

आज भारतीय संसद संविधान में संशोधनों (समय-समय पर) द्वारा प्रत्येक के लिए स्वराज्य तथा निदेशक सिद्धांतों के क्रियान्वयन की ओर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ सकी है। ऐसे समय में संविधान सभा के अध्यक्ष के उद्गारों का स्मरण हो आना स्वाभाविक ही है। क्या राजेन्द्र बाबू का यह दुख कसक पैदा नहीं करता कि संविधान सभा भारत का संविधान भारतीय भाषा, सबकी भाषा में नहीं बन सकी? राजेन्द्र बाबू हिन्दी के अनन्य समर्थक थे। छात्र जीवन में ही वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ जुड़ गए थे।

स्वतंत्रता आंदोलन व स्वतंत्र भारत में भी राजेन्द्र बाबू हिन्दी के उत्थान के लिए क्रियाशील रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नागपुर अधिवेशन में उन्होंने सुझाव दिया था कि हिन्दी को विदेशी शब्द आत्मसात करके अपनी व्याकरण के सूक्त में बांध लेना चाहिए। उन्होंने ग्रामीण व प्रांतीय भाषाओं के क्षेत्रीय, आंचलिक शब्दों को हिन्दी में अधिक संख्या में शामिल किए जाने पर जोर दिया।

राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसम्बर 1884 को बिहार के सारण जिले के जीरादई गांव में हुआ था। उन्होंने 1902 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। 1907 में कोलकाता विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। अपनी कक्षा में सदैव प्रथम रहने वाले इस मेधावी छात्र ने 1905 में बंगालंग आंदोलन में ही स्वतंत्रता संघर्ष के साथ अपना नाता जोड़ लिया था। वे छात्र आंदोलन के नेता बन गए थे। 1906 में वे बिहार छात्र सम्मेलन के अध्यक्ष बने तथा उसी वर्ष कांग्रेस अधिवेशन में एक स्वयंसेवक के रूप में शामिल हुए।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ राजेन्द्र बाबू के संबंध स्थापित होने की एक दिलचस्प कहानी है। संकोची स्वभाव के राजेन्द्र प्रसाद कई लोगों के आग्रह पर कलकत्ता कांग्रेस के समय गांधीजी से भेट नहीं कर सके थे। जब राजेन्द्र प्रसाद कलकत्ता में वकालत कर रहे थे, तब गांधीजी किसी के साथ उनके घर पहुंचे। राजेन्द्र बाबू के नौकर ने गांधीजी को एक मुवक्किल मानकर कुछ रुखा-सा व्यवहार किया। बाद में चंपारण प्रकरण के समय गांधीजी से राजेन्द्र बाबू की भेट पटना में हुई। गांधीजी ने राजेन्द्र बाबू को याद दिलाया कि "मैं आपके घर एक बार पहले आ चुका हूँ" तथा नौकर द्वारा किया गया व्यवहार सुनाया। राजेन्द्र बाबू शर्मिन्दा होकर



बापू ने एक बार कहा था
"भारत के राष्ट्रपति को झोपड़ी
में रहना चाहिए।" स्वभाव,
वेशभूषा, सादगी, सरलता आदि
गुणों में भारतीय किसान डॉ.
राजेन्द्र प्रसाद ने विशाल
राष्ट्रपति भवन में जिस प्रकार
का निर्लिप्त व निग्रही जीवन
12 वर्षों तक व्यतीत किया,
वह झोपड़ी में रहने वाले
व्यक्तित्व का ही उदाहरण था।

पानी पानी हो गए। उसके बाद से ही गांधीजी और राजेन्द्र बाबू में जो सम्पर्क सूत्र स्थापित हुए, उनका अनुमान बापू के इन शब्दों से ही लगाया जा सकता है 'राजेन्द्र बाबू के बिना मैं एक कदम भी आगे नहीं चल सकता हूँ। उनके प्रेम ने मुझे अपंग बना दिया है।'

सन् 1917-18 में राजेन्द्र बाबू ने गांधीजी के साथ चंपारण संघर्ष में भाग लेकर इस क्षेत्र में नील की खेती करने वालों को अंग्रेजों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाई थी। 1918 में उन्होंने पटना से प्रसिद्ध अखबार 'सर्चलाइट' तथा 1920 में 'देश' का प्रकाशन किया। उन्होंने बिहार विद्यापीठ की स्थापना की तथा कई वर्षों तक उसके कुलपति भी रहे। 1934 में बिहार भूकम्प के समय पीड़ितों की सेवा के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। इसी वर्ष वे बम्बई कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 1939 में सुभाषचन्द्र बोस के त्यागपत्र के बाद तथा 1940 में आचार्य कृपलानी के त्यागपत्र के बाद उन्होंने महात्मा गांधी के आदेशानुसार कांग्रेस अध्यक्ष का पदभार संभाला। 2 दिसम्बर 1946 को वे भारत की अंतरिम सरकार में खाद्य एवं कृषि मंत्री बनाए गए। इसके बाद वे संविधान सभा के अध्यक्ष रहे।

26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू होने के साथ ही राजेन्द्र बाबू ने अंतरिम राष्ट्रपति के रूप में पदभार संभाला। 13 मई 1952 को वे भारत के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए तथा 13 मई 1957 को पुनः इसी पद पर निर्वाचित हुए।

बापू ने एक बार कहा था "भारत के राष्ट्रपति को झोपड़ी में रहना चाहिए।" स्वभाव, वेशभूषा, सादगी, सरलता आदि गुणों में भारतीय किसान डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने विशाल राष्ट्रपति भवन में जिस प्रकार का निर्लिप्त व निग्रही जीवन 12 वर्षों तक व्यतीत किया, वह झोपड़ी में रहने वाले व्यक्तित्व का ही उदाहरण था।

13 मई 1962 को उन्होंने राष्ट्रपति के पद से अवकाश ग्रहण किया। इसी दिन उन्हें भारत रत्न की उपाधि दी गई। रामलीला मैदान में आयोजित विशाल विदाई समारोह में प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा "बारह साल का जमाना डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का जमाना कहलाएगा।" 28 फरवरी 1963 को यह असाधारण पुरुष दुनिया को अलविदा कह गया।

-14 उद्धृत, उज्जैन (म.प्र.)

शास्त्रोवित

आयु बढ़ने से, यश फैलने से, बार-बार प्रश्नों के पूछने से, गुरु के साथ रहने से, स्वयं अच्छी तरह विद्यार्थी करने से, अच्छे लोगों के साथ संलाप करने से, मन में प्रेम भाव बढ़ाने से और अनुकूल स्थान में वास करने से—इन आठ बातों से मनुष्य की बुद्धि परिपक्व हो जाती है।

-अज्ञात

शिवलिंग का महात्म्य

● सुरेश जायसवाल ●



अधिकतर मंदिरों में शिवलिंग की पूजा का विशेष विधान है। सभी मंदिरों में शिव कुटुम्ब की पूजा की जाती है, उसके बाद सभी देवताओं की पूजा की जाती है। शिवलिंग का तात्पर्य है शिव का प्रकृति के साथ समन्वित चिह्न। देवताओं का पूजन बेर के रूप में किया जाता है और जब भी किसी मर्ति को प्रतीक के रूप में दर्शाना होता है, तब उसे अनन्त स्वरूप में अर्थात् गोलाकार या अंडाकार चिह्न के रूप में दर्शाया जाता है। परम पुरुष स्वरूप गोलाकार और प्रकृति का स्वरूप अंडाकार होता है। परम पुरुष की पांच रूपों में उपासना की जाती है— शिव, विष्णु, शक्ति, गणेश और सूर्य, इन पांचों के स्वरूप गोल होते हैं।

शालिग्राम का स्वरूप गोल होता है, इसे विष्णु का प्रतीक माना जाता है। मंदिरों में इसके साथ गोल चक्र रखने का विधान है। गणेशजी को भी पूजन के समय गोल सुपारी के रूप में रखा जाता है। सूर्य का प्रतीक स्वतः गोल है। शिवजी को भी प्रतीक रूप में अन्य शक्तियों की भाँति अंडाकार स्वरूप अर्थात् शिवलिंग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

शिवलिंग का विधिपूर्वक पूजन करने से विद्या, ज्ञान, धन-धान्य, संतान, सद्बुद्धि, दीर्घायु और माक्ष की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति सदा ‘शिव-शिव’

की रट लगाए रहता है, उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति स्वतः हो जाती है। ‘शिव’ शब्द का उच्चारण समस्त पापों से मुक्त करता है और व्यक्ति को स्व-स्वरूप में तन्मय कर लेता है। जिस स्थान पर शिवलिंग का पूजन होता है, उस स्थान पर यदि किसी की मृत्यु होती है, वह सीधा शिवलोक को प्राप्त होता है।

भगवान शिव ही एकमात्र वह देवता है, जिनके लिंग की पूजा होती है, क्योंकि लिंग में उत्पादक और सहारक दोनों ही तत्व विद्यमान हैं। इसका मुख्य अर्थ यह भी है कि जहां उद्धृत काल में संपूर्ण सृष्टि का निर्माण होता है, वहां संहार काल में सारी सृष्टि का लय होता है। चल लिंगों की पूजा घरों में और अचल लिंगों की पूजा मंदिरों में की जाती है। ‘शिल्प प्रकाश’ में व्याख्या है कि लिंग चौदह हजार चौदह सौ प्रकार के होते हैं।

चिकने एवं श्वेत प्रस्तर का लिंग श्रेष्ठ माना गया है, किन्तु लिंग रत्न, स्फटिक, पारद, धातु और श्रेष्ठ काष्ठ के भी बनाए जाते हैं। शास्त्रों में यह व्यवस्था दी गई है कि धन प्राप्ति के लिए रत्न या स्वर्ण, राज्य के लिए चांदी, पुत्र के लिए ताप्र, शत्रु विजय के लिए कांस्य, उच्चाटन के लिए पीतल, क्षयरोग से मुक्ति के लिए लौह धातु और समस्त दुखों से मुक्ति के लिए शीशे से बनाए गए शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए। शास्त्रों में वर्णित है कि मणियों से बने शिवलिंग की पूजा देवताओं ने की थी। शिवलिंग की महत्ता का वर्णन सभी शास्त्रों में आया है, जिससे पता चलता है कि शिव को पूजने से ही इंद्र को राज्य, बुध को विद्या, बृहस्पति को गुरु पद, विष्णु को चक्र व सूर्य पद और शुक्र को दैत्यों के गुरु का पद प्राप्त हुआ था। ■



फैंगशुई में सुख-समृद्धि के उपाय

■ मुरली कांठेड़



ऊर्जायुक्त नमक: नमक में नकारात्मक शक्तियों को खींचने की अद्भुत क्षमता होती है। यह भवन में नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव को अपने अंदर समेटकर चीं नामक ऊर्जा को संतुलित करता है। यदि कोई कमरा प्रायः बंद रहता हो, तो उस कमरे में चींनी मिट्टी के पात्र में नमक भरकर रख देना चाहिए। फैंगशुई में प्रयोग हेतु हमेशा अपरिष्कृत समुद्री नमक का ही प्रयोग करना चाहिए। यदि शौचालय वास्तुदोष उत्पन्न कर रहा हो, तो शौचालय में रोशनदान के समीप कटारे में नमक भरकर रख देना चाहिए। नमक का प्रयोग हमेशा ऐसे पात्र में रखकर करना चाहिए जिससे कि उसे ढंका जा सके। अतः प्लेट में रखकर नमक का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। यदि नकारात्मक विचार अधिक आते हों, तो नमक मिले पानी से फर्श पर पोंछा लगाना चाहिए।

दर्पण का प्रयोग: दर्पण का प्रयोग प्रायः साज-सज्जा के समय चेहरा देखने के लिए किया जाता है। फैंगशुई में दर्पण को ऊर्जा का स्रोत माना गया है। परिवार की सुख-समृद्धि के लिए भोजन कक्ष में ऐसे स्थान पर दर्पण लगाना चाहिए, जिससे भोजन करते समय उसमें प्रतिविम्ब दिखाई दे, ऐसी स्थिति में दर्पण लगाने से भोजन करने वाले सभी व्यक्तियों के मध्य परस्पर सहयोग एवं प्रेम का भाव बढ़ता है तथा उस घर में संपन्नता बनी रहती है।

पानी का फव्वारा: यदि आपके कार्यक्षेत्र में बार-बार व्यवधान आते हों,

किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती हो, तो उत्तर दिशा में बहते हुए पानी का फव्वारा रखने से सफलता प्राप्त होती है। बेरोजगार व्यक्तियों को अपने कक्ष में अथवा ड्राइंगरूम में उत्तर दिशा में बहते हुए पानी का फव्वारा रखना चाहिए। इससे उत्तर दिशा में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे व्यक्ति को अपने कैरियर में सफलता प्राप्त होती है।

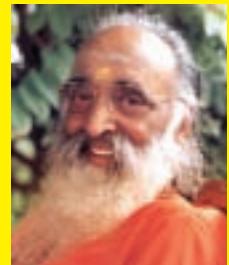
मनीप्लाट: मनीप्लाट एक समृद्धिसूचक बेल होती है, जिसके पत्ते हरे एवं कुछ सफेद होते हैं। इसकी वृद्धि के लिए भूमि आवश्यक नहीं है। किसी बोतल अथवा कांच के डिब्बे में स्वच्छ पानी भरकर मनीप्लाट की बेल के सिरे को डालकर कमरे के अंदर भी उसे उगाया जा सकता है। मनीप्लाट का पूर्ण विकास समृद्धि का संकेत देता है। मनीप्लाट की बेल यदि भूमि में उग रही हो, तो उसको ऊपर की ओर चढ़ाना चाहिए। भूमि पर फैलकर वृद्धि करने वाली बेल दोषकारक होती है। मनीप्लाट की बेल को उखाड़कर नहीं फेंकना चाहिए।

पीले पुष्प: परिवार में सभी सदस्यों के मध्य परस्पर सहयोग, सामंजस्य एवं संबंधों में मधुरता की वृद्धि के लिए घर में दक्षिण-पश्चिम कोण में चींनी मिट्टी के फूलदान में पीले रंग के पुष्प लगाने चाहिए। फूलदान को जिस मेज अथवा अलमारी में रखा जाए, वहां पर अन्य कोई वस्तु नहीं होना चाहिए। फूलदान के नीचे कोई स्वच्छ वस्त्र अवश्य बिछा होना चाहिए।

● शिष्टाचार ●

स्वामी विन्मयानंद

हम प्रणाम क्यों करते हैं?



मनुष्य पैरों पर खड़ा होता है, प्रणाम करते समय पैरों को छूना, उस उम्र उस परिपक्वता, उस महानता और दिव्यता के प्रति आदर भाव का सूचक है जिसके मूर्त्त स्वरूप हमारे बुजुर्ग रहे हैं। यह हमारे प्रति उनके निष्पार्थ प्रेम का और हमारे कल्याण के लिए उनके द्वारा किये गए त्याग की हमारी स्वीकृति को प्रकट करता है। यह दूसरों की महानता को नम्रता से स्वीकार करने का एक ढंग भी है। यह परम्परा उन दृढ़ परिवारिक संबंधों को प्रकट करती है, जों भारत की स्थायी शक्ति का एक अंग हैं।

बड़ों के शुभ संकल्प और आशीर्वाद को भारत में बहुत महत्व दिया जाता है। हम उनको प्राप्त करने के लिए प्रणाम करते हैं। अच्छे या सद्विचार वातावरण में सकारात्मक तरंगें फैलाते हैं। प्रेम, दिव्यता और महानता भरे हृदय से उत्पन्न हुई शुभ इच्छाओं में विशाल भक्ति होती है। जब हम नम्रता और आदर से प्रणाम करते हैं, तो बड़ों की शुभ इच्छाओं और आशीर्वाद का आह्वान करते हैं जो सकारात्मक उर्जा का रूप लेकर हमें धेर लेते हैं। इसी कारण से, चाहे प्रणाम की मुद्रा खड़े होकर अथवा लेट कर हो, हमारे समस्त शरीर में इस उर्जा को प्राप्त करने का सामर्थ्य आ जाता है। सम्मान प्रकट करने की विभिन्न मुद्राएं इस प्रकार हैं—

प्रत्युत्थान: व्यक्ति के स्वागत के लिए खड़े होना।

नमस्कार: नम्रते द्वारा सम्पादन करना।

उपसंग्रहण: बड़ों अथवा शिक्षकों के चरण स्पर्श करना।

साष्टांग: बड़ों के सामने अपने पैरों, घुटनों, छाती, मस्तक और भुजाओं को पूरी तरह भूमि से छुआकर प्रणाम करना।

प्रत्याभिवादन: अभिवादन का उत्तर देना।

हमारे शास्त्रों में इसके नियम निर्धारित किए गए हैं कि कौन किसके आगे नतमस्तक होता है। संपत्ति, परिवारिक कीर्ति, आयु, नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान वाले व्यक्ति क्रमशः अधिकाधिक आदर के योग्य



अधिकारी हैं। यही कारण है कि राजा, भले ही देश का शासक होता है, परन्तु वह धर्मगुरु के आगे नतमस्तक होता है। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य इस पक्ष को उजागर करती हुई कहानियों से भरे पड़े हैं। इस प्रकार यह परम्परा लोगों के बीच आपसी प्रेम और आदर का वातावरण पैदा करती है और परिवार और समाज में सद्भाव बढ़ाती हैं।

हम मस्तक पर तिलक क्यों लगाते हैं? अधिकांश धर्म-परायण भारतीय, विशेषकर विवाहित नारियां मस्तक पर तिलक अथवा बिन्दी लगाती हैं। यह प्रतिदिन स्नान के बाद और विशेष अवसरों पर, औपचारिक पूजा से पहले या बाद में अथवा मंदिर जाते समय लगाया जाता है। बहुत से समुदायों में तो विवाहित स्त्रियों के लिए अपने मस्तक पर हमेशा कुमकुम लगाए रखना अनिवार्य है। रुदिवाली की विधिवत् धार्मिक अनुष्ठान करके तिलक लगाते हैं। साधुओं के और भगवान की प्रतिमाओं के मस्तक पर पूजा के रूप में तिलक लगाया जाता है। उत्तर भारत के कई भागों में यह स्वागत का, अतिथि सत्कार का अथवा पुत्र या पति को यात्रा आरंभ करते समय विदाई देने का, सम्मानजनक ढंग है।

हम मस्तक पर किसी प्रकार का चिन्ह (तिलक, कुमकुम आदि) क्यों लगाते हैं? तिलक अथवा कुमकुम लगाने वाले के और दूसरों के भी मन में पवित्रता की भावना जगाता है। यह एक धार्मिक चिह्न समझा जाता है। इसका रूप और रंग लगाने वाले की जाति, उसके सम्प्रदाय, धार्मिक मत अथवा पूज्य देवता की आकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है।

ब्राह्मण जिनका व्यवसाय पूजा और शिक्षा से जुड़ा था, पवित्रता व्यक्त करने वाले सफेद चंदन का तिलक लगाते थे। क्षत्रिय चूंकि सैनिक अथवा योद्धा कोटि के हाते थे, वे शूरवीरता-सूचक लाल कुमकुम लगाते थे। वैश्य जो धन-संपत्ति उत्पन्न करने वाले व्यापारी थे, वे समृद्धि-सूचक केसर अथवा हल्दी का पीला तिलक लगाते थे। शूद्र वर्ग का व्यवसाय बाकी तीनों वर्गों के काम में सहायता करना होता था। ■

रसोई में जल कहाँ रखें

॥ मुकेश अग्रवाल

- रसोई में जल की व्यवस्था पूर्व अथवा ईशान कोण में होनी चाहिए।
- रसोई में सिंक ईशान कोण में होना चाहिए। सिंक में हर समय जूठे बर्तन र रखें।
- खाना बनाते वक्त गृहिणी का मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए।
- यदि रसोईघर बास्तु के अनुसार नहीं है, तो आगेन्य कोण में एक लाल बल्ब सदैव जलता रहना चाहिए।

- रसोईघर में भारी सामान, बर्तन आदि दक्षिणी दीवार की ओर रखें।
- स्नानघर का द्वार रसोई के ठीक सामने नहीं होना चाहिए।
- स्नानघर पूर्व अथवा पूर्व आगेन्य कोण में बनाना चाहिए।
- फर्श की ढाल पूर्व अथवा आगेन्य कोण में होनी चाहिए।
- स्नानघर में शावर ईशान कोण, उत्तर अथवा

- पूर्व दिशा में होना चाहिए।
- शौचालय का द्वार रसोई के द्वार के सामने नहीं होना चाहिए।
- शौचालय में बैठते समय मुँह उत्तर एवं पूर्व दिशा की ओर कदाचित न हो। शौचालय में बैठते समय पश्चिम एवं दक्षिण में आपका मुँह होना चाहिए।
- शौचालय में पानी की टूटी उत्तर दिशा में होनी चाहिए।

देवताओं में अग्रपूज्य श्री गणपति



श्रीगणेश समस्त देवताओं में अग्रपूज्य हैं इसलिए इन्हें विनायक, विघ्नहर्ता व मंगलकर्ता भी कहा जाता है। साधारण पूजन के अलावा किसी भी विशेष कार्य की सिद्धि के लिए गणपति के विशेष रूप का ध्यान, जप व पूजन किया जाता है।

गणपति की पूजा-आराधना सर्वप्रथम उनके नाम के प्रभाव से ही सनातन काल से की जाती रही है। महाकवि तुलसीदास ने इन्हें विद्या वारिधि, बुद्धिविद्याता ही नहीं, विघ्नहर्ता व मंगलकर्ता भी कहा है। चूंकि श्रीगणेश समस्त देवताओं में अग्रपूज्य हैं इसलिए इन्हें विनायक,

विघ्नहर्ता व मंगलकर्ता भी कहा जाता है। साधारण पूजन के अलावा किसी भी विशेष कार्य की सिद्धि के लिए गणपति के विशेष रूप का ध्यान, जप व पूजन किया जाता है। ‘श्री महागणपतिषोडश स्त्रोत माला’ में आराधकों के लिए गणपति के सोलह मूर्ति रूप-स्वरूप बताए गए हैं जो भिन्न-भिन्न कार्यों के साधक हैं।

बाल गणपति: ये चतुर्भुज गणपति हैं। उनके चारों हाथों में केला, आम, कटहल, ईख तथा सूँड में मोदक होता है। यह गणपति प्रतिमा अरुण वर्णीय लाल आभायुक्त होती है। निःसंतान दम्पति इनकी आराधना से संतान सुख प्राप्त करते हैं। ऐसी शास्त्रीय मान्यता है।

तरुण गणपति: यह गणपति की अष्टभुजी प्रतिमा है। उनके हाथों में पाश, अंकुश, कपित्थ फल, जामुन टूटा हुआ हाथी दांत, धान की बाली तथा ईख आदि होते हैं। बाल सूर्य के समान इनकी भी हल्की लाल आभा होती है। युवक-युवतियां अपने शीघ्र विवाह की कामना से इनकी आराधना करते हैं।

भक्त गणपति: गणपति की इस प्रतिमा के चार हाथ हैं जिनमें नारियल, आम, केला व खीर के कलश सुशोभित होते हैं। इस गणपति प्रतिमा का वर्ण पतझड़ की पूर्णिमा के समान उज्ज्वल श्वेत होता है। इष्ट प्राप्ति की कामना से इनकी आराधना की जाती है।

वीर गणपति: यह प्रतिमा सोलह भुजाओं वाली होती है। ये अपने हाथों में क्रमशः बैताल, भाला, धनुष, चक्रायुध, खड़ग, ढाल, हौड़ा, गदा, पाश, अंकुश, नाग, शूल, कुंद, कुल्हाड़ी, बाण और ध्वजा धारण करते हैं। इनकी छवि क्रोधमय तथा भयावनी है। शत्रुनाश एवं आत्म संरक्षण के उद्देश्य से की गई इनकी आराधना तत्काल लाभ पहुंचाती है।

शक्ति गणपति: इस प्रतिमा की बाई और सुललित ऋषि देवी विराजमान होती हैं, जिनकी देह का रंग हरा है। संध्याकाल की अरुणिमा के समान धूमिल वर्ण वाले इस गणपति की दो ही भुजाएं हैं, जिनमें ये पाश एवं अंकुश धारण करते हैं। सुख, समृद्धि, भरपूर कृषि व अन्य शार्ति कार्यों के लिए इनका पूजन अत्यंत शुभ माना गया है।

द्विज विघ्नेश्वर: गणपति की इस प्रतिमा के चार मुख तथा चार ही भुजाएं होती हैं। ये अपने बाएं हाथ में पुस्तक, दाहिने हाथ में द्रव्याकृति की जयमाला

तथा शेष दो हाथों में कमण्डल व योगदण्ड धारण करते हैं। इनका वर्ण उज्ज्वल श्वेत है। विद्या प्राप्ति तथा योगसिद्धि के लिए साधक लोग इनकी शरण लेते हैं।

सिद्धि पिंगल गणपति: श्री संस्मृति नामक देवी के साथ प्रतिष्ठापित इस गणपति विग्रह के आठ हाथों में से दो हाथ वरद एवं अभयमुद्रा प्रदर्शित करते हैं। शेष छह हाथों में ये आम, पुष्प, गुच्छ, ईख, तिल से बना मोदक, पाश और अंकुश धारण करते हैं। स्वर्णिम वर्ण वाले इस गणपति स्वरूप को पिंगल विघ्नेश्वर भी कहा जाता है। किसी भी शुभ कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए गणपति के इस विग्रह की आराधना की जाती है। यह तुरंत सिद्धि प्रदान करने में प्रसिद्ध है।

उच्छिष्ठ गणपति: छह भुजाओं से युक्त यह गणपति विग्रह अपने बायें हाथ में बीणा दाहिने हाथ में द्रव्याकृति की वाली व पाश संभाले हुए है। हरापन लिए हुए काले रंग की यह गणपति प्रतिमा खड़े हुए गणपति की है। कार्यसिद्धि व अपने

गणपति को क्यों विसर्जित करते हैं जल में ?



सभी देवी-देवताओं में अग्र पूज्य गणपति को ही माना गया। हर मंगल कार्य में गणपति को पहले मनाया जाता है, इसके बाद अन्य देवी-देवताओं की पूजा होती है। गणपति को सबसे पहले पूजने के कई कारण हैं, पंच देवों में भी सबसे पहले इन्हें ही पूजा जाता है। गणेशोत्सव के बाद भगवान गणपति को जल में ही विसर्जित क्यों किया जाता है? आखिर जल से गणपति का क्या रिश्ता है?

भगवान गणेश को बुद्धि का देवता माना गया है। इस कारण इन्हें सबसे पहले पूजा जाता है, व्यक्ति की बुद्धि जागृत और तीव्र रहे तो कामों में विघ्न नहीं आते। गणपति की पूजा में बुद्धि और विद्या की मांग की जाती है ताकि हमारे कामों में कोई रुकावट न आए। दूसरा कारण है पृथ्वी के प्रमुख पांच तत्वों में गणपति को जल का अधिपति माना गया है। गणपति को इसी कारण बुद्धि का देवता भी कहा गया है क्योंकि यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि मनुष्य के मस्तिष्क में अधिकांश तरल भाग ही है इसलिए गणपति को गणेशोत्सव के बाद जल में विसर्जित किया जाता है क्योंकि जल को उनका निवास भी माना गया है। मनुष्य की उत्पत्ति जल से ही मानी गई है। भगवान का पहला अवतार (मत्स्यावतार) भी जल में ही अवतारित हुआ था। इसलिए जल को भी मानव संस्कृति में प्रथम पूज्य माना गया है।

-ज्ञानचंद्र जैन

आराध्य के विघ्न और शत्रुनाश के लिए ये गणपति उत्तावले रहते हैं।
विघ्नराज या भुवनेश गणपति: स्वर्णिम शरीर व बारह भुजाओं से युक्त यह गणपति प्रतिमा अपने हाथों में क्रमशः शंख, ईख, पुष्प, धनुष, बाण, कुल्हाड़ी, पाश, अंकुश, चक्र, हाथी दांत, धान की बाली तथा फूलों की लड़ी लिए रहती है। इनका पूजन किसी भी शुभ कार्य के प्रारंभ में करना अत्यंत लाभदायक होता है।

स्किंप्र गणपति: चतुर्भुज रूप वाला यह गणपति विग्रह अपने चारों हाथों में हाथी दांत कल्पलता, पाश और अंकुश धारण किये हुए है। उनकी आकृति खड़े हुए रूप में होती है। ये अपने सूँड़ में रलजड़ित कलश उठाए हुए हैं। इनका रंग तेज लाल होता है। धन, संपत्ति व कीर्ति प्रदान करने में ये अत्यंत समर्थ माने जाते हैं।

हेरम्ब विघ्नेश्वर: बारह भुजाओं से युक्त हेरम्ब गणपति की प्रतिमा का दाहिना हाथ अभय मुद्रा व बायां हाथ वरद मुद्रा प्रदर्शित करता है। यह प्रतिमा शेष दस हाथों में पाश, अंकुश, हाथी दांत, अक्षमाला, कुल्हाड़ी, लोहे का मूसल, मोदक, ईख और फल धारण किए हुए हैं। सिंह पर सवार हेरम्ब गणपति के पांच मुख हैं। इनके देह का वर्ण श्वेत है। संकटमोचन तथा विघ्ननाश के लिए ये अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

लक्ष्मी गणपति: गणपति की इस प्रतिमा के दोनों पाश्वों में रिद्धि-सिद्धि नामक दो देवियां विराजमान होती हैं। इनके आठ हाथों में तोता, अनार, कमल, मणिजड़ित कलश, पाश, अंकुश, कल्पलता और खड़ग शोभित हैं। देवियों के हाथों में नील कुमुद होते हैं। सुख समृद्धि की कामनापूर्ण करने के लिए लक्ष्मी गणपति अतिं प्रसिद्ध हैं।

महागणपति: द्वादश बाहु वाले महागणपति अत्यंत सुंदर, गजबदन, भाल पर चंद्र कलाधारी, तेजस्वी, तीन नेत्रों से युक्त तथा कमल पुष्प हाथ में

लिए क्रीड़ा करती देवी की गोद में उठाए अत्यंत प्रसन्न मुद्रा में अधिष्ठित हैं। उनके हाथों में अनार, गदा, ईख, धनुष, चक्र, कमल, पाश, नेपतल पुष्प, धान की बाली और हाथी दांत हैं। महागणपति ने अपने एक हाथ से गोद में स्थित देवी को संभाल रखा है और बारहवें हाथ में सूँड़ में स्थित रत्न कलश को थाम रखा है। अन्धन, सुख-विलास व कीर्ति प्रदान करने वाला यह स्वरूप भक्तों की कामना पूर्ति के लिए प्रसिद्ध है।

विजय गणपति: अरुण वर्णी सूर्य कीर्ति से युक्त तथा चार भुजाओं वाले विजय गणपति की यह प्रतिमा अपने हाथों में पाश, अंकुश, हाथी दांत तथा आम फल लिए हुए हैं। मूषक पर आरूढ़ यह विजय गणपति प्रतिमा कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान है।

नृत गणपति: पीत वर्ण की देह वाली इस प्रतिमा का स्वरूप छह भुजाओं से युक्त है। हाथों में पाश, अंकुश, पूआ, मूसल और हाथी दांत हैं। छठवें हाथ से ताल-लय के अनुसार अपनी सूँड़ को थपथपाते संगीत का आनन्द लेने की मुद्रा में एक पांच पर खड़े हुए, दूसरे पांच को नृत्य की मुद्रा में उठाए प्रसन्न मन से नृत्य कर रहे हैं। गणपति की यह प्रतिमा सुख, आनन्द, कीर्ति व कला में सफलता प्रदान करने वाली है।

ऊर्ध्व गणपति: इस गणपति विग्रह की आठ भुजाएं हैं। देह का वर्ण स्वर्णिम है। हाथों में नीलोत्पल, कुसुम, धान की बाली, कमल, ईख, धनुष, बाण, हाथी दांत और गदायुध हैं। इनके दाहिनी ओर हरे रंग से सुशोभित देवी भी हैं। जो भी व्यक्ति त्रिकाल संध्याओं में इन गणपति विग्रहों में से किसी की भी भक्तिपूर्वक उपासना करता है वह अपने शुभ प्रयत्नों में सर्वदा विजयी रहता है।

- 'विभावरी' जी-9, सूर्यपुरम, नंदनपुरा
झासी-284003 (उ.प्र.)



मां-बाप और बच्चों में संरक्षकार

● आचार्य शिवमुनि ●



बाल-विकास के सूत्रों को गहराई से समझना जरूरी है। जरा कल्पना करें, एक छोटा-सा बालक, बहुत सुंदर आंखें और भोला चेहरा, हंसता हुआ उसका मुख, सरल मन, ऐसा कोई प्यारा-सा बच्चा आपके सामने बैठा हो, उसको आप क्या सिखाना चाहेंगे? आप जरा सोचें कि ऐसा कोई प्यारा-सा बच्चा, जिसकी आंखें निर्दोष हैं, दिल में प्यार और सरलता है, उसको आप क्या सिखाना चाहेंगे?

अगर देखा जाए तो उसको कुछ भी सिखाना जरूरी नहीं है। क्योंकि ऐसा ही तो हम सबको होना चाहिए। क्या आपको यह नहीं लगता है कि उसके पास जो चेहरा है वह हमारे पास नहीं है? फिर इस बाल-विकास के सूत्र का क्या अर्थ होगा? हम कहें कि हमें बच्चों को संस्कारित करना चाहिए। उसका क्या मतलब होगा? उसका अर्थ इस बात में निहीत है कि बच्चे के पास जो सरलता और निर्दोषता है वह कुदरती है, प्रकृति के कारण है। प्रत्येक व्यक्ति का जब जन्म होता है तो वह ऐसा ही होता है। लेकिन जब धीरे-धीरे उम्र बढ़ती है तो धीरे-धीरे वह भोलापन चला जाता है। उम्र के बढ़ने के साथ, बुद्धि के विकास के साथ मन की वह सरलता और निर्दोषता नहीं रहती है। यहीं पर माता-पिता, समाज, शिक्षक और गुरु का कर्तव्य, उनका रोल, उनके संस्कार काम आते हैं।

एक महिला थी। वह किसी मनोवैज्ञानिक के पास गई। वह मनोवैज्ञानिक बहुत ही सुलझा हुआ व्यक्ति था। संत जैसा जीवन था उसका। उस महिला ने उससे पूछा, मैं चाहती हूँ कि मैं अपने बच्चों को कुछ सिखाऊं, उसके भीतर एक महान इंसान के सुंदर संस्कार डालूं। इसके लिए मैं क्या करूँ?

मनोवैज्ञानिक ने पूछा, बच्चे की उम्र क्या है? महिला ने कहा, पांच साल। मनोचिकित्सक ने कहा, बहुल लेट हो गया। बहुत देर हो गई। अब तक तो अस्सी प्रतिशत उसका जीवन बन चुका है। महिला ने पूछा, फिर मैं शुरुआत कहां से करूँ?

यही आज हम समझेंगे कि शुरुआत कहां से करें। आपको पता है कि जब आप किसी डॉक्टर के पास दर्वाई लेने के लिए जाते हैं तो आप पहले यह सोचते हैं कि डॉक्टर ठीक है या नहीं। एम.बी.बी.एस. है, एम.डी. है, आप पहले देखते और परखते हैं, फिर दर्वाई लेते हैं। आप किसी आर्किटेक्ट को अपने मकान का नक्शा बनाने के लिए देते हैं तो पहले देखते हैं कि आर्किटेक्ट क्वालिफाइड है कि नहीं। कितना अनुभव है उसका। आप किसी एडवोकेट को नियुक्त करते हैं तो पहले उसका अनुभव और काम देखते हैं। अब एक डॉक्टर बनने के लिए कितने वर्ष लगते हैं? अनेक वर्षों एक अकिटेक्ट के लिए? खूब अध्ययन करना पड़ता है। लेकिन हमने कभी यह नहीं सोचा कि एक मां और पिता बनने के लिए भी किसी ट्रेनिंग की ज़रूरत है। न तो कोई पिता अपने बेटे को यह ट्रेनिंग देता है और न कोई मां अपनी बेटी को यह ट्रेनिंग देती है।

स्मरण रखें, एक मां बनना बहुत बड़ी बात है। मां बनना गुरु बनने से भी बड़ी बात है। भारतीय संस्कृति में सर्वप्रथम मां को प्रणाम किया जाता है। फिर पिता को। उसके बाद आते हैं गुरु। स्पष्ट है कि भारत के ऋषियों और मुनियों ने मां को सर्वोच्च स्थान दिया है। जब हम भगवान महावीर का नाम लेते हैं तो कहते हैं कि त्रिशला नदन। अर्थात् त्रिशला के नदन। त्रिशला का नाम पहले आता है। ■

स्मरण रखें, एक मां बनना बहुत बड़ी बात है। मां बनना गुरु बनने से भी बड़ी बात है। भारतीय संस्कृति में सर्वप्रथम मां को प्रणाम किया जाता है। फिर पिता को। उसके बाद आते हैं गुरु। स्पष्ट है कि भारत के ऋषियों और मुनियों ने मां को सर्वोच्च स्थान दिया है। जब हम भगवान महावीर का नाम लेते हैं तो कहते हैं कि त्रिशला नदन। अर्थात् त्रिशला के नदन। त्रिशला का नाम पहले आता है। ■

'मौन' की साधना

● रचना भोला 'यामिनी' ●



में लीन कर देना।

मौन का अर्थ है अपने भीतर झाँकना। मौन का संबंध 'मन के मनन' से है। व्यक्ति के जीवन में मौन के महत्व को वाणी से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। प्राचीनकाल में मौन भाव से मनन करने के कारण ही ऋषियों को 'मुनि' कहा जाता था। कहा गया है—

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मा विनिग्रहः।

भावसंशुद्धिरित्येतत्पो मानसमुच्चयते॥

वाणी के संयम से मनुष्य के जीवन में अनेक लाभ होते हैं। जब हम मौन की साधना करते हुए अपने ही भीतर मन होने लगते हैं तो वाणी में एक गहराई आ जाती है, संकल्पशक्ति का उदय होता है तथा स्वाधिमान में वृद्धि होती है। वाचक, उपांशु व मानस जप में से मानस जप अर्थात्

अनेक गूढ़ अर्थ छिपे हैं 'मौन' में। मौन की साधना का अर्थ है, 'केवल आवश्यकतानुसार सत्य बोलना।' मौन से हमारी आंतरिक शक्तियों व ऊर्जा का विकास होता है। शक्ति व ऊर्जा को संचित करने के लिए 'मौन की साधना' आवश्यक है।

मौन शब्द का संधि-विच्छेद करें तो म+उ+न ग्राह होता है। एक विद्वान के अनुसार म (मन) उ (उत्कृष्ट) तथा न (नकार) है अर्थात् मन को संसार की ओर आकर्षित न होने देना तथा स्वयं को परमात्मा के रूप

मौन को सबसे अधिक कल्याणकारी माना गया है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में मौन की साधना करने वाले को अपने प्रिय भक्तों की कोटि में रखा है।

कहते हैं कि एक चुप-सौ सुख। इस कहावत में मौन की महत्वा छिपी है। मौन रहने वाले व्यक्ति की मानसिक एकाग्रता व बल में वृद्धि होती है। वह असत्य वचन के पाप से तो बचता ही है, साथ ही निंदा के विष से भी बच जाता है। मौन साधक वर्थ की गपबाजी से दूर अपने समय का पूरा सदुपयोग कर पाता है जिससे उसकी आंतरिक शक्ति व गुण निखरकर सामने आते हैं और वह सफलता का भागी होता है। मौन क्रोध को जीतने का एक अच्छा उपाय है। 'मौने कल हो नास्ति।' यदि किसी विवाद में दोनों में से एक भी पक्ष मौन का आश्रय ले लो तो कलह समाप्त होने में देर नहीं लगती। एक विद्वान् पाठ्यागारस इस विषय में लिखते हैं—“मुझे कभी इसको खेद नहीं हुआ कि मौन क्यों रहा, किन्तु इसका खेद अनेक बार हुआ कि मैं बोल क्यों पड़ा।”

जीवन में किसी भी प्रकार की योग्यता पाने के लिए मौन एक श्रेष्ठ साधन है। कहते हैं कि यदि बोलना एक कला है तो मौन उससे भी ऊंची कला है। यह विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए लाभकारी है। यदि बालकों को अल्पायु से ही मौन व्रत साधने का अभ्यास करवाया जाए तो निश्चित रूप से उनकी प्रसुप्त शक्तियां जागृत होंगी और भावी जीवन का पथ प्रशस्त होता चला जाएगा।

हम यह नहीं कहते कि आप बोलना ही छोड़ दें किन्तु उतना ही बोलें जितना आवश्यक हो। आपकी वाणी संयमित तथा शब्द नपे-तुले होंगे तो किसी से अनावश्यक तनाव या विवाद का प्रश्न ही नहीं उठता। अनर्गल प्रलाप से आप उपहास का पात्र तो बनते ही हैं, साथ ही ऊर्जा का भी क्षम होता है। इसी ऊर्जा को कल्याणकारी कार्यों में लाएं तथा अनर्गल प्रलाप से बचें। जो कुछ भी बोलें, उसमें मधुरता का होना भी जरूरी है क्योंकि मधुरवाणी सभी का मन मोह लेती है।

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय॥

अतः मौन में छिपे अर्थ को पहचानें व जीवन में अपनाएं। ■

धरेलू नुस्खे

■ सुरेन्द्र शर्मा



रवाएं अंगूर-बीमारी रखें दूर

अंगूर रक्त-शोधक, बल-वर्द्धक तथा पाचक गुण से भरपूर होता है। यह यकृत-विकार, पाण्डु रोग, रक्ताल्पता आदि रोगों में विशेष लाभदायक है। इसके कुछ लाभों का वर्णन यहां किया जा रहा है:

बच्चों का कब्ज- एक चम्मच अंगूर का रस पिलाने से छोटे बच्चों का कब्ज दूर हो जाता है।

दांत निकलना: जिन छोटे बच्चों के दांत निकल रहे हों, उन्हें प्रातः सायं अंगूर का रस

पिलाने से दांत आसानी से निकल आते हैं।

गुर्दे का दर्द: अंगूर की बेल के पते 20 ग्राम लेकर पानी में ठंडाई की तरह घोंट लें। फिर उसे कपड़े से छानकर रोगी को पिला दें। इससे गुर्दे का दर्द तुरंत ठीक हो जाता है।

आंख दुखना: दुखती हुई आंखों में खट्टे अंगूर के रस की 2-2 बूदे डालने से आंखें ठीक हो जाती हैं।

आंखों की खुजली: अंगूर के रस को आंच पर पकाकर गाढ़ा कर लें। फिर उस लेप को शीशे में भरकर रख लें। रात को सोते समय लेप को सलाई द्वारा आंखों में लगाने से आंखों की खुजली तथा पलकों से बाल गिरने की शिकायत दूर हो जाती है।

रक्तस्राव: जिन रोगियों के नाक, मुँह अथवा मूत्र भाग से रक्तस्राव होता है, उन्हें नियमित रूप से थोड़े-थोड़े अंगूर खिलाने पर लाभ होता है।

जीर्णज्वर: जीर्णज्वर अथवा क्षय रोग के रोगियों को अंगूर का रस पिलाते रहने से उनकी शक्ति का हास नहीं हो पाता।

दिल की घबराहट: दिल की घबराहट वाले रोगी को अंगूर खिलाने अथवा अंगूरों का रस पिलाते रहने से बीमारी दूर हो जाती है।

बल-वृद्धि: जाड़े में मुनका व दूध उबालकर पीने से बल-वृद्धि होती है।

-481, मोहल्ला महाराम, शाहदरा, दिल्ली-32

शरीर बल से मनोबल श्रेष्ठ होता है

● ऐलाचार्य श्री श्रुतसागरजी ●



मनुष्य को धन दौलत, सुंदर रूप और इस दुनिया का वैभव मिलता है। वह इनका सदुपयोग तभी कर सकता है, जब शरीर और मन- दोनों स्वस्थ हों। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है और स्वस्थ एवं स्वच्छ मन में परमात्मा का निवास होता है। मन शुद्ध तो हमारे भीतर करुणा, बंधुत्व, दया, प्रेम, वात्सल्य आदि जैसे गुण स्वयं ही आ जाते हैं। ऐसे व्यक्ति को फिर देवता भी प्रणाम करते हैं।

जिसका मन मजबूत होता है, वह व्यक्ति किसी भी मुसीबत में आराम से पार हो जाता है। इसलिए उन्नति करने के लिए मनुष्य को तन के साथ मन को तथा अपनी चेतन को भी मजबूत करना चाहिए।

एक शहर में एक सेठ रहता है। वह अपना स्वास्थ्य बनाने के लिए शुद्ध दूध पीना चाहता था। एक दिन इसके लिए वह एक भैंस खरीद कर ला रहा था। जंगल के रास्ते से आते हुए उन्होंने एक हटटे-कटटे आदमी को देखा, जिसने हाथ में एक बड़ी-सी मजबूत लाठी ले रखी थी। जब वह सेठ के पास आया, तो सेठ के मन में संदेह जगा कि कहाँ यह चोर तो नहीं है। उस अजनबी ने सेठ की तरफ लाठी उठाई और पूछा, यह भैंस किसकी है। सेठ ने कहा, मेरी है, फलां गांव से खरीद कर ला रहा हूँ।

तब उस आदमी ने लाठी सिर के ऊपर तान दी और ऊचे स्वर में फिर

से पूछा, यह भैंस किसकी है? इस पर सेठ अपने आपको असहाय महसूस करने लगा। इस सुनसान जंगल में जानवरों की आवाज के अलावा और कुछ तो सुनाई नहीं देता, मदद को भी कौन आता। उसने मन ही मन भगवान को याद करते हुए धीमे स्वर में कहा, जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जबाब सुनकर चोर ने खुश होकर कहा, अब सही बताया, क्योंकि जिसके पास बाहुबल है, अस्त्र-शस्त्र है, उसके सामने शक्तिशाली व्यक्ति भी कमज़ोर पड़ जाता है। सेठ की ताकत तो अपने घर में है, उनकी आज्ञा तो अपने घर में चलती है। अपने मोहल्ले, अपने गांव में, अपने शहर में सभी शेर हो जाते हैं। इस प्रकार चोर ने भैंस को अपने कब्जे में ले लिया और उसे लेकर चलने लगा।

सेठ ने अपने आपको कमज़ोर बताते हुए चलने में असमर्थता जाहिर की ओर चोर से बिनती की कि भाई तुम चोर जरूर हो, पर मन में दया भाव भी है। मैं अभी तक भैंस के सहारे चल रहा था। अब मैं कैसे चलूँ। और तुमने मेरा सहारा भी छीन लिया है। मेरे ऊपर कृपा करके अपनी लाठी मुझे दे दो, जिसके सहारे से मैं घर पहुंच जाऊँ।

चोर के मन में दया आई और वह सोचने लगा, भैंस तो मिल ही गई हैं अब लाठी का क्या प्रयोजन है। अज्ञानी लोग काम निकलने के बाद वस्तु को त्याग देते हैं। उसका मूल्य नहीं समझते हैं। चोर ने जैसे ही अपनी लाठी सेठ के हाथ में दी, सेठ ने उसे लेकर चोर के सिर पर तान दिया। फिर पूछा, अब बता भैंस किस की है? चोर ने कहा, जिसकी लाठी उसकी भैंस।

चोर का शरीर तो मजबूत था, परन्तु बुद्धि से, अक्ल से, दिमाग से वह कमज़ोर था। सेठ ने कहा, अब यहां से शीघ्र निकल जाओ अन्यथा तेरी खैर नहीं। चोर सिर पर पैर रखकर भगाया। तभी से यह कहावत भी प्रसिद्ध हो गई, ‘जिसकी लाठी उसकी भैंस।’ जिसके पास मनोबल, बुद्धिबल और ज्ञानबल है, उसके सामने शरीर बल, अस्त्र बल, शस्त्र बल सब छोटे पड़ जाते हैं। इसलिए अपने शरीर के साथ मन को भी मजबूत करना चाहिए। मुसीबत में घबराना नहीं चाहिए। धैर्यपूर्वक संकट का सामना करते हुए अपने आपको स्थिर करना चाहिए। शरीर बल से मनोबल श्रेष्ठ होता है। अतः मनोबल को बढ़ाने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। जिसके पास मनोबल की लाठी है, जीत उसी की होती है। ■

कर्तव्यनिष्ठा

● साधीप्रमुखा कनकप्रभा ●

शिक्षा-काल समाप्त हुआ तो गुरु ने शिष्य से कहा—‘आज तुम्हारी है। विद्यालय छोड़ने से पहले एक दिन तुम मेरे साथ बिताओ। जहां-जहां मैं जाऊँ मेरे साथ चलो।’ शिष्य गुरु का अनुसरण करने लगा। रास्ते में उन्होंने देखा—एक किसान अपनी क्यारियों को सींचने में व्यस्त था। गुरु-शिष्य उसे देखते रहे, परन्तु किसान ने उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। दोपहर ढले वे शहर में घुसे। वहां पर उन्होंने देखा कि एक लुहार लोहे को पीट रहा था। उसका शरीर पसीने से तर-बतर हो गया। गुरु-शिष्य उसे देखते रहे, पर लुहार ने नजर उठाकर ज्ञांका तक नहीं। रात को गुरु-शिष्य एक सराय में पहुंचे। वहां उन्होंने तीन पथिकों को बैठे देखा। वे पूरी तरह थके हुए दिखाई दे रहे थे। कुछ समय विश्राम किया और वे अगली यात्रा के लिए निकल पड़े।

गुरु-शिष्य ने तीनों दृश्य देखे। गुरु ने शिष्य को प्रतिबोध देते हुए



कहा—तुमने देखा कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ा है। किसान तन मन को लुटाता है, तब उसका खेत फसल पैदा करता है। लुहार शरीर सुखा देता है, तब धातु सिद्ध होती है। यात्री अपने आपको निशंश कर देता है, तब मंजिल मिलती है। तुम ज्ञानी हो, अपने कर्म से ज्ञान की क्यारियों को सींचो, जीवन की आंख से ज्ञान की धातु को सिद्ध करो तथा अपने मार्ग में अपने को चुकाकर ज्ञान की मंजिल पाओ।

मूल्यपरक शिक्षा के प्रशिक्षण काल में विद्यार्थी को कर्तव्यनिष्ठा की बात सिखाई जाती है। कर्तव्य की अनेक भूमिकाएँ हैं—परिवार, समाज, राष्ट्र आदि। परिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्य से प्रतिबद्ध विद्यार्थी अपनी सुख-सुविधा को गौण करके भी कर्तव्य-पालन में जागरूक रहता है। कर्तव्य-निष्ठा एक ऐसा मंत्र है जो उसे सफलता के शिखर तक पहुंचा देता है। अधिकार की मार्ग के युग में कर्तव्य की चेतना जाग जाए तो अधिकार स्वयं हस्तगत हो जाता है। ■



कैसा हो आपका वास्तु सम्मत ऑफिस

अक्सर लोग मकान, दुकान या ऑफिस बनाते समय वास्तु के बारे में जानकारी लेते देखे जाते हैं। सबाल उठता है कि आखिर वास्तु है क्या और इसके अनुसार मकान, दुकान आदि नहीं बनाने पर क्या होता है। क्या यह कोई विज्ञान है या विज्ञान की कोई शाखा या कोई अंधविश्वास। प्राचीन मान्यताओं की मानें तो हर दिशा विशेष गुण लिए होती है और इन गुणों के मुताबिक इमारत बनाने से लाभ होता है। इन्हीं बातों को दूसरे शब्दों में लोग दिशाओं का विज्ञान मानते हैं और इसके अनुरूप निर्माण कार्य कराने का भरपूर यत्न करते हैं। वास्तु आजकल लोगों के जीवन

में उत्तर चुका है, उनकी जरूरत बन गया है। लोगों की इसी जरूरत ने इसे एक बड़ा कारियर बना दिया है, जिसमें संभावनाओं की भरमार है।

वास्तु के टृष्णिकोण से एक अच्छे ऑफिस में बैठते हुए ध्यान रखना जरूरी है कि स्वामी की कुर्सी ऑफिस के दरवाजे के ठीक सामने ना हो।

कमर के पीछे ठोस दीवार होनी चाहिए। यह भी ध्यान रखे कि ऑफिस की कुर्सी पर बैठते समय आपका मुँह पूर्व या उत्तर दिशा में रहे।

आपका टेलिफोन आपके सीधे हाथ की तरफ, दक्षिण या पूर्व दिशा में रहे या कम्प्यूटर भी आग्नेय कोण में (सीधे हाथ की तरफ) होना चाहिए।

इसी प्रकार स्वागत कक्ष (रिसेप्शन) आग्नेय कोण में होना चाहिए लेकिन स्वागतकर्ता (रिसेप्शनिष्ट) का मुँह उत्तर की ओर होना चाहिए जिससे गलतियां कम होंगी।

ऑफिस में मंदिर (पूजा स्थल) ईशान कोण में होना चाहिए परन्तु इस स्थान पर एक गमला अवश्य रखें जिससे ऑफिस की शोभा बढ़ेगी। फाइल या किताबों की रेक वायव्य या पश्चिम में रखना हितकारी होगा।

परन्तु पूरब की तरफ मुँह करके बैठते समय अपने उल्टे हाथ की तरफ 'कैश बॉक्स' (धन रखने की जगह) बनाए इससे धनवृद्धि होगी।

उत्तर दिशा में पानी का स्थान बनाए। पश्चिम दिशा में प्रमाण पत्र, शील्ड व मेडल तथा अन्य प्राप्त पुरस्कार को सजाकर रखें।

ऐसा करने से आपका ऑफिस निश्चित रूप से वास्तु सम्मत कहलायेगा व आपको शांति व समृद्धि देने के साथ-साथ आपकी उन्नति में भी सहायक होगा। भारतीय ज्योतिष दर्शन के अनुसार, किसी भी व्यक्ति को दो कारणों से दुख मिलते हैं, गृह दोष और ग्रह दोष। गृह का मतलब है

व्यक्ति का घर और ग्रह का मतलब है व्यक्ति की कुंडली के ग्रह। जन्मपत्री में दसवां घर व्यक्ति के प्रोफेशनल करियर पर रोशनी डालता है। यदि जन्मपत्री के दसवें घर में सूर्य हो, तो व्यक्ति को सिर ढकने से करियर में बहुत सहायता मिलती है। वास्तुशास्त्र की लाल किताब के अनुसार, रोजाना गाय, कौए और कुत्ते को खाना खिलाने से व्यक्ति के जीवन में शांति और समृद्धि आती है। अगर आपका काम रचनात्मक है, यानी आप लेखन, पत्रकारिता और फिल्म आदि से जुड़े हैं, तो आपके केबिन की दिशा मुख्य दरवाजे के दूसरी ओर यानी विपरीत होनी चाहिए। अगर ऑफिस घर में ही बना हो तो यह बेड रूप के पास नहीं होना चाहिए। अगर आप राजनीति या कॉर्पोरेट जगत से जुड़े हैं, तो आपके केबिन की दिशा में गेट की ओर हो।

जब आप मीटिंग रूम में हो तो नुकीली मेज काम में न लाएं। कभी भी मीटिंग में दरवाजे के करीब और उसकी तरफ पीठ करके न बैठें।

करियर में तरकीकी के लिए अंडाकार, गोल और यू के आकार की मेज को सही नहीं माना जाता है। इसे चौकार होना चाहिए। ऑफिस के काम के लिए लकड़ी की मेज को अच्छा मानते हैं। मेज को केबिन के दाहिने किनारे से दूर रखना चाहिए।

मेज के पूर्व में ताजे फूल रखें। इनमें से कुछ कलियां निकल रही हों तो यह नए जीवन का प्रतीक माना जाता है। फूलों को झङ्गने से पहले ही बदल देना शुभ होता है।

किसी डॉक्टर के क्लिनिक में स्वयं का चैम्बर सफेद या हल्के हरे रंग का होना चाहिए।

किसी वकील का सलाह कक्ष काला, सफेद अथवा नीले रंग का होना चाहिए।

किसी चार्टर्ड अकाउंटेंट का चैम्बर सफेद एवं हल्के पीले रंग का हो सकता है।

किसी एंजेंट का कार्यालय गहरे हरे रंग का हो सकता है।

जीवन को समृद्धशाली बनाने के लिए व्यवसाय की सफलता महत्वपूर्ण है इसके लिए कार्यालय को वास्तु सम्मत बनाने के साथ-साथ विभिन्न रंगों का उपयोग लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

—विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाउस के पास, कसेरा बाजार
झालारापाटन सिटी-326023 (राजस्थान)



**प्राचीन मान्यताओं की मानें तो हर दिशा विशेष गुण लिए होती हैं और इन गुणों के मुताबिक इमारत बनाने से लाभ होता है।
इन्हीं बातों को दूसरे शब्दों में लोग दिशाओं का विज्ञान मानते हैं और इसके अनुरूप निर्माण कार्य कराने का भरपूर यत्न करते हैं।**

लाभदायक

सिद्ध हो सकता है।

सरहिन्द का चक्रेश्वरी देवी मंदिर

● महेन्द्रकुमार मस्त ●

प्रतिवर्ष माताश्री चक्रेश्वरी देवी के भक्तों के लिए आश्विन शुक्र तेरस, चौदस और पूनम के पवित्र दिन श्रद्धा व उल्लास सेकर आते हैं। प्रथम तीर्थकर श्री आदिनाथजी की अधिष्ठात्री देवी चक्रेश्वरी माता का एकमात्र ऐतिहासिक प्राचीन मंदिर सरहिन्द शहर के चण्डीगढ़ रोड पर स्थित है। यहां पर 12वीं शती से लगातार माताजी के श्रद्धालुजन, प्रत्येक जैन विशेषतः खण्डेलवाल बंधु अपनी कुलदेवी के रूप में माताजी की पूजा अर्चना के लिए आते रहे हैं। परिवारों में जन्म, मुड़न, विवाह, कारोबार, परीक्षा, गृह प्रवेश आदि शुभ कार्यों के लिए श्रद्धालुजन माताजी के भवन पर आकर पूजा, बंदना व अरदास करते हैं। मनौतीय मांगते हैं तथा माताजी की कृपा से मनौती पूर्ण होने पर गाजे-बाजे व इष्टजनों के साथ आते हैं। उत्सव के दिनों में सामूहिक पूजन, प्रसाद चढ़ाने तथा ध्वजारोहण का सौभाग्य भी माताजी की कृपा से प्राप्त होता है। तीर्थ परिसर में भगवान आदिनाथ के दर्शनों का लाभ भी मिलता है।

12वीं शताब्दी में मारवाड़ में भीषण अकाल के कारण पंजाब की ओर लोगों ने पलायन किया। जैन खण्डेलवाल परिवारों का एक जत्था जो कांगड़ा में भगवान ऋषभदेव के दर्शनों के लिए बढ़ रहा था, वह सरहिन्द में एक रात्रि के लिए रुका। अगली सुबह जिस बैलगाड़ी में अधिष्ठात्री कुलदेवी की पूजन शिला थी, वह आगे न बढ़ी। दूसरी रात्रि भी वहीं रुकना पड़ा, तब आकाशवाणी सुनाई दी कि मेरा स्थान आ गया है। मेरा भवन यहीं पर

बनवाया जाए। आदेशानुसार भक्तों ने वहीं पर मंदिर बनवाया तथा स्वयं भी सरहिन्द व पंजाब के अन्य शहरों में बस गए। किन्तु सरहिन्द में माती चक्रेश्वरी देवी के इस स्थान पर निरंतर आते रहे।

तीन सौ साल पहले सरहिन्द में गुरु गोविन्दसिंहजी के दो पुत्रों को दीवार में चिनवाने के बाद उनके बादी मां के कुल तीनों शवों को अंतिम संस्कार के लिए स्वर्ण मोहरें बिछाकर भूमि प्राप्त करने वाले दीवान टोडरमल जैन का नाम भी तीर्थ भूमि सरहिन्द से जुड़ा हुआ है। सामाना में जन्मे, गादिया गौत्रीय ओसवाल, दीवान टोडरमल जैन अपने भाई सखीदास जौहरी से बड़े थे तथा जमीनी मामलों के जानकार होने से सरहिन्द के नवाब वजीर खां के दरबार में दीवान पद पर आसीन हुए। माता चक्रेश्वरी देवी के इस उपासक ने नवाब से सोने की मोहरों के बदले भूमि लेकर, उन तीनों शवों का स्वयं अंतिम संस्कार किया। उसी स्थान पर ही गुरुद्वारा श्री ज्योति स्वरूप बना हुआ है। गुरुद्वारे की बेसमेंट का नाम ‘दीवान टोडरमल हॉल’ है। तीर्थ परिसर में सुविशाल धर्मशाला, विश्राम घर, अच्छे हवादार कमरे, खुले लॉन, भोजनशाला, पानी आदि की सुचारू व्यवस्था है। वार्षिक मेले के तीनों दिन पूरे बाजार की शक्ति में दुकानें व स्टॉल लगे रहते हैं। अपने गौरवपूर्ण व स्वर्णिम इतिहास तथा श्रद्धा का व्यापक आधार होने से माता चक्रेश्वरी देवी के इस स्थान को अब अखिल भारतीय जैन तीर्थ होने का गौरव प्राप्त है।

-263, सेक्टर-10, पंचकुला (हरियाणा)

स्नान का महत्व

● वंदना ●



प्रतिदिन शौच आदि के अनन्तर किसी नदी, तालाब आदि के शुद्ध जल में स्नान करना चाहिए। प्रातः स्नान से पापों का विनाश होता है। प्रातःकाल स्नान करने के अनन्तर ही मनुष्य शुद्ध होकर जप पूजा-पाठ आदि समस्त कर्म करने का अधिकारी बनता है क्योंकि बिना स्नान के कर्म नहीं किये जाते। नौ छिंद्रों वाले अत्यंत मलिन शरीर से दिन-रात मल निकलता रहता है। अतः प्रातःकाल स्नान करने से शरीर की शुद्धि होती है। रात में सुषुप्तावस्था में मुख से अपवित्र लार आदि पदार्थ निकलते रहते हैं। अतः

बिना स्नान किये कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। प्रातःकाल स्नान करने अलक्ष्मी, दौर्घात्मा, दुःस्वप्न तथा बुरे विचारों के साथ ही सभी पापों का विनाश भी हो जाता है और बिना स्नान किये वह आगे के कार्यों के लिए प्रशस्त भी नहीं होता, इसीलिए प्रातः स्नान की विशेष महिमा है।

स्नान करने में असर्थ होने पर सिर के नीचे से स्नान करना चाहिए अथवा गीले वस्त्र से सारे शरीर को भलीभांति पांछ लेना चाहिए या मार्जन (अपने ऊपर जल छिड़कना) से भी स्नान की विधि पूरी हो जाती है।

यद्यपि शुद्ध जल से स्नान करना सामान्य स्नान है, तथापि शास्त्रों में स्नान के अनेक भेद बतलाये गए हैं। लघुव्यास स्मृति में बतलाया गया है कि (1) ब्राह्म, (2) आग्नेय, (3) वायव्य, (4) दिव्य, (5) वारुण, (6) मानस तथा (7) यौगिक -ये सात प्रकार के स्नान होते हैं।

कुशाओं के द्वारा ‘आपो हिष्ठा’ मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने ऊपर जल से मार्जन करना ‘ब्राह्म-स्नान’ है। समस्त शरीर में भस्म लगाना ‘आग्नेय-स्नान’ कहलाता है। गाय के खुर की धूलि को पूरे शरीर में लगाना ‘वायव्य-स्नान’ है। वायु द्वारा अथवा उड़ाइ गई गोधूलि का शरीर में पड़ जाना भी एक प्रकार का ‘वायव्य-स्नान’ है। इसमें वायु का विशेष योग रहता है, इसलिए इसकी संज्ञा वायव्य है। सूर्य किरण में वर्षा के जल से स्नान करना ‘दिव्य स्नान’ है। जल में डुबकी लगाकर स्नान करना ‘वारुण-स्नान’ है। आत्मज्ञान ‘मानस-स्नान’ है और भगवान का चिंतन करते रहना-यह योगरूप ‘यौगिक स्नान’ है। ■

महान समाज सुधारक संत पीपाजी

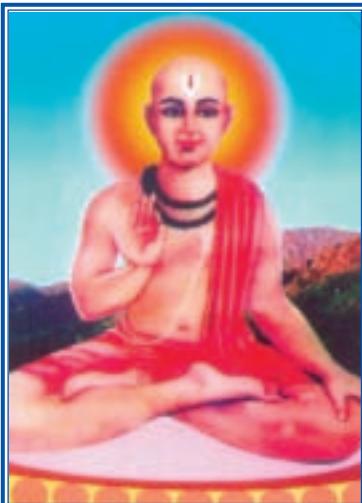
रा

जस्थान प्रदेश के झालावाड़ जिला मुख्यालय के निकट आहू और कालीसिंध नदी के किनारे बना प्राचीन जलतुर्गंगा गागरोन संत पीपाजी की जन्म और शासन स्थली रहा है। इसी के सामने दोनों नदियों के संगम पर उनकी समाधि, भूगर्भीय साधना गुफा और मंदिर आज भी स्थित हैं। उनका जन्म 14वीं सदी के अंतिम दशकों में गागरोन के खींची राजवंश में हुआ था। वे गागरोन राज्य के एक वीर, धीर और प्रजापालक शासक थे। शासक रहते हुए उन्होंने दिल्ली के तत्कालीन सुल्तान किरोज तुगलक से लोहा लेकर विजय प्राप्त की थी, किन्तु युद्धजन्य उन्नाद, हत्या, लूट खसोट के वातावरण और जमीन से जल तक के रक्तपात को देख उन्होंने तलवार तथा गागरोन की राजगद्दी का त्याग कर दिया था। ऐसे त्याग के तत्काल बाद उन्होंने काशी जाकर स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया। शिष्य की कठिन परीक्षा में सफल होकर वे स्वामी रामानन्द के बारह प्रधान शिष्यों में स्थान पाकर संत कबीर के गुरुभाई बने।

संत पीपाजी ने अपनी पत्नी सीता सहचरी के साथ राजस्थान में भक्ति एवं समाज सुधार समन्वय का अलख जगाने में विलक्षण योगदान दिया। उन्होंने उत्तरी भारत के सारे संतों को राजस्थान के गागरोन में आने का न्यौता दिया। स्वामी रामानन्द, संत कबीर, रैदास, धन्ना सहित अनेक संतों की मण्डलियों का पहली बार राजस्थान की धरती पर आगमन हुआ और युद्धों में उलझते राजस्थान ने भक्ति और समाज सुधार की एक महान क्रांति का सूचनात किया। पीपाजी और सीता सहचरी ने उसी समय अपना राज्य त्याग कर गागरोन से गुजरात तक संतों की यात्रा का नेतृत्व किया। उन्होंने समुद्र स्थित द्वारका तीर्थ को खोजा और परदुःखकातरता, परपीड़ा तथा परव्याधि की पीड़ा की अनुभूति कराने वाली वैष्णव विचारधारा को जन-जन के लिए समान भावों से जीवनोपयोगी सिद्ध किया। कालान्तर में गुजरात के महान भक्त नरसी मेहता ने उनकी इसी विचारधारा से प्रभावित होकर ‘वैष्णव जन तो तैने कहिये, पीर पराई जाण रै’, पद लिखा, जो महात्मा गांधी के जीवन में प्रेरणादायी सिद्ध हुआ।

संत पीपाजी को निर्णय भावधारा का संत कवि एवं समाज सुधार का प्रचारक माना जाता है। भक्त मीराबाई उनसे बहुत प्रभावित थी, तभी तो उन्होंने लिखा “पीपा को प्रभु परच्छो दिन्हो, दियो रे खजानापूर्” वही भक्तमाल लेखन की परम्परा का प्रवर्तन करने वाले नाभादास ने पीपाजी के जीवन चरित्र पर देश में सर्वप्रथम ‘छप्पन’ की रचना की थी।

संत पीपाजी बाहरी आडम्बरों, थोथे कर्मकाण्डों और रूढ़ियों के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि “ईश्वर निर्णय, निराकार, निर्विकार और अनिवृत्तनीय है। वह बाहर भीतर, घट-घट में व्याप्त है। वह अक्षत है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीवन में व्याप्त है।” उनके अनुसार “मानव मन (शरीर) में ही सारी सिद्धियाँ और वस्तुएं व्याप्त हैं।” उनका यह विराट चिंतन ‘यतिप्णडेतत्त्वह्याण्डे’ के विराट सूत्र को मूर्त करता है और तभी वे अपनी काया में ही समस्त निधियों को पा लेते हैं। फिर किसी बाहरी सौंदर्य या तीर्थ, पूजा की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है।



**संत पीपाजी को निर्णय भावधारा का संत कवि एवं समाज सुधार का प्रचारक माना जाता है।
भक्त मीराबाई उनसे बहुत प्रभावित थी, तभी तो उन्होंने लिखा – ‘पीपा को प्रभु परच्छो दिन्हो, दियो रे खजानापूर्’ वही भक्तमाल लेखन की परम्परा का प्रवर्तन करने वाले नाभादास ने पीपाजी के जीवन चरित्र पर देश में सर्वप्रथम ‘छप्पन’ की रचना की थी।**

संत पीपाजी सच्चे अर्थों में लोक मंगल की समन्वयी पद्धति के प्रतीक थे। उन्होंने संसार त्यागकर निरी भक्ति करते हुए कभी पलायन करने का सदेश नहीं दिया। वे तो अपने लोक के प्रति इतने समर्पित थे कि वे इसी से अपनी भक्ति के लिए ऊर्जा प्राप्त करते थे। यही कारण है कि मध्ययुगीन भारतीय संतों में उनकी अपनी प्रतिष्ठा है। वे लोकवाणी के वाहक भी हैं और लोक को समर्पित व्यक्तित्व भी। उनकी समूची वाणी ही लोक के परिष्कार के लिए है। अपनी वाणी में उन्होंने जो कुछ भी कहा उसकी अपनी व्यंजना है।

अपने गुरुभाई कबीर को उन्हें बहुत सहारा था। अतः वे उन्हीं की भाँति अपने युग के पाखण्ड और आडम्बर के विरुद्ध तनकर खड़े हुए भी दिखाई देते हैं। वे उस संत की खुले शब्दों में भर्तसना करते हैं जो केवल वेशभूषा से संत होता है आचरण से नहीं। इसी के साथ वे बड़े मर्म की बात कहते हैं कि “सच्चा सूरमा वही है जो अपने अंदर बैठे हुए शत्रुरूपी विकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ले।”

संत पीपाजी ने भक्तिमार्ग एवं समाज सुधार की सच्ची भावना को अंगीकार कर जनमत का भेद मिटाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। एक बार वे दौसा में श्रीरंगी भक्त के आश्रम में बैठे थे, उसी समय दो शुद्धा (हरिजन) स्त्रियां वहां आई। वे अति सुंदर थीं। पीपाजी ने उन्हें अपने पास ससम्मान बैठाया तथा उनसे कहा कि “वे अपना रूप-रंग रामजी की भक्ति नहीं करके व्यर्थ गंवा रही है।” श्रीरंगजी ने उनसे कहा कि “ये नीच जाति की है।” तब पीपाजी ने उनसे कहा, “मैं इन्हें दीक्षा दूंगा ताकि इनका यह लोक व परलोक सुधर जायेगा। ऊंच-नीच का भेद समाप्त करने के लिए ही मैंने इन्हें बुलाया है।” अन्ततः उन्होंने दोनों स्त्रियों को दीक्षा प्रदान कर उस युग में ऊंच-नीच और जनमत के भेद को समाप्त किया।

उस युग में ही पीपाजी ने सामाजिक पर्दा-प्रथा का कठोर विरोध उत्तरी भारत में पहली बार किया। इस बारे में उन्होंने बताया कि “जिसमें सच्ची भक्ति और आत्मबल के भाव हैं, उन्हें पर्दा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।” उन्होंने यह भाव केवल वैचारिक धरातल पर ही नहीं की, वरन् अपनी पत्नी सीता सहचरी को आजीवन बिना पर्दे के ही रखा।

संत पीपाजी लोक समन्वय के लिए ब्रह्म, भक्ति, नामरस, आत्मा, परमात्मा, कर्म, माया, वर्ण, अहिंसा, जीव, इन्द्रिय-निग्रह, अनहदनाद आदि पर ऐसी अनुपमेय अभिव्यक्ति दी जो सदियों बाद आज भी प्रासांगिक है। उनकी वाणी वास्तव में सुनने के लिए नहीं है, वह तो आचरण में उतारने के लिए है। संत पीपाजी का रचना संसार लोक मंगल के लिए भक्ति एवं सामाजिक समन्वय के सच्चे भावों पर आधारित है। आज जब धर्म, नस्त, जाति, क्षेत्र जैसे भेदों को गहराकर मानवता विरोधी ताकते सक्रिय हैं, ऐसे में महान संत पीपाजी की वाणी की राह ही हमें अखण्ड मानवता के पक्ष में ले जा सकती है।

—जैकी स्टूडियो, 13 मंगलपुरा स्ट्रीट
झालावाड़-326001 (राजस्थान)

फैशन के नाम पर क्रूरताएं



आज का मनुष्य किस हद तक क्रूर बन गया है कि उसकी क्रूरता देखकर राक्षस भी शर्मा जायेगा।

आज आदमी बिल्ली और कुत्तों का मांस खाने लगा है, गधों का खून पीने लगा है। होटलों में मनुष्य का मांस परोसा जाता है। भ्रूण-शिशुओं की हत्या करके उनके मांस की दावतें दी जाती हैं। आज अण्डे और मछली खाने की बात पुरानी हो गई। अब तो मानव कीट भोजी और नरभक्षी बन गया है। कीड़े, टिड़े, छिपकलियों, झाँगुरों, चीटियों के व्यंजन बनाकर खाने लगा है। चीन की एक महिला चिकित्सक ने एक वर्ष में 100 भ्रूणों का मांस खाया। भारतवर्ष में भी 57 लाख से एक करोड़ भ्रूण हत्याएं प्रतिवर्ष हो रही हैं। मनुष्य की क्रूरता, नृशंसता की बातें सुनकर तो हृदय दहल उठता है। ऐसा लगता है, करुणा, दया नाम का तत्व तो मानव हृदय से लुप्त ही हो गया है और मनुष्य की मनुष्यता मर चुकी है।

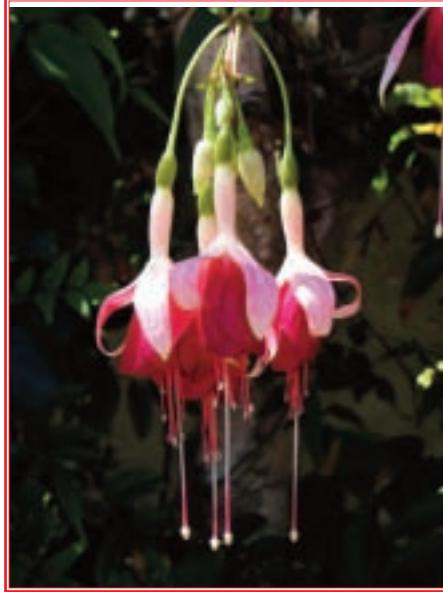
केवल मांसाहारी लोग ही इस क्रूरता में शामिल नहीं हैं, परन्तु आप अपने को सज्जन, दयालु, धार्मिक और जैनी कहलाने वाले भी जाने-अजाने ऐसी क्रूर हिंसा में भागीदार बन रहे हैं।

कुछ वर्ष पहले बड़ौदा (गुजरात) से प्रकाशित लोकसत्ता-जनसत्ता (2 अप्रैल 94) के अंक में एक समाचार पढ़ा था कि चण्डीगढ़ का पी.जी.आई. सेन्टर हर वर्ष वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए करीब 200 बदर, 100 कुत्ते, 2,000 खरगोश, 500 गिनीपिंज तथा 10,000 चूहे मारता है। यह तो एक शहर की खबर है। इस प्रकार के सैकड़ों सेंटर हैं, इससे बड़े-बड़े अनेक सेंटर हैं। उनमें क्या होता होगा? हजारों, लाखों प्राणी रोज़ मौत के घाट उतरते होंगे। कहते हैं मियामी हवाई अडडों से 200 जहाज हर हफ्ता पशुओं से भरकर अमेरिका जाते हैं और सीधी बात है अमेरिका उन पशुओं को कोई पालने के लिए थोड़ा ही मंगता है, वह उन सबके मांस, हड्डी, खून, बाल एक-एक अंग का उपयोग करता है।

आज आपके मौज-शौक के लिए किस प्रकार छोटे-छोटे प्राणियों पर अत्यंत क्रूरता के साथ प्रहार किये जाते हैं। मौज, शौक, फैशन के लिए संसार में आज कितनी क्रूरता हो रही है, इसका भी बड़ा दर्दनाक चित्र है, हमारे सामने।

चिड़ियाघरों में आप लोग बिल्ली जैसा एक छोटा

सा मासूम जानवर देखते होंगे-बिज्जू। सेंट बनाने के लिए इसे पकड़कर बैंतों से सूता जाता है, ताकि पीड़ा से उद्विग्न होकर उसकी यौन ग्रांथि म्प्रावित हो, फिर तेज धारदार चाकू से उसका वह साव खरोंच-खरोंचर सुग्राहित हो। सेंट लगाते हुआ आपके सामने आता है। सेंट लगाते हुए यदि आप एक क्षण भर कल्पना करो-बिज्जो पर बैंतों की निर्मम



एक नहीं, सैकड़ों ऐसे प्राणी हैं, जो आज मनुष्य की बर्बता के शिकार हो रहे हैं। गिनीपिंग, बीबर, बिज्जू, लोरिस, सील मछली, कराकुल, सूअर, कछुआ, सांप आदि अनेकानेक प्राणियों को मनुष्य सिर्फ अपने शौक के लिए मारता है, जीवित ही उनकी खाल उतारता है, उनका खून खींचता है, सिर्फ इसलिए कि इनसे उसके मौज-शौक पूरे होते हैं? सांपों की खाल से नरम पर्स, सील मछली के बच्चों की खाल से मुलायम कोट और कराकुल भेड़ के शिशुओं की खाल से बनी टोपियां, इनको देखते ही क्या आपका हृदय अप्स्ट्रिट नहीं होता? बताते हैं-कनाडा और नार्वे आदि में सील मछली बहुतायात में पायी जाती है। लोहे की तीखी सलाई सील शिशु के सिर में घोंप दी जाती है ताकि इसकी खाल अखण्ड निकल आए। जब सील शिशु उस तीखी सलाई से लहूलुहान होकर चीखता-तड़पता है, तब मादा सील अपने बच्चे को यों खून में सने-तड़पते देखकर इतनी भयानक ढंग से दहाड़ती है कि मानों समुद्र तक दहाड़ने लगता है, इस दृश्य को देखकर सूरज भी कांप उठता है। 9-10 सील शिशुओं की खाल से एक कोट बनता है। इसी प्रकार कराकुल भेड़ जब गर्भवती होती है, तब बैंतों से पीट-पीटकर उसका भ्रूण गिराया जाता है और उस नवजात भ्रूण को चीरकर मुलायम रायेंदार चमड़ी प्राप्त की जाती है। क्या इस दृश्य को देखकर आपकी आंखें सूखी रह जायेंगी? इस प्रकार अत्यंत क्रूर, निर्मम और बर्बर तरीकों से मनुष्य अपना शौक पूरा करता है।

संसार में आज क्रूरता और बर्बता चरम सीमा पर पहुंच गई है। आप जानते हैं, पाप और हिंसा जब अपनी चरम सीमा पर पहुंचती है तो उसका एक ही परिणाम होता है-महाविनाश! ऐसा लगता है, आज यदि मनुष्य इस क्रूरता और बर्बता से पीछे नहीं हटेगा तो कहीं वह अपने ही हाथों अपनी मानवजाति का सर्वनाश न कर बैठें? इतिहास साक्षी है क्रूरता का अंतिम परिणाम नाश ही होता है। ■



कविताएं

सप्तरनामा

■ धर्मवीर भारती

मैंने घर छोड़ा, ओढ़ा देश निकाला
जाने किसकी तलाश में अलख जगाया
वीराने छाने, जंगल—जंगल भटका
पागलपन मुझ पर बीहड़ राहों का था
इस पागलपन के जाने क्या थे माने

सब समझे मैं हूं नए गगन का पाखी
सब समझे मैं कुछ नया ढूँढ कर लाया
सच तो यह है, मैं आज बता दूं सबको
मैं पंख पसार पड़ा जितनी दूर तक
वह सारा क्षितिज तुम्हारी बाहों का था
इन होठों से जितना जो कुछ रस पाया
उसको ही अपना गीत बनाकर गाया

अब शाम उत्तर आई है— पथ धुंधलाया
धीरे—धीरे उदास अंधियारा छाया
राहें पगड़ंडी सब होती जाती गुम
अब मेरे और करीब, और करीब चलो तुम
जिस मन की मधुराई, तन की उजराई
मुझको सम्भाल कर इस मुकाम तक लाई
वह कदम—कदम करती उजियार चलेगी
यह यात्रा जनम—जनम के पार चलेगी।

आध्यात्मिक गीत

■ वंशीलाल पारस

प्रभु तेरी लीला कैसे गाऊँ
केहि विधि मैं जग को समझाऊँ
जान सकता न तेरी माया
पार न अब तक कोई पाया
भूले भटकों को कैसे गैल बताऊँ
तन पिजरे मैं बहुविधि आना
आ—आ कर फिर—फिर जाना
इसका कौन मरम समझाऊँ
गर्म ज्ञान को शब्द दूं कैसे
अकथ कहूं बोलो मैं कैसे
कैसे अरूप को रूप मैं लाऊँ
प्रभु तेरी लीला कैसे गाऊँ।

—ओशो कुंज, ट-14, बापूनगर
भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)

वह कौन थी

■ सुधा गुप्ता 'अमृता'

मन उदासी के अंधेरे चक्रव्यूह में
धिरा बैठा था
दूर—दूर तक रोशनी का कोई कतरा
नजर नहीं आ रहा था
ऐसे मैं एक तेज झोंका आया
कुछ फड़फड़ाया
उसकी फड़फड़ाहट मेरे समीप आई
मुझे छूकर कहने लगी
मुझे देखो, मेरे चेहरे को छुओ
मेरे हृदय की गहराई में डूबो
मेरे पास सुख है, दुख है, ज्ञान है, विवेक है
मैं भूत, भविष्य, वर्तमान हूं
मैं पूरा का पूरा दिनमान हूं
मुझमें रोशनी है भरपूर
अधेरा भाग सकता है कोसों दूर
मैं उस फड़फड़ाती चीज के साथ
दोस्त की तरह रही रात भर
वह मेरे हृदय से चिपकी रही रात भर
सुबह होने तक मेरा मन
दूधिया चांदनी से भर चुका था
मेरे चारों तरफ सूर्य का
उजास भर चुका था
वह फड़फड़ाती हुई कौन थी?
'किताब' थी।

—दुबे कॉलोनी, बरही रोड
कटनी-483501 (म.प्र.)

लक्ष्य की ओर चल

■ नरेश कुमार 'उदास'

लक्ष्य की ओर निरन्तर चल
पानी बहता है कल—कल
तेरे इरादे हैं तेरा बल
मिलेगा तुझे अवश्य मेहनत का फल।
नहीं कभी भी किसी को छल
हमेशा सीधे रास्ते चल
मुसीबतों में तपकर निकल
गिर—गिर कर संभल।
न मन को कर अति विकल
इरादे तेरे बस रहें अटल
अवश्य आएगा सुनहरा कल
निरन्तर लक्ष्य की ओर चल।

—हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी
संस्थान, पालमपुर-176061
(हिमाचल प्रदेश)



उचित व्यवहार

■ श्याम श्रीवास्तव

रखनी कहीं
कहीं पर रख दी
चीजें तिकड़मबाज ने,
धरनी थी
मन में, मंदिर में
ला धर दी बाजार में।
कसम—रसम
हमने जो भी की
अंदर घर कोने,
लाये हांक
तीर की जद में
वे भी मृग छैने,
लायेगा क्या क्या
अब जाने और
खींच व्यापार में।
अजब तमाशा
लाभ लिख दिया
लिखना जहां घटी,
लंका के प्रांगण
में लिख दी
पावन पंचवटी,
दरकेगी दीवार
लाडी जो सेंधे
शब्द—आधार में।
बेड़ा गर्क,
कहा जो सर को
पैर, पैर को सर,
चंगेजों को दूध
तपी के लिए
कींच—गोबर,
हल—दलदल का
लिखा कहीं तो
लिखा उचित व्यवहार में।
—988 सेक्टर-आई, एल.
डी.ए., कानपुर रोड,
लखनऊ-226012



मेरे हिस्से की धूप

■ किशोर श्रीवास्तव

कभी-कभी मैं सोचता हूँ
क्यों किसी के हिस्से की धूप
किसी और के आगन में
उतर जाती है और क्यों
किसी पात्र व्यक्ति के
हिस्से की खुशियां
कोई अपात्र व्यक्ति
लूट ले जाता है।

एक मजदूर जो रात-दिन
करता है मेहनत
और तैयार करता है एक बंगला न्यारा
वर्षों उसे उसमें नहीं मिलता है
एक रात बिताने का मौका।

क्यों कोई व्यक्ति अपने जिस्म का
हिस्सा समझकर जिसकी
करता है हिफाजत सालों साल
वर्षों जिसे चाहता है, पूजता है
और जन्म जन्मान्तर तक साथ रहने की
लालसा लिए है जीता
एक दिन अचानक क्यों वह
बना दी जाती है किसी और के
घर-आंगन की तुलसी
बगैर यह जाने कि उस आंगन की हवा,
वहां का पानी और वहां की मिट्टी
उसके माफिक है भी या नहीं।

यदि सभी को अपने-अपने
हिस्से की धूप,
मेहनत का फल,
हिस्से की खुशी और प्यार मिले
तो इसमें भला क्या बुराई है।

कुछ लोग कहते हैं,
जिसके हिस्से या जिसके भाग्य में
जो चीज लिखी होती है
वही उसके हिस्से में आती है।
किसी के चाहने
या न चाहने से इस पर
कोई फर्क नहीं पड़ता है,
यही ईश्वर का विधान है।

-916, बाबा फरीदपुर, वेस्ट पटेल
नगर, नई दिल्ली-110 008

सोचिए

■ डॉ. अर्चना वालिया

आज इक्कीसवीं सदी
टीन एजर्स होने की ओर अग्रसर है।
परन्तु आधुनिकता का मुख्योत्ता
लगाये समाज जितना आधुनिक है,
उतना ही पुरातनपंथी भी।
बेटे के जन्म पर खुशियां,
बेटी के जन्म पर मातम।
ये कहां जा रहे हैं हम?
ये कोढ़ लगे, सड़े-गले, रस्मों रिवाज,
हमें कहां ले जायेंगे?
तब क्या होगा जब धरती पर
बेटे ही बेटे नजर आयेंगे?
सोचिए! विचारिये! कि जब
बेटियां लुप्त हो जायेंगी,
तो बेटे कहां से आयेंगे?
तीन पुश्तों तक
वंश चलाने वाले पोतों के लिए
दादा-दादी
अपनी पोत-बहुएं कहां से लायेंगे?
सोचिए! सोचिए! और बस सोचिए!
—286, स्नेहकुंज कॉलोनी, जौनपुर
दक्षिण, कोटद्वार, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

गज़्रूल

■ आशीष दशोत्तर

वफा का दोस्तों दुनिया से ये ईनाम लेते हैं,
घुटन के दर्मियां हर सांस सुबहो-शाम लेते हैं।

मेरे आंगन में अब भी एक बूढ़ा पेड़ बाकी है,
परन्दे रोज़ रातों में वहीं आराम लेते हैं।

पटाखा फूटता है जब मेरी गलियों में रातों को,
मेरे घर भर के सारे लोग दिल को थाम लेते हैं।

तुम्हारे झूठ पर वे मुर्स्कुराते हैं मगर फिर भी,
जहां ईमान की बातें हो मेरा नाम लेते हैं।

परिन्दे हम भी हैं उड़ना हमें भी खूब आता है,
हवाओं से नहीं डरते, परो से काम लेते हैं।

कभी-गांधी, कभी जे.पी., कभी अण्णा हजारे का,
मुसीबत में घिरे सब लोग दामन थाम लेते हैं।

नहीं परहेज करते हैं मशक्कत और मेहनत से,
पसीने की मगर हर बूंद का भी दाम लेते हैं।

हमारे लफज़ हैं आशीष हीरों की चमक वाले,
निगाहों से सदा यूं ही हम अपना काम लेते हैं।

-39, नागर वास, रतलाम-457001 (म.प्र.)

कभी-कभी

25

■ बाबूलाल शर्मा

कभी-कभी
कोई मिलता है,
जो मिलता ही
फूल-सा खिलता है,
दो कदम चलता है
साथ-साथ
हाथों में लेता है हाथ,
और आगे बढ़ जाता है
हाथ फिर भी महकता
रह जाता है।
और मन अनजाने ही
हो लेता है
उसके संग,
जो है अपना सा
एकाकी
और निःसंग,
सदैव नहीं आती है
ऐसी रिधतियां
ऐसी उमंग,
कभी-कभी कहीं कोई
मिलता है—
जिसे पाकर दिल
फूल-सा खिलता है।

—555—क/1-ग/1,
इन्द्रपुरी, आलमबाग,
लखनऊ-12 (उ.प्र.)

धरा पर पांव रख

■ डॉ. विनोद सोमानी 'हंस'

काच से भी नाजुक है यह जिन्दगी।
उसमें भी बटोर ली यार गन्दगी।

उपलब्धियों की होड़ में शांति कहां।
सच्चा सुख चाहो तो कर लो बंदगी॥

क्षितिज की खोज में कहां तक जाओगे।
घरा पर पांव रख छोड़ दरिंदगी॥

जाने कितने मूल्य खुद गढ़ लिये।
कहां हाथ आई अपनी पसंदगी॥

दूसरों की आंखें में धूल झोकते रहे।
अपनी ही फूटी तो लगी शर्मिंदगी॥

न जाने किस होड़ में भागते ही रहे।
खुद को ही नहीं संभाला ताजिन्दगी॥
—42/43 जीवन विहार कॉलोनी
आनासागर सरक्यूलर रोड
अजमेर-305004 (राजस्थान)

समृद्ध सुखी परिवार | दिसंबर-11

भक्ति का अर्थ



परमात्मा की भक्ति
से रहित जीवन
मुक्ताफलरहित शुक्ति
(सीपी) के समान है।
वह उस छिलके के
सदृश है जिसमें
बीज नहीं।



भक्ति का अर्थ आदर्श के अनुकूल व्यवहार है, सेवा कर्म है। हम सम्पूर्णतां मम भवभवे यावदतऽपवर्गः कहते हुए अपने आप में आश्रय लेते हैं, उसके प्रति निष्ठा का आत्मर्थ्यिक-आराध्यवृत्ति को भक्ति नाम से पुकारते हैं। हमारे आराध्य तदगुणलब्धि में सहायी होने से विश्व के भक्तिपात्र हैं, श्रद्धाजन हैं।

भक्ति का अन्यतम अर्थ परम्परा है। हिन्दी में व्यवहृत तद्भव शब्द 'भाँति' विविधता के अर्थ में रीति के समानार्थ में प्रयुक्त होता है। भाँति-भाँति के व्यंजन एवं ऐहि भाँति गौरि असीष सुनि सिय- पदों में उक्त अर्थद्वयी व्यक्त की गई है। एतावता मोक्षमार्ग पर चलने के लिए अभ्यासिक अवस्था वाले साधकों को मोक्षमार्ग परमात्मा की दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप त्रिसक्त्व संपदा का रीति-निर्वहण करना चाहिए—यह भक्ति का आशय है।

भक्ति मानसिक भावबोध की उत्कृष्ट सरागावस्था है। भगवान की अष्टद्रव्य पूजाविधि, स्तोत्रालाप, दर्शन इत्यादि भक्ति के पर्याय हैं। मुक्तावस्था से पूर्व भक्ति का आलम्बन शनैः शनैः: आत्मा पर अनादिकाल से दृढ़लिप्त कर्मकश्मल की निर्जरा में उपकारी सिद्ध होता है। भक्ति की आनन्दतरणीयी में स्नात मुकुन्दमाला का वह श्लोक अत्यंत आह्वादक है। जिसमें निश्चल भक्ति की याचना करते हुए जीवात्मा (भव्यात्मा) प्रार्थना करता है कि मुझे धर्म, अर्थ और काम की इच्छा नहीं, पूर्वकृत कर्मों के अनुसार जैसा हो, सो हो। मेरी तो जन्मजन्मान्तर के लिए यही प्रार्थना है कि हे भगवन्! आपके चरणयुगल में अविचल भक्ति बनी रहे-

नास्था धर्मे न वसुनिचये नैव कामोपभोगे।

यद्भाव्यं तद्भवतु भगवन्! पूर्वकर्मानुरोधात्।

एतत्रार्थ्यं सम बहुमतं जन्मजन्मान्तरेऽपि।

त्वपादाम्भोरुहयुगगता निश्चला भक्तिरस्तु।

अर्थ- परमात्मा की भक्ति से रहित जीवन मुक्ताफलरहित शुक्ति

(सीपी) के समान है। वह उस छिलके के सदृश है जिसमें बीज नहीं। अन्तःसारहीन तुष्मात्र है। वर्तमान युग में हुए भारतीय राजनीतिविद् महात्मा गांधी ने स्विटजरलैंड में शांति की अंतर्राष्ट्रीय एच्छिक सेवा के संस्थापक पियरे सेरेसोल द्वारा किये गये एक प्रश्न के उत्तर में तत्काल यह कहते हुए उन्हें आश्चर्य में डाल दिया था कि चौबीस घंटों में प्रत्येक मिनट ईश्वर का साक्षात्कार नेता का परमावश्यक गुण है।

भक्तिगंगा में अवगाहन करना पुण्ययोगलभ्य परिणाम है। लौकिक गंगा में स्नान करने से यदि बाह्यविशुद्धि होती है तो भक्तिगंगास्नान से अभ्यन्तर विशुद्धि की प्राप्ति होती है।

न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा- (महाभारत)

घड़ी दो घड़ी मंदिर में जाया करो,

ए जी! जाय करो, मन लगाया करो!

सब दिन घर-धन्धा में खोया,

कछु तो धर्म में बिताया करो।

पूजा सुनकर शास्त्र भी सुन लो

आध घड़ी तो जाप में बिताओ॥

कहत 'जिनेश्वर' सुन भवि प्राणी!

जावत मन को लगाया करो॥

अर्थ-हे भव्य प्राणी! घड़ी दो घड़ी के लिए भगवान के मंदिर में भी जाया करो। रात-दिन के दीर्घ समय में अल्पकाल तो प्रभुजी में मन लगाया करो। हे बन्धु! सारा दिन घरेलू प्रपंचों में ही व्यतीत कर देते हो, उसका कुछ अंश तो धर्म में, शुभ में भी बिताया करो। भगवन् के मंदिरजी में जाओ। वहां प्रभु की पूजा-अर्चा करो, शास्त्र सुनो और घड़ी-आध घड़ी जाप में भी व्यतीत करो। 'जिनेश्वर' कवि का कथन है कि इधर-उधर दौड़ते हुए चंचल मन को कुछ समय के लिए प्रभुभक्ति में भी लगाया करो। ■

जांबाज नारियाँ

● कन्हैया अगनानी ●



हाल ही में दूरदर्शन पर एक समाचार देखा कि अब इस देश में नारियों को 'कमाण्डो पद के लिए' भर्ती किया गया है। ये कमाण्डो महिलाएं पूर्ण रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर विशेष परिस्थितियों में देश की सुरक्षा के लिए तैनात रहेंगी। सकुचाती, लज्जाती, नाजुक कहलाये जाने वाली नारियां अब हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे निकल रही हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं, न्याय जगत ही नहीं बल्कि हमारे देश की नारियां सख्त व चुनौतीपूर्ण कार्य कर रही हैं जैसे फौज में नारियां हैं। पुलिस में नारियां रहकर मुंजरिमों की जमकर पिटाई तक करती हैं और जहां नारियां बस ड्राइवर हैं तो वहीं अब नारियां हर कार्य को करने के लिए आगे आ रही हैं।

महानगरों में दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चैनई ही नहीं अब छोटे महानगरों में बंगलोर आदि ही नहीं अपितु राजस्थान की राजधानी जयपुर में नारियां पेट्रोल पम्पों पर कार्य कर रही हैं। यही नहीं होली हो या दीपावली यहां की महिलाएं पुलिस की वर्दी पहनकर बकायदा जहां ट्रफिक को नियंत्रित कर रही हैं तो वहीं दंडों के दौरान गलियों में घुसकर गुण्डों, बदमाशों को पकड़कर उन पर डंडे बरसाने में पुरुषों से कहीं आगे हैं।

यायावर की मानिन्द घूम-फिरकर देखने पर पाया है कि नारियों में आज पुरुषों से कहीं अधिक आत्मविश्वास, आत्मनियंत्रण, धैर्य ही नहीं अपितु वे हर मामले में पुरुषों से कहीं अधिक साहसी व दबंग हैं। इसी के साथ वे शांति प्रिय होकर अपने घर-परिवार को संभाल रही हैं। अपने बच्चों को सुसंस्कृत ही नहीं करती है बल्कि उनकी पढ़ाई-लिखाई पर जितना ध्यान

ये माताएं देती हैं संभवतया पुरुष नहीं देते। राजनीति हो या शिक्षा, लेखन व पत्रकारिता हो या साहित्य, बड़ी-बड़ी दुकानें हो या फैक्टरियां व्यावसायिक जगत में भी यहां की नारियां अपने कदम बढ़ाती हुई आगे निकल रही हैं इस देश के लिए गर्व की बात है कि नारी अब कवल घर की चौखट पर रहने वाली पर्दानशी महिला नहीं रही बल्कि पुरुषों को हर कदम पर, कदम से कदम मिलाकर सहयोग देने वाली जांबाज साथी के रूप में सहयोग दे रही है।

नारियों की इस प्रकार की प्रगति को महेनजर रखते हुए आज का पढ़ा-लिखा युवक विवाह से पूर्व ऐसी ही नारियों की चाह कर रहा है जो चूत्हाचौकी तक ही सीमित नहीं हो बल्कि कदम-कदम पर बिछे संघर्ष की जालों को काटने में उनकी वास्तविक रूप से अर्थांगनी की भूमिका निभा सके। इसी प्रकार महिलाएं भी वे नहीं रहीं कि परिवारजनों ने जिस पुरुष को उसके साथ बांध दिया तो उन्होंने गर्दन झुकाकर 'हामी' भर दी। आज नारियां अपने जीवन में कैरियर के मामले में ही नहीं बल्कि अपने जीवन में साथी के चयन में स्वयं के निर्णय को ही सर्वोपरि मानती है और वे नापसंद वाले पुरुष के लिए सभी के सम्मुख साफ मना करने में भी नहीं हिचकती, झिझकती, न ही जबरन से हां कहती है।

प्रगति के पथ पर बढ़ रहे हमारे भारत देश की नारियों ने सानिया मिर्जा, कृष्णा पुनिया, पी. टी. उषा आदि जैसी बालाओं को जन्म देकर उन्हें तैयार किया है, जिसने किसी की परवाह न करते हुए अपने संकल्प को जारी रखा है। इसी प्रकार चिकित्सा जगत हो या अभियांत्रिकी क्षेत्र हो हमें जहां-तहां नारियों की प्रगति को देखकर गर्व होता है क्योंकि आज महिलाएं छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कार्य करने में सक्षम हैं। सक्षम तो वे पहले से ही थी लेकिन उन्हें स्वतंत्रता नहीं थी, प्रशिक्षण नहीं दिया जाता था और उन्हें रसोई में कैद कर रख दिया जाता था। लेकिन अब नारियों को अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हो गया है और वे इसके लिए आगे आई हैं, आ रही हैं और आती रहेंगी हमारे देश का नाम रोशन करने के लिए।

-413, आदर्श नगर, गीता भवन के पास
जयपुर-302004 (राजस्थान)



तो कामयाबी आपकी है

● किशन धीरज ●

अथर्ववेद में लिखा है, 'सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो अपनी शक्तियों को पहचानो। जीवन में अनेक विघ्न-बाधाएं हैं, इनसे संघर्ष करने के लिए आत्मविश्वास होना चाहिए।'

आगे स्वेट मार्डेन ने कहा है, 'जिस व्यक्ति में सफलता के लिए आशा और आत्मविश्वास है, वही व्यक्ति जीवन की सभी कठिनाइयों को झेलते, हंसते-हंसते जीवन के उच्च

शिखर पर पहुंच जाते हैं।'

जीवन एक गोल कमरे की भाँति है। जिसमें अंधेरा है व बाहर निकलने के लिए एक दरवाजा भी है, जो दिखाई नहीं देता।

ऐसे में उस अंधेरे कमरे से बाहर निकलने हेतु हम युक्ति निकालेंगे कि कमरे की गोल दीवार के सहारे हाथ लगाते-लगाते आगे बढ़े तो दरवाजा अवश्य आ जाएगा।

जिसे भी कमरे से बाहर निकलना है उसे किसी भी परिस्थिति में आगे बढ़ते हुए दीवार से हाथ को नहीं हटने देना है, उसे दृढ़-निश्चय और आत्म-विश्वास के साथ आगे चलते रहना है।

किन्तु, अकसर होता यह है कि जैसे ही दरवाजा आने को होता है हमें अचानक कई छोंक, खांसी आ जाती है या खुजली हो जाती है, जिसके कारण हाथ दीवार से छूट जाता है और इसी बीच दरवाजा आता है और वापस पीछे छूट जाता है। चलने वाले को पुनः एक से गिनना पड़ता है।

यदि आप अपने पूरे साहस और धैर्य के साथ आगे बढ़ते हुए व मार्ग में आने वाली हर स्वाभाविक-अस्वाभाविक मुश्किल का सामना, बिना दीवार से हाथ छूटे, करते चलेंगे तो एक दिन दरवाजा अवश्य हाथ आएगा।

आप अंधकार की कैद से मुक्त हो जायेंगे और बाहर के प्रकाश में अपनी इच्छित कामयाबी का वरण कर सकेंगे।

-सूरजपोल बाहर, कांकरोली-313324



कन्हैया ने गोकुल में नंद यशोदा के लाल बनकर मक्खन चुराया, पूतना व कंस का वध किया और इंद्र का अहंकार तोड़ा। उनकी सभी लीलाएं हमें कोई न कोई संदेश देती हैं। वह संदेश हम ग्रहण करें तो हमारा जीवन सरल हो जाए।



कृष्णलीला के गूढ़ रहस्य

● रमेश भाई ओझा ●

श्री कृष्ण का जीवन लीलाओं से भरा पड़ा है। उनकी इन अलौकिक लीलाओं के पीछे जीवन का कोई न कोई रहस्य छिपा हुआ है। उनका जन्म जेल में हुआ। गोकुल में नंद यशोदा के लाल बनकर मक्खन चुराया, पूतना व कंस का वध किया और इंद्र का अहंकार तोड़ा। उनकी सभी लीलाएं हमें कोई न कोई संदेश देती हैं। वह संदेश हम ग्रहण करें तो हमारा जीवन सरल हो जाए।

इंद्र के अहंकार को खत्म करने के लिए कन्हैया ने गोवर्धन पर्वत को धारण किया। गोवर्धन पर्वत उठाने की उनकी इस लीला का क्या रहस्य है? वैसे तो लीला के मुताबिक उन्होंने गोकुल के निवासियों की रक्षा के लिए ही गोवर्धन पर्वत को उठाया था। पर उनके इस पराक्रम के पीछे जीवन का एक बड़ा सत्य छिपा हुआ है। ‘गो’ का मतलब होता है इद्रियां और ‘वर्धन’ अर्थात् वृद्धि। गोवर्धन असल में हमारी अपनी देह का प्रतीक है। हमारी देह रूपी गोवर्धन को हर समय श्रीकृष्ण ही धारण करके खड़े हैं। इसका मतलब है सभी की आत्मा में श्रीकृष्ण विराजते हैं।

जब इस देह रूपी गोवर्धन को श्रीकृष्ण धारण करना छोड़ देते हैं तो फिर इसे उठाने के लिए चार लोगों के कंधे की आवश्यकता पड़ती है। जरा सोचकर देखिए, श्रीकृष्ण ही देह रूपी गोवर्धन को 70, 80 या 90 साल तक धारण किये हुए हैं। यानी श्रीकृष्ण के आधार पर ही हम जीवित हैं। श्रीकृष्ण जब इस देह को धारण करना छोड़ देते हैं तो इसके अंदर से दुर्गम्भ आने लगती है। तब यह शरीर, शरीर न रहकर शव बन जाता है। जिस शरीर के रूप और सौंदर्य के दीवाने होकर लोग पीछे दौड़ते थे वह शरीर विकृत हो जाता है। तो फिर जरा सोचिए कि सौंदर्य किस में है? काया में या कि उसे धारण करने वाले में? शरीर से ज्यादा श्रेष्ठ है शरीर को धारण करने वाला।

गोकुलवासियों यानी दुनिया को श्रीकृष्ण ने एक और क्रांतिकारी सूत्र

दिया। उन्होंने कहा कि देह की पूजा करो। श्रीकृष्ण के इस कथन को ध्यान से समझना जरूरी है। वह गोवर्धन रूपी देह की पूजा करने को कह रहे हैं। आत्मचिंतन करो और श्रीकृष्ण की बात का अर्थ समझो। वह अगर देह की पूजा का आह्वान कर रहे हैं, तो इसका अर्थ यह है कि साधन को साधन की तरह जितना संभालना आवश्यक है, बस उसकी उतनी ही देखभाल करो। जिस तरह से हाथी सरोवर में जाकर अपनी सूंड से कमल के फूल को खेल-खेल में उठा लेता है वैसी ही सहजता से कन्हैया ने गोवर्धन पर्वत को सहजता से उठा लिया था। तुम ट्रेन से स्टेशन पर उतरकर 20 किलो वजन उठाकर अपने घर तक पैदल चलकर देख लेना, तुम्हारी कैसी हालत होती है? लेकिन तुम्हारे शरीर में जो चैतन्य श्रीकृष्ण बैठा है वह तुम्हारा शरीर रूपी वजन जाने कब से उठाए चल रहा है। वह फिर भी नहीं थकता है।

इसलिए देह की पूजा श्रीकृष्ण की तरह करनी चाहिए। गोकुल में जब चारों ओर श्रीकृष्ण के पराक्रम की चर्चा होने लगी तो नंद और यशोदा से सब पूछने लगे कि सच कहना—यह छोरा किसका है? नंद बाबा कहते कि यह हमारा है। तो लोगों ने कहा कि तुम गोरे हो, यशोदा गोरी है तो कन्हैया काला क्यों है? तब नंदा ने कहा, नामकरण के लिए आए ज्योतिषाचार्य ने कहा था कि नंद बाबा, तुम्हारे इस बालक ने प्रत्येक युग में अवतरण लिया है और प्रत्येक युग में वर्ण अलग-अलग होता है। जैसे सत्युग में शुक्ल वर्ण और त्रेता में रक्तवर्ण। इस युग में ‘श्रीकृष्ण’ होकर यानी काले रंग के होकर अवतरित हुए हैं।

और काला रंग किस तरह से बनता है? जब लाल, नीला और पीला इकट्ठा होते हैं तब काला रंग बनता है। श्रीकृष्ण यानी, मिक्सर औफ ऑल कलर्स। श्रीकृष्ण में सब रंग हैं। इसीलिए उनके जैसा रागी कोई नहीं और उनके जैसा विरागी कोई नहीं। ■

● पद्धति ●

मंजुला जैन

रंग चिकित्सा है सुरक्षित उपचार प्रक्रिया



प्रा चीनतम चिकित्सा पद्धति है—रंग चिकित्सा। इसका इस्तेमाल करने से जहां बीमारी पर सहज ही नियंत्रण पाया जा सकता है, वहीं इसका कोई भी विपरीत प्रभाव नहीं होता। जैसे जैसे बीमारियां बढ़ रही हैं, वैसे वैसे यह लुतप्राय चिकित्सा पद्धति पुनः प्रचलन में आ रही है। रंग चिकित्सा विधि में एक खास प्रकार की सुरक्षित चिकित्सा पद्धति है।

रंग चिकित्सा विज्ञान मानता है कि किसी खास रंग की कमी से ही खास तरह के रोग पैदा होते हैं और शरीर में इन रंगों की पूर्ति से वे रोग दूर होते हैं। यदि शरीर में उस रंग को प्रवाहित कर दिया जाए तो रोग दूर हो जाते हैं।

यदि कांच के प्रिज्म में सूर्य की किरणों को देखें तो उसकी श्वेत किरणों में छिपे सात रंग स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। ये रंग हैं—बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल। 'क्रोमोपैथी' या रंग चिकित्सा विज्ञान में इन्हीं सात रंगों को लिया गया है। आइए देखें कि इन रंगों के गुण क्या बताए जाते हैं—

बैंगनी: यह रंग खून की कमी के उपचार में ज्यादा लाभकारी है। इससे निद्रा अच्छी आती है। यह फेफड़ों

को शक्ति प्रदान करता है तथा लाल रक्तकणों की बृद्धि करता है।

नीला: यह सभी रंगों में श्रेष्ठ माना गया है। समस्त पृथ्वी पर फैले हुए आकाश का रंग हल्का नीला, आसमानी है। इस हल्के नीले रंग से ही हमें जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। यह रंग ठंडक तथा शक्ति देने वाला है। जब शरीर का कोई भाग या पूरा शरीर गर्म हो, उस समय इसका उपयोग करना चाहिए। गहरा नीला रंग ज्वरनाशक, स्नायु को शक्ति प्रदान करने वाला तथा चीजों को सड़ने से रोकता है। यह महिलाओं के जनन तंत्र, आमाशय एवं प्रदर रोगों में उपयोगी है।

हरा: इस रंग से त्वचा-रोगों का नाश होता है। हाथ-पाँव में दरारें पड़ना, खुजली, दाद, फोड़ा, रक्त पित, महिलाओं में रक्त प्रदर, घाव, बवासीर, शरीर में सड़ने व बहने वाले कोई भी घाव आदि की चिकित्सा के लिए हरा रंग बेहद उपयोगी है।

पीला: पीले रंग से पेट की गड़बड़ी, पेट फूलना, पेट में दर्द, कब्ज, कृमि रोग आदि ठीक होते हैं। इसके अलावा यह रंग लीवर, हृदय, फफड़े, स्लीन आदि रोगों के लिए भी लाभदायक है।

नारंगी: यह लाल रंग की अपेक्षा हल्का



रंग चिकित्सा विज्ञान मानता है कि किसी खास रंग की कमी से ही खास तरह के रोग पैदा होते हैं और शरीर में इन रंगों की पूर्ति से वे रोग दूर होते हैं।

इच्छा शक्ति बढ़ती है। बुद्धि और साहस का विकास होता है तथा कफजनित रोगों में यह रंग बेहद लाभदायक है। स्नायु रोग, क्षय रोग, पेट के रोग, हृदय रोग, गठिया, पक्षाघात आदि रोगों में यह बेहद गुणकारी है। रक्त अल्पता की स्थिति में यह शरीर के लाल रक्तकणों को बढ़ाता है। महिलाओं में मासिक संबंधी दिक्कतों को ठीक करता है।

व शीतल होता है।

लाल: इस रंग के सेवन से नसों की अकड़न, नसों की दुर्बलता, उनमें गाँठ पड़ जाना आदि विकार ठीक हो जाते हैं। यह रंग गरमी बढ़ाने वाला है।

शरीर के निर्जीव भाव को चैतन्य शक्ति देने की इस रंग में अद्भुत क्षमता है। सर्दी के मौसम में शरीर पर आई सूजन आदि इससे ठीक हो जाती है। यह रंग शरीर की शिथिलता को दूर करता है। व्यापक रूप से इन सात रंगों की अपनी विशेषता है लेकिन इन रंगों के गुणों की साम्यता के आधार पर इन्हें तीन समूहों में बांटा जा सकता है।

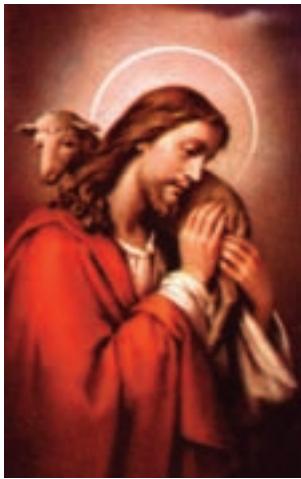
लाल, पीला तथा नारंगी रंगों का समूह गर्म, विस्तारक एवं उत्तेजक होता है। इसका प्रभाव क्षारीय होता है। नारंगी रंग में लाल और पीला रंग मिश्रित होने के कारण यह ज्यादा प्रभावशाली होता है। नारंगी रंग मुख्यतः पेट, यकृत, स्लीन, गुरदे तथा आँतों को प्रभावित करता है। यह शरीर में रक्त संचार को तेज करता है। मांसपेशियों को स्वस्थ बनाकर उसकी सिकुड़न को मिटाता है।

लाल, पीला तथा नारंगी रंग का प्रभाव मानव मस्तिष्क पर भी व्यापक है। इससे मानसिक शक्ति और इच्छा शक्ति बढ़ती है। बुद्धि और साहस का विकास होता है तथा कफजनित रोगों में यह रंग बेहद लाभदायक है। स्नायु रोग, क्षय रोग, पेट के रोग, हृदय रोग, गठिया, पक्षाघात आदि रोगों में यह बेहद गुणकारी है। रक्त अल्पता की स्थिति में यह शरीर के लाल रक्तकणों को बढ़ाता है। महिलाओं में मासिक संबंधी दिक्कतों को ठीक करता है।

हरा रंग, उदासीन, संतुलक तथा शोधक माना जाता है। यह रंग पीले और नीले का मिश्रण होने के कारण ज्यादा गुणकारी है। यह प्रकृति का रंग है अतः यह शरीर और मन को प्रसन्न रखता है। यह शरीर में रासायनिक द्रव्यों की न्यूनता व अधिकता को संतुलित करता है। शरीर की मासपेशियों का निर्माण, उन्हें शक्तिशाली बनाना तथा नाड़ी तंत्र व मस्तिष्क को बल प्रदान करना इस रंग की विशेषता है। यह रंग रक्तशोधक है तथा शरीर में एकत्र बाह्य द्रव्यों को बाहर निकाल देता है। रंग चिकित्सा पद्धति को प्रभावी ढंग से उपयोग में लेने के लिये एवं तत्काल उससे प्रभावित होने के लिये जरूरी है कि आप रंग चिकित्सा के विशेषज्ञ व्यक्ति से परामर्श लें। ■



डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम



कहानी क्रिसमस वृक्ष की

प्रतिवर्ष दिसम्बर माह के पूर्व से ही सकल दृष्टि से खुशी तथा सोल्लास का बातावरण बनने लगता है। क्योंकि यह महीना प्रभु यीशु (ईसा मसीह) के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। वर्तमान से करीब दो हजार वर्ष पहले

25 दिसम्बर को यीशु का जन्म यहूदी साम्राज्य के शासनकाल में इजरायल देश के बेथलहम नामक गांव की एक गौशाला में हुआ था। 25 दिसम्बर को 'बड़ा दिन' या 'क्रिसमस' दिवस भी कहते हैं।

क्रिसमस पर्व में सबसे खास महत्व है क्रिसमस वृक्ष का। क्रिसमस के मौके पर सदाहरित, सदाबहार होने का पक्ष है। यह दृश्य क्रिसमस पर्व से भी ज्यादा पुरातन है। इतना पुराना कि कदाचित उस काल से ही शुरू हुआ हों, जब व्यक्ति ने सबसे पहले सत्य की खोज में टटोलना शुरू किया। उस सुदूर काल में यूरोप का अधिकतर हिस्सा गहरे, घने जंगलों से ढका था। पुरातनकालीन ट्यूटोंस, जो आधुनिक जर्मन व्यक्तियों के पूर्वज थे। ये सब फैले विशाल जंगल वृक्ष-समूह देवी-देवताओं को समर्पित होते थे तथा विशेषतया ये वृक्ष अधिक पवित्र माने जाते थे। बसंत ऋतु में जो वृक्ष पैदा होते हैं उन्हें तो और भी ज्यादा पवित्र माना जाता है। इन वृक्षों के नीचे उपासना की जाती तथा देवी-देवताओं की उपासना स्वरूप इन पर दीप जलाकर लटकाये जाते। क्रिसमस-वृक्ष का उद्भव भी इस आकर्षण से जुड़ी अनुभव से होती है।

क्रिसमस दिवस के साथ क्रिसमस वृक्ष को सजाने की बात कैसे जुड़ी, उसके लिए तमाम किंवदंतियां हैं। एक किंवदंती के मुताबिक जब प्रभु ईसा मसीह का उद्भव हुआ, तब उनके दर्शनों के लिए आए देवताओं ने अपनी प्रसन्नता के प्रतीक के रूप में सदाबहार फरके वृक्ष को सितारों से सजाया था। एक दूसरी मान्यता के मुताबिक क्रिसमस वृक्ष को सजाने की परिपाठी जर्मनी से शुरू हुई। वहां के एक धर्म प्रचारक बनिफेस ने इस रिवाज को जन्म देने का श्रेय मार्टिन लूथर को देते हैं। उन्होंने क्रिसमस के दिन आकाश में झिलमिलाते सुंदर तारों को देखकर अपने घर पर भी वृक्ष की टहनी को सजाकर वैसा ही सुंदर तथा आकर्षक बनाने का प्रयास किया। इसके बाद उनके परिवार में यह प्रतिवर्ष की रस्म बन गई। एक अन्य मान्यता के अनुसार इसकी शुरुआत अमेरिका (डनपर) में हुई। वहां 1912 में जब एक बालक डेविड जोनाथन बीमार पड़ा तो उसने

अपने पिता से एक वृक्ष को रंगीन बत्तियों से सजाने की अभिलाषा व्यक्त की। बच्चे का पिता डेविड डी. स्टर्जन बिजली का कार्य करता था। इसलिए उसने बड़ी सुगमता से यह कार्य कर दिया। रंग-बिरंगी बत्तियों से सजा यह वृक्ष व्यक्तियों को इतना भाया कि वह कार्य एक परिपाठी के रूप में चल निकला। अमेरिका (सनफ्रासिस्को) के एक अन्य आठ वर्षीय बालक को भी इस रिवाज को प्रारंभ करने का श्रेय दिया जाता है। घटना 1920 की है वह अक्सरात रोगी हो गया, तब क्रिसमस पर उसे खुश करने के लिए उसके पिता सैंडी प्रेटिनो ने क्रिसमस वृक्ष की सजावट की और उसके आसपास भी बिजली के हँडे लटका दिए। इसका बालक पर अच्छा मनोवैज्ञानिक असर पड़ा तथा वह जल्द ही निरोगी हो गया। तब से यहां घर में इसका प्रचलन हो गया।

कहाँ-कहाँ क्रिसमस वृक्ष के ऊपर एक देवता की प्रतिमा लगाने की भी रस्म है। यह रस्म इंग्लैण्ड के राजकुमार एलबर्ट 1841 में शुरू की थी। सबसे पहले उन्होंने क्रिसमस वृक्ष पर एक ऐसे देवताओं की प्रतिमा लगवाई थी, जिसके हाथ ऊपर की ओर उठे हुए थे।

अब यह रिवाज अपने उद्भव स्थल देश जर्मनी से बढ़कर संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जापान आदि तक पहुंच गया। संसार का सबसे बड़ा तथा ऊंचा क्रिसमस ट्री विलिंगटन (उत्तरी करोलीना) के हिल्टन पार्क में प्रतिस्थापित है। इस पेड़ की ऊंचाई 91 फुट और परिमाप 15 फुट है। इसके द्वारा मिलने वाली छाया की परिमाप 110 फुट तक पहुंचती है। क्रिसमस के मौके पर इसमें छह हजार किलोग्राम छोटी मनोहारी घास लगाई जाती है और आठ हजार रंग-बिरंगे बलबों से उसे सजाया जाता है। बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण भी लगाए जाते हैं।

क्रिसमस वृक्ष को सजाने के साथ ही इस पेड़ को लगाने की भी परिपाठी विकसित हुई तथा इसके साथ ही वृक्षारोपण का प्रचार भी हुआ। अमेरिका में सैंडी प्रेटिनो ने तो बाकायदा एक ऐसी संस्था बनाई थी जो लोगों को बौर किसी मूल्य के छोटे-छोटे पौधे देती थी जिन्हें वे अपने घर में या उसके आस-पास लगा सकें। सैंडी प्रेटिनो स्वयं भी बड़ी मात्रा में क्रिसमस सप्ताह में पेड़ लगाया करते थे। कहते हैं कि उन्होंने अपने जीवनकाल में चौदह हजार पेड़ लगाये थे। आज भी अमेरिका में इस अवसर पर लगभग पांच लाख पौधे बिक जाते हैं। इंग्लैण्ड में तो इस तरह की घटनाओं से प्रेरित होकर चैवर लैण्ड में एक बड़ा फॉर्म भी स्थापित किया गया, जहां से हर साल क्रिसमस के आसपास तीन लाख पौधे विक्रय किये जाते हैं।

-जन शिक्षण संस्थान, प्रेमपुर, बड़गांव, कानपुर नगर-208001



किंवदंती के मुताबिक जब प्रभु ईसा मसीह का उद्भव हुआ, तब उनके दर्शनों के लिए आए देवताओं ने अपनी प्रसन्नता के प्रतीक के रूप में सदाबहार फरके वृक्ष को सितारों से सजाया था।

गुणकारी वनोषधि अमलतास

घरों के बाहर बगीचों में, सड़क के किनारे अमलतास के वृक्ष लगाये जाते हैं। इन वृक्षों पर मार्च-अप्रैल में जब पत्तियां टूट कर गिर जाती हैं तो डेढ़-दो इंच आकार के पीले रंग के फूल खिलते हैं, पीले फूल इतने अधिक खिलते हैं कि वृक्ष के देखने पर लगता है कि किसी ने वृक्ष पर पीली छादर डाल दी है।

अमलतास के वृक्ष 25 से 30 फुट ऊंचे आकार के होते हैं। वृक्षों के तने की छाल हल्की लाल और धूसर रंग की होती है। अमलतास की फलियों में 25 से 30 तक बीज होते हैं। फलों के भीतर गुदा काले रंग का होता है। अमलतास के फूल, बीज, छाल और मज्जा आदि औषधि के रूप में विभिन्न रोगों में इस्तेमाल किया जाता है।

आयुर्वेद चिकित्सकों के अनुसार अमलतास मधुर, तिक्त, गुरु, मृदु, स्निग्ध, वीर्य में शीत और विपाक में मधुर होता है। मधुर और स्निग्ध होने के कारण अमलतास वात और शीत होने के कारण पित्त का निवारण करता है। रेचन गुण के कारण अमलतास कब्ज को नष्ट करता है।

अमलतास से पित्त और कफ की विकृति नष्ट होती है। अमलतास आमवात, वात विकार और हृदय को हानि पहुंचाने वाले रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है। अमलतास शीत वीर्य और हल्का विरेचक होने के कारण पित्तज हृदय रोग में बहुत लाभ पहुंचाता है। चिकित्सा ग्रंथों में आयुर्वेदार्थों ने वर्णन किया है कि अमलतास आम और दूषित मल को अतिशीघ्र निष्कासित करके विकृति से बचाता है।

अमलतास को संस्कृत में आरग्वध, स्वर्ण भूषण, कृतमाल, दीर्घफल, सुवर्णक आदि नामों से वर्णन किया जाता है। देश के विभिन्न प्रदेशों में अमलतास को विभिन्न नामों से सम्बोधित करते हैं।

शीत ऋतु में छोटे-बड़े प्रतिशयय अर्थात् जुकाम से बहुत पीड़ित होते हैं। प्रतिशयय की घरेलू चिकित्सा के लिए अमलतास का गूदा, लिसौड़े के दाने, उन्नाव, अंजीर, हंसराज, मुलहठी, गुलबन्फशा, मुनक्का को जल में उबालकर काढ़ा बनाएं। इस काढ़ा को छानकर मिश्री मिलाकर सेवन करने से प्रतिशयय नष्ट होता है।

शीत ऋतु में ज्वर होने पर अमलतास का गुदा और तुलसी के पत्ते बराबर मात्रा में मिलाकर जल में उबालकर काढ़ा बनाएं। इस कवाथ को छानकर पीने से शीत ऋतु का ज्वर नष्ट होता है।

अधिकांश नवयुवक प्रमेह रोग से पीड़ित होते हैं। प्रमेह रोग होने पर अमलतास की जड़, मूर्वा, सहिजन, मोचरस, मुनक्का, नीम के पत्ते और त्रिफला को देर तक जल में उबालकर काढ़ा बनाएं। इस काढ़े को छानकर सेवन करने से प्रमेह का निवारण होता है।



“

**आयुर्वेद चिकित्सकों
के अनुसार अमलतास
मधुर, तिक्त, गुरु, मृदु,
स्निग्ध, वीर्य में शीत
और विपाक में मधुर
होता है। मधुर और
स्निग्ध होने के कारण
अमलतास वात और
शीत होने के कारण
पित्त का निवारण करता है।**

**अमलतास वात और
शीत होने के कारण
पित्त का निवारण
करता है।**

”

मस्तंगी 5-5 ग्राम मात्रा में लेकर सिलपर पीसकर लेप बनाकर हृदय के ऊपर लेप करने से शूल नष्ट होता है।

गुलाब के अर्क में दालचीनी, अगर, बच, रुमी त्रिफल और चित्रक बराबर मात्रा में लेकर कूटकर बारीक चूर्ण बनाकर रखें। दो-दो ग्राम चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से कृमिज हृदय रोग में बहुत लाभ होता है।

वायविडंग और कूठ 10-10 ग्राम मात्रा में लेकर, कूटकर बारीक चूर्ण बनाकर रखें। दो-दो ग्राम चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से कृमिज हृदय रोग में बहुत लाभ होता है।

**-चंद्रप्रिया अपार्टमेंट, ए-३ पॉकेट, फ्लैट नं. 14
रोहिणी, सेक्टर-8, दिल्ली-110085**

अमलतास का गुदा, जल में घोलकर उसमें तीन गुणा खाण्ड डालकर चाशनी बनाएं। इस चाशनी को चाटकर सेवन करने से शुष्क खांसी नष्ट होती है।

अमलतास के काढ़े में शुद्ध धी और सेँधा नमक मिलाकर सेवन करने से अर्श रोग (बवासीर) नष्ट होता है। अर्श रोग में रक्त निकलने की विकृति नष्ट होती है।

अमलतास का गुदा, गिलोय और अडसा बराबर मात्रा में लेकर जल में उबालकर काढ़ा बनाएं। काढ़ा छानकर उसमें एरण्ड का तेल मिलाकर सेवन करने से वातरक्त, गठिया, रोग नष्ट होता है।

अमलतास का गुदा और नमक गौमूत्र के साथ पीसकर पेट पर लेप करने से उदरशूल नष्ट होता है।

हरी मकोय के पत्तों के साथ अमलतास का गुदा पीसकर लेप करने से उरस्तंभ का शूल नष्ट होता है।

बिछू के डंक मारने पर अमलतास की बीजों को सिलपर पीसकर लगाने से डंक मारने की पीड़ा और जलन नष्ट होता है।

शहतूर का शर्वत अनुपान के रूप में सेवन करें- प्रवाल भस्म 8 रस्ती, मोती भस्म 2 रस्ती, आंवले का एक मुरब्बा चांदी का वर्क लगाकर सेवन करने से हृदय की निर्बलता नष्ट होती है।

फालसे 10 ग्राम, कालीमिर्च के 5 दाने, थोड़ा-सा सेँधा नमक मिलाकर 250 ग्राम जल में घोलकर, छानकर सेवन करने से हृदय की निर्बलता नष्ट होती है।

हरड़, रस्ता, कचूर, पोहकर मूल, सॉट, पिप्पली वच सद 10-10 ग्राम मात्रा में लेकर कूट पीसकर चूर्ण बनाकर रखें। प्रतिदिन एक-एक ग्राम चूर्ण शुद्ध धी के साथ सेवन करने से हृदय रोगों का प्रकोप नष्ट होती है।

हृदय शूल होने पर श्वास अवरोध होने पर लहसुन की दो-तीन कलियों का रस चूसने से बहुत लाभ होता है। ऐसे में पेट से वायु निकल जाने पर हृदय पर दबाव कम हो जाता है।

गुलाब के अर्क में दालचीनी, अगर, बच, रुमी त्रिफल और चित्रक बराबर मात्रा में लेकर कूटकर बारीक चूर्ण बनाकर रखें। दो-दो ग्राम चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से कृमिज हृदय रोग में बहुत लाभ होता है।

पिप्पली मूल, त्रिफल और चित्रक बराबर मात्रा में लेकर जल में उबालकर क्वाथ बनाएं। इस क्वाथ को छानकर सुबह-शाम पीने से हृदयशूल से सुरक्षा होती है।

वायविडंग और कूठ 10-10 ग्राम मात्रा में लेकर, कूटकर बारीक चूर्ण बनाकर रखें। दो-दो ग्राम चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से कृमिज हृदय रोग में बहुत लाभ होता है।

दान देने से मिलती है समस्याओं से मुक्ति

मनुष्य के जीवन को बेहतर तरीके से चलाने के लिए ऋषियों ने तमाम तरह की व्यवस्थाएं दी हैं, ताकि व्यक्ति सुख से जी सके। धर्म के मार्ग पर चलना तथा धर्म का पालन करना भी ऐसी ही एक व्यवस्था है। धर्म के पालन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है—दान। दुनिया के सभी धर्मों में दान को महत्व दिया गया है और इसके लिए नियम बनाए गए हैं। दान करने से न केवल धर्म का ठीक-ठीक पालन होता है, बल्कि व्यक्ति जीवन की तमाम समस्याओं से भी मुक्ति पा जाता है। मामला चाहे स्वास्थ्य का हो, आयु रक्षा का या बेहतर रोजगार का, दान करने से इन समस्याओं से निजात मिलती है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की पीड़ा और कष्टकारक समय से मुक्ति पाने के लिए भी विशेष वस्तुओं का विशेष दिन दान किया जाता है।

दान कई प्रकार के होते हैं और विशेष तरीकों से किए जाते हैं जैसे अन्न, वस्त्र, चिकित्सा का दान, भूमि का दान, विद्या का दान, सेवा का दान आदि। दान करना शुभ और कल्याणकारी होता है, परन्तु इसके लिए कुछ बातों का ख्याल जरूर रखना चाहिए—

- दान हमेशा अपनी इच्छा से करना चाहिए। किसी दबाव में किया गया दान कभी शुभ परिणाम नहीं देता।
- दान में जो भी वस्तुएं दी जाएं, वे हमेशा उत्तम श्रेणी की होनी चाहिए या कम से कम वैसी तो हों ही, जैसी आप खुद प्रयोग करते हों। निम्न श्रेणी की वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए।
- दान हमेशा उसी व्यक्ति को करें, जो अपावग्रस्त हो और पात्र हो। कुपात्र और संपन्न व्यक्ति को दान करना फलदायी नहीं होता।
- आगर दान ब्राह्मण को करना हो तो ध्यान रखें कि ब्राह्मण सात्त्विक, सदाचारी तथा भगवान का भक्त हो। कुसंस्कारी ब्राह्मण को दान देना निष्फल होता है।



● अगर आपको ग्रहों के लिए दान करना है तो उसी ग्रह का दान करें, जो कष्टकारक हो। अनुकूल ग्रहों के लिए दान करना आपको संकट में डाल सकता है।

● बाहरी व्यक्ति को दान देने के पूर्व विचार कर लें कि कहीं आपके परिवार में कोई अभाव में तो नहीं है। पहले अपने ऊपर आश्रित की व्यवस्था करें, तब दान करें। विशेष आवश्यकताओं के लिए दान करें—

● स्वास्थ्य और आयु की समस्या के लिए : अन्न और जल का दान करें।

● रोजगार की प्राप्ति के लिए : प्रकाश का दान करें (तुलसी के नीचे

या मंदिर में दीपक जलाएं)।

- शीघ्र विवाह के लिए : सुहाग की वस्तुओं का दान करें।
- मुकदमे में विजय के लिए : मीठी वस्तु (मिठाई) का दान करें।
- संतान प्राप्ति के लिए : वृक्ष लगाएं और नियमित जल दान करें (जल डालें)।
- दुर्घटना से रक्षा के लिए : काले तिल का दान करें।

ग्रहों के दान

- सूर्य : लाल वस्त्र, गुड़, माणिक्य, गेहूं
- चंद्र : धो, श्वेत वस्त्र, दही, शंख, जल, दूध
- मंगल : नारंगी वस्त्र, मसूर की दाल, तांबा
- बुध : कांसा, हरी सज्जियां, सुर्गाधित वस्तु, चूड़ियां
- वृहस्पति : शहद, सोना, हल्दी, केला
- शुक्र : सुदर वस्त्र, चावल, हीरा, शृंगार सामग्री
- शनि : काला वस्त्र, लोहा, जटा नारियल, काला तिल
- राहु : कम्बल, सात अनाज, चंदन
- कुतु : बकरी, ऊनी वस्त्र, छाता, जूता।

उपयोगी टोटके

- आप किसी अज्ञात भय से दुःखी रहते हैं, तो शुक्ल पक्ष के मंगलवार से रोजाना हनुमान मंदिर जाना शुरू करें और पूरे विश्वास के साथ हनुमानजी की भूतूत लगाएं। इस तरह से चालीस दिन तक करें। अज्ञात भय का नामोनिशान तक नहीं रहेगा।
- आपको किसी भी तरह की खून की बीमारी है। दवा काम नहीं कर रही है, तो सिंदूर को अपने ऊपर से उसारकर बहते हुए जल में बहाएं। इससे नियमित प्रयोग से बीमारी में लाभ मिलता है।
- अपने घर के मुख द्वारा पर पांच या सात गुंजा नए लाल कपड़े में बांधकर लटकाएं। कोई आपके घर के सामने योना-टोटका करेगा तो लगेगा नहीं।
- आप धन-एश्वर्य के स्वामी बनना चाहते हैं और आपकी राशि कर्क है, तो आप अपने घर में लाल फूल देने वाली बेलें लगाएं। घर के मुख्य द्वार पर ही ये बेलें होनी चाहिए।

● आप धनाभाव की वजह से परेशान हैं, तो मछली और पक्षियों को चावल और ज्वार का दाना खिलाइ। इससे धनाभाव के संकटों से मुक्त हो जायेंगे।

● आपके जीवन में बार-बार परेशानी और अड़चनें आ रही हों, तो मंगलवार के दिन हनुमानजी के मंदिर में जाकर गुड़ और चने का प्रसाद चढ़ाएं तथा प्रसाद को मंदिर में ही बांट दीजिए।

● कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें दूसरों की नजर जल्दी लग जाती है। ऐसे लोगों को गुंजा की माला या गुंजा का ब्रासलेट धारण करना चाहिए। इससे उन पर नजर नहीं लगती है।

● आपको किसी व्यक्ति से गहरी मित्रता है और चाहते हैं कि आपकी मित्रता को कोई नजर न लगे, तो आप दोनों को ही एक-दूसरे के जन्म दिन पर स्फटिक से बनी वस्तुएं भेट स्वरूप देनी चाहिए।

—निकेश जैन, मुंबई

पांचों वक्त के नमाजी कादरी जैन धर्म के मुरीद

राजस्थान के बीकानेर निवासी सेवानिवृत्त रेल चिकित्सा कर्मी मुजफ्फर अहमद कादरी की जैन धर्म में प्रगाढ़ आस्था है। वह सभी मकर संक्रांति पर्वों में भाग तो लेते ही हैं, कई अठाई व्रत भी कर चुके हैं। सूर्यास्त के बाद वह पानी तक नहीं पीते हैं।

पंजाब से निकली जैन धर्म की सम्मेदशिखर तीर्थ छःरी पालक यात्रा में शामिल बीकानेर के एम. ए. कादरी धार्मिक एकता व सम्प्रदायिक सौहार्द की मिशनाल है। वह उन राजनेताओं के लिए एक तमाचा भी है जो कुर्सी के लिए धर्म के नाम पर समाज को तोड़ने का काम करते हैं। सभी रोजे रखने वाले कादरी पांचों वक्त के नमाजी हैं। दशक पूर्व की एक घटना ने उनके जीवन की दशा व दिशा ही बदल दी। जब वह जैन धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय श्री आत्मा वल्लभ समुद्र इन्द्र की पाट-परम्परा के परमार क्षत्रियोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रिनन्दन सूरजी को उनकी अस्वस्थता की स्थिति में इंजेक्शन लगाने गए।

वह बताते हैं कि संत श्रेष्ठ ने उनको अध्यात्म का ऐसा इंजेक्शन लगाया कि उनका जीवन ही संभल गया। रेलवे में फार्मासिस्ट पद से सेवानिवृत्त कादरी बताते हैं कि जैन मुनि का स्पर्श मात्र से वे इतना प्रभावित हो गये कि उन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों के अनुकरण का निश्चय ही नहीं कर लिया बल्कि शिष्य भी बन गए। कादरी बताते हैं कि छह वर्ष पूर्व से वह प्रतिमाह होने वाले जैन धर्म के संक्रांति पर्वों में अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं। आठ दिन तक मात्र पानी पीकर मौन साधना करने वाले अटठाई व्रत भी कर चुके हैं। प्राणिमात्र की सेवा को सबसे बड़ा धर्म मानने वाले कादरी बताते हैं कि जबसे वह गुरु इन्द्र के संपर्क में आये उन्होंने निःशुल्क चिकित्सा सेवा का व्रत ले लिया। प्रतिदिन 15 किलोमीटर



साइकिल चलाकर पीड़ित क्षेत्रवासियों की सेवा करना उनकी दिनचर्या है।

क्या मुस्लिम समाज ने विरोध नहीं किया इस प्रश्न पर वे बोले अगर नियत व नीति सही है तो किसी में जुर्त नहीं कि विरोध कर सको। जैन धर्म को आत्मसात करने पर तो उन्हें समाज में विशेष सम्मान की नजर से देखा जाने लगा। कादरी का कहना है कि वह जन्म से मुस्लिम लेकिन कर्म से जैन है।

-वासु क्रिएशन, बी-4/1626
रायबहादुर रोड, लुधियाना



यह कैसी सामाजिकता है ?

■■■ डॉ. मनोहर भंडारी

मनुष्ठ एक सामाजिक प्राणी है इसलिए वो समाज में रहता है और सामाजिक रिश्तों का खुशी से निर्वहन करता है। समाज में रहने की मजबूरी सिर्फ भौतिक जरूरतों की पूर्ति से नहीं जुड़ी है, बल्कि ये भावनात्मक और मानसिक जरूरत ज्यादा होती जा रही है, लेकिन तेजी से बदलते दौर में इन दिनों इंसान सिर्फ खुशियों या गम के मौकों पर ही अपने परिचितों के यहां जाता है, वह भी इस शाश्वत वाक्य के साथ कि जाना ही पड़ेगा। यदि नहीं गए तो अच्छा नहीं लगेगा। ऐसा नहीं है कि 'यह अच्छा नहीं लगेगा' वाक्य स्वयं के लिए होता है। बल्कि समाज के लोगों के बीच यह चर्चा चल पड़ेगी कि 'देखो, ऐसे मौके पर भी नहीं आया।' इसलिए उसे सब काम छोड़कर अपने मित्र या परिजन के यहां विवशता से जाना पड़ता है। यदि स्वयं के मन में या अंतःकरण को 'अच्छा नहीं लगता' तो बात सामाजिकता की होती, परन्तु समय की तथाकथित कमी की आड़ में हम अपनों से और अपनेपन से दूर होते जा रहे हैं।

अमेरिका जैसे विकसित देश में सामाजिकता का स्थान औपचारिकता ने ले लिया है। वहां व्यक्ति बीमार होकर अस्पताल में भर्ती होता है तो सैकड़ों एसएमएस, कार्ड, गुलदस्ते और शीघ्र स्वस्थ होने के टेलिफोनिक संदेश उसे जरूर मिल जाते हैं, परन्तु वाकई में उसकी तीमारदारी के लिए कोई भी निकट का मित्र या रिश्तेदार अधिकांश मामलों में नहीं होता है। असल में बीमार को तो

शुभकामनाओं के साथ ही मानसिक संबल की जरूरत होती है, जो कार्ड, गुलदस्ते और शुभकामना एसएमएस से नहीं मिल पाता है। पाश्चात्य शिक्षा के 'जैसे भी हो धन कमाओ' सिद्धांत ने भारत को भी जकड़ लिया है। परिणामस्वरूप हम दुकान या कामकाज छोड़कर हमारे अपने रिश्तेदार के सुख-दुख में शामिल होने को बहुत बड़ा बोझ मानने लगे हैं।

सामाजिकता क्यों ज़रूरी है?

- वैज्ञानिकों की स्पष्ट मान्यता है कि सम्यक मानवीय विकास के लिए जरूरी है, सामाजिकता।
- बच्चों के संपूर्ण मनोशारीरिक और भावनात्मक विकास के लिए स्नेह, प्रेम और लगाव अनिवार्य है, जो सामाजिकता से ही प्राप्त हो सकते हैं।
- जो बच्चे प्रेम और लगाव के अभाव में पलते हैं, वे कमज़ोर, एकाकी, अव्यवस्थित और परेशान रहते हैं।
- वैज्ञानिकों ने माना है कि सामाजिकता के कारण तंत्रिका तंत्र और ग्रन्थि तंत्र के स्तर पर क्रियात्मक और रचनात्मक परिवर्तन हैं जो सामाजिकता से विचित लोगों में नहीं होते हैं।
- सामाजिक लोगों की पाचन क्रिया सम्यक रूप से काम करती है और शरीर में निर्माण की क्रिया संतुलित रहती है, जबकि सामाजिकता से विचित लोगों में शरीर में सचित शक्ति का क्षय बढ़ जाता है।



पिछले लगभग 450 वर्षों से रामचरित मानस पर सैकड़ों पुस्तकें छप गई हैं, हजारों लेख लिखे गये हैं और लाखों प्रवचन हो गये हैं, लेकिन रामचरित मानस के अर्थ अभी तक रीते नहीं हुए हैं और न कभी होंगे। रामचरित मानस को हम जितनी बार भी पढ़ते हैं उसमें उतने ही नये-नये अर्थ ध्वनित होते हैं और नये-नये भाव प्रकट हो जाते हैं।

● धर्मशास्त्र ●

● ओमप्रकाश पोद्दार ●

मानस में समन्वय की भावदृष्टि

वर्णनाम् अर्थसंघानाम् रसानाम् छन्दसामापि
मंगलानाम् च कर्तरौ वन्दे वाणी विनायकौ।

रामचरित मानस का यह प्रथम श्लोक ही हमें बता रहा है कि इस नींव पर कितनी भव्य इमारत खड़ी होने वाली है। तुलसीदासजी मानते थे कि प्रथम तो शब्दों में अर्थ होते नहीं है, शब्दों में अर्थ भरे जाते हैं और समय के फेर से शब्द अपना अर्थ खो बैठते हैं और दूसरे, शब्दों से सारे अर्थ प्रकट होते भी नहीं हैं। कभी-कभी निशब्द (मौन) हो जाने पर बहुत सारे अर्थ प्रकट हो जाते हैं जैसाकि मानस में जगह-जगह हुआ है। अतः शब्दों की उनको परवाह नहीं थी। शब्द तो उन्होंने साधारण बोलचाल की भाषा में से ले लिए ताकि सब समझ सकें। इसलिए उन्होंने वर्णों (अक्षरों) से सीधे अर्थों के समूह के समूह (अर्थसंघानाम्) और उनसे रसों की निष्पत्ति (रसानाम्) एवं नाना प्रकार के गेय छन्दों को भी (छन्दसामापि)

इसी हेतु माता सरस्वती और गणेशजी से मांग लिये ताकि सब प्रकार से सब का भला ही भला (मंगलानाम्) हो सकें। प्रथम पूज्य गणेशजी का नाम पहले इसलिए नहीं लिया कि 'वर्णनाम्' में वाणी और विनायक दोनों ही नाम समाहित हैं इसलिए क्रम को भग नहीं करते हुए पहले वाणी, फिर विनायक नाम का उच्चारण किया। मेरी अल्पमति से उनकी इसी विवेकपूर्ण दृष्टि और विज्ञापूर्ण विनय से गणेशजी और माता सरस्वती दोनों ही प्रसन्न हो गये और मुंह मांग वरदान दे डाला। यही कारण है कि पिछले लगभग 450 वर्षों से रामचरित मानस पर सैकड़ों पुस्तकें छप गई हैं, हजारों लेख लिखे गये हैं और लाखों प्रवचन हो गये हैं, लेकिन रामचरित मानस के अर्थ अभी तक रीते नहीं हुए हैं और न कभी होंगे। रामचरित मानस को हम जितनी बार भी पढ़ते हैं उसमें उतने ही नये-नये अर्थ ध्वनित होते हैं और नये-नये भाव प्रकट हो जाते हैं।

पशु-पक्षियों की भाषा हम नहीं समझते। लेकिन भवव्यन्जना के इस अद्भुत कलाकार ने पशु-पक्षियों और प्रकृति का सहारा लेकर भावों का इतना सुंदर महल खड़ा कर दिया है जिसे देखकर दातों तले अंगुली दबानी पड़ती हैं।

पूरे मानस को रूपक ही 'मानसरोवर' का दिया है, जिसके जल में अद्भुत गुण हैं-

"अद्भुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनोमल हारी।"

छहों ऋतुओं के माध्यम से राम कथा का सुंदर वर्णन किया है। पुष्प वाटिका के प्रसान में सीताजी के शील और संकोच का बड़ा सुंदर वर्णन प्रकृति के माध्यम से हुआ है-

"देखन मिस मृग बिहग तरू फिरड़ बहोरि बहोरि,
निरखि निरखि रघुबीर छवि बाढ़ प्रीति न थोरि।"

भगवान राम का जब वन जाना सुनिश्चित हो गया तो भगवान ने अपना मन भी तदनुकूल ही बना लिया—

"मुखप्रसन्न चित चौगुन चाऊ, मिटा सोचु जनि राखै राऊ।"

तुलसीदासजी भगवान की मनोदशा का वर्णन करते हैं-

"नवगयन्दु रघुबीर मनु राजु अलान समान।

छूट जानि वनगवनु सुनि उ अनन्दु अधिकान॥"

'नवगयन्दु' यानी हाथी का नवजात शिशु बन गये जो जंजीर खुलते ही वन की ओर भाग जाता है। वन जाने के नाम से भगवान राम ही नहीं, सीता और लक्ष्मण भी वनचर पशुओं जैसा अपना मन बना लेते हैं। राम जब सीताजी को समझाते हैं कि वन जाना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है, वहां बहुत सारे खतरे हैं। भयंकर हिंसक पशु और निशाचर आदि हैं। तुम वन में चलोगी तो लोग मुझे ही दोष देंगे। तब सीताजी बोलती हैं—

"प्रभुसंग को मोहि चितवनिहारा, सिंघवधुहि जिमि ससक सिआरा।"
सिंहवधु यानी शेरनी बन जाती हैं।

माता सुमित्रा से मिलकर सशक्ति हृदय होकर लक्ष्मणजी इस प्रकार भागे मानो हिरण चौकड़ी भरकर वन में भाग गया हो—



“बागुर विषम तोराइ मनहुं भाग मृग बसा।”

अयोध्या के न-नारी तो भगवान के बन जाने से इस प्रकार व्याकुल हो गये कि जैसे मधुमक्खियों का समूह मधु छीन लेने पर होता है-

“तनकुस मन दुखु बदन मलीने। विकल मनहुं माखी मधु छीने।”

दशरथजी कहां तो आकाश में उड़ रहे थे कि राम को राजा बनाऊंगा। अपने पंख जलतकर संपाती की तरह पृथ्वी पर ही नहीं गिर पड़े बल्कि मछली के जीवित रहने के लिए पानी का साथ यानी राम का नित्य दर्शन भी उनसे छिन गया। माजा (फेन) खाकर मछली कैसे जीवित रह सकती है-

“लेत सोच भरि छिनु छाती। जनु जरि पंख परेत संपाती॥

तलफत विषम मोह मन मापा। माजा मनहुं मीन कहुं व्यापा॥”

भगवान के रथ में जुते हुए घोड़ों की दशा देखकर तो निषाद जैसे कठोर हृदय भी रो पड़ते हैं-

“नहिं तून चरहिं न पिअहिं जलु, मोचहिं लोचन बारि।

व्याकुल भए निषाद सब, रघुबर बाजि निहारि॥

चरफराहि मग चलहिं न घोर। बन मृग मनहुं आनि रथ जोरे॥

जो कह रामु लखनु बैदेही। हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही॥”

भरत की दशा तो सबसे कारुणिक है। वे अत्यंत दुख से अपनी माता को ही कह रहे हैं कि-

“पेड़ काटि मैं पालउ सींचा। मीन जिअन निति बारि उलीचा॥”

वन में भगवान से मिलकर, उनसे पादुका और आज्ञारूपी परितोष पाकर जब भरत लौटते हैं तो तुलसीदासजी उनको चातक और हंस की उपमा देने से नहीं चूकते-

“राम पेम भाजन भरतु बडे न एहिं करतूति चातक हंस सराहिअत टेक विधूति।”

अरण्य एवं किञ्चिंधा काण्ड में प्रकृति का सजीव वर्णन इतनी खूबी से किया है कि उसमें प्रेम, विरह, शृंगार, नीति और परमार्थ के तत्व उसी

प्रकार समा गए हैं जैसे फलों में मधुर स्वाद और रस के साथ विटामिन्स भी समाए रहते हैं।

मनुष्य और पशु पक्षियों का परस्पर संबंध कितना अपरिहार्य है इसका रामायण में विशेष रूप से निर्वाह हुआ है। राजसिक सुख और वैभव को त्याग देने वाली सीता को एक मृग लुभा लेता है। सीता को हर के ले जाते हुए रावण पर जटायु आक्रमण कर देता है और प्राण गांव बैठता है। भाई जटायु की बलिदान गाथा सुनकर संपाती मांसाहार त्यागकर वानरों की सहायता करता है। बानरराज सुमीव से मित्रता करके भगवान राम बार और भालुओं की सहायता से युद्ध जीत लेते हैं और हनुमानजी तो भगवान के सदा के लिए सेवक बनकर भगवान के स्तुत्य और समतुल्य ही बन जाते हैं।

पशुपक्षियों और पर्यावरण को रामचरितमानस में इस प्रकार पिरोया गया है कि उनके बिना रामायण पूर्ण हो नहीं सकती है। इसी प्रकार हमारा जीवन भी तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक समस्त जीवजगत और पर्यावरण से हमारी एकात्मकता नहीं हो जाती है, जिसको हम आज बुरी तरह से नष्ट करने में लगे हुए हैं। राजस्थान का गौरव, हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर प्रायः विलुप्त हो रहा है। मन को मुध कर लेने वाली तितिलयों की अनेक प्रजातियों के दर्शन ही दुर्लभ हो गए हैं। आज हमारे लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि मनुष्यता के बिना पशु पक्षियों और पर्यावरण की रक्षा नहीं हो सकती है और पर्यावरण एवं पशु पक्षियों के बिना मनुष्य की रक्षा नहीं हो सकती है। पृथ्वी के सीमित संसाधनों (जल, जंगल, कोयला और पेट्रोल) का असीमित दुरुपयोग करके हम अपने पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियां दोनों पर इतना बड़ा बोझ डाल रहे हैं जिसको शायद दोनों ही सह नहीं पायेंगे क्योंकि अपने अस्तित्व के लिए दोनों ही एक दूसरे पर आश्रित हैं।

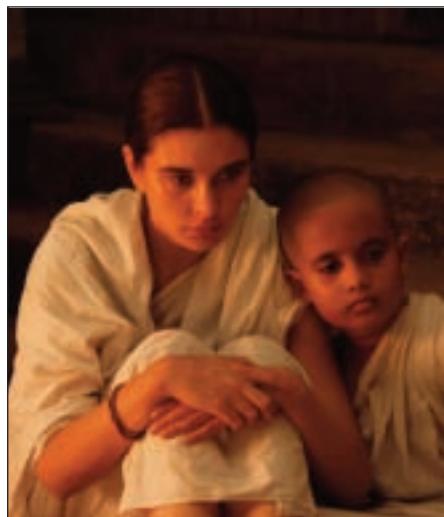
-8, मेपल गार्डन, ए-2/60-63
चित्रकूट योजना, जयपुर-302021

विधुर अशुभ नहीं तो विधवा अशुभ क्यों ?

■■ अनोखीलाल कोठारी

भा रतीय संस्कृति की परम्परानुसार विवाह एक पवित्र बंधन है, जिसमें बंधकर स्त्री और पुरुष अपने घेरे की परिधि में ही समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग कर सकते हैं। यदि दुर्भाग्य से किसी पुरुष की पत्नी की मृत्यु हो जाती है तो उसके एकाकीपन को समाप्त करने के लिए समाज द्वारा सहानुभूतिपूर्वक उसके पुनर्विवाह तैयारी की जाती है। उससे कहा जाता है कि अकेले जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन है। मानवीय आधार पर यह दृष्टिकोण सही है और जरूरी भी है पर दूसरी ओर किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाने पर उसे अशुभ, अभागिन तथा न जाने किन-किन शब्दों से सम्बोधित, परिभाषित किया जाता है?

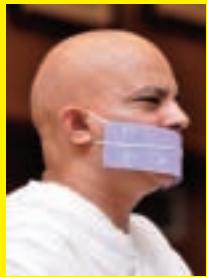
ऐसी स्त्री को विधवा मानकर जन साधारण का उसके प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है। जैसे कोई व्यक्ति यात्रा या किसी अन्य कार्य से घर से बाहर निकल रहा है और उस समय विधवा सामने से आती हुई सर्वप्रथम नजर आ जाए तो उसे अशुभ अथवा अपशगुन माना जाता है तथा जाने वाला व्यक्ति अपना समय बदल देता है। अब यहां यह प्रश्न उठता है कि विधुर अशुभ नहीं तो विधवा अशुभ क्यों? समाज में इस तरह का नियम अथवा पुरुष प्रधान कानून बनाने वाले हम पुरुष ही हैं। बहुत सी शकुन-अपशकुन की बातें हैं औरतों के लिए। वे इसमें ऐसे फंस चुकी हैं कि कई बार तो पुरुष अगर



न भी माने तो भी औरतें मानती हैं, मनवाती हैं। विधवाओं की वेशभूषा और उनके रहन-सहन के तौर तरीकों पर बधन एवं नियंत्रण रखा जाता है, जबकि पत्नी की मृत्यु के पश्चात पुरुष विधुर हो जाता है तो उसके परिधान और उसकी जीवनशैली पर कोई फर्क नहीं पड़ता। वहीं विधवाओं से तो सदा कठोर और संयमित जीवन जीने की अपेक्षा की जाती है। उसके समानान्तर विधुर होने के कुछ दिनों बाद ही पुरुष की दूसरी शादी करने की योजना बनाई जाने लगती है और इसके पुनर्विवाह को क्रियान्वित किया जाने लगता है। यही नहीं विधुर पुरुष हेतु कुंवारी या नववृता युवती ढूँढ़ने की कवायद की जाती है। वस्तुतः जिस प्रकार जन्म का समय विधाता की ओर से नियमित होता है, उसी प्रकार मृत्यु का भी।

पति की दीर्घायु के लिए पत्नी अनेक मंगल कामनाएं, उपवास व करवाचौथ आदि के व्रत करती है। तन-मन-धन से पति को स्वयं समर्पित रहती है। पति की आयी मृत्यु से तो वह नहीं लड़ सकती है तो फिर विधवा होना पत्नी के लिए सामान्य घटना क्यों नहीं समझा जाता? कदाचित जीवन-साथी के असमय साथ छोड़ जाने के पीछे सृष्टि का बना बनाया नियम लागू होता है कि जिस व्यक्ति ने जन्म लिया है तो उसकी मृत्यु भी होना निश्चित है।

-54, महावीर मार्ग, (छोकर आयड) उदयपुर-313001(राजस्थान)



कैसे हो चेतना की शुद्धि

जै

न वाड़मय के अनुसार राशि दो प्रकार की होती है—जीव राशि और अजीव राशि। चेतन और जड़—इन दो तत्वों के सिवाय हमारी दुनिया में कुछ भी नहीं है। आदमी का जीवन भी इन्हीं दो तत्वों से बना हुआ है। एक तत्व है चेतना और दूसरा तत्व है शरीर। जीवन वही होता है जिसमें चेतना और शरीर दोनों होते हैं।

सामान्यतया आदमी अपने जीवन में एक तत्व शरीर पर ज्यादा ध्यान देता है। उसके लिए पुरुषार्थी भी करता है। खाना, पीना सोना, धोना मुख्यतया शरीर के लिए होता है। किन्तु दूसरे तत्व को भी गौण नहीं करना चाहिए। शरीर का महत्व है तो चेतना का भी महत्व है। अगर चेतना पर ध्यान न दिया जाए तो वह अस्वस्थ बन जाती है जिससे आदमी का मन और शरीर अस्वस्थ बन जाता है।

एक अहोरात्र में चौबीस घंटे होते हैं। इन 24 घंटों में आदमी का काफी समय शरीर के लिए लग जाता है। वह अपनी चेतना के लिए कितना समय निकाल पाता है, यह एक प्रश्न है? कम से कम घंटा/दो घंटा का समय तो चेतना की स्वस्थता के लिए लगाना ही चाहिए। मैं प्रायः ग्रामीण जनता को इस भाषा में समझाता हूँ कि 24 घंटों की 60 घड़ियां मानी गई हैं। उन 60 घड़ियों में कम से कम दो घड़ी व्यक्ति अपने लिए लगाए। मैं प्रायः इस बात को इस प्रकार कहता हूँ—

58 घड़ी काम की 2 घड़ी राम की।

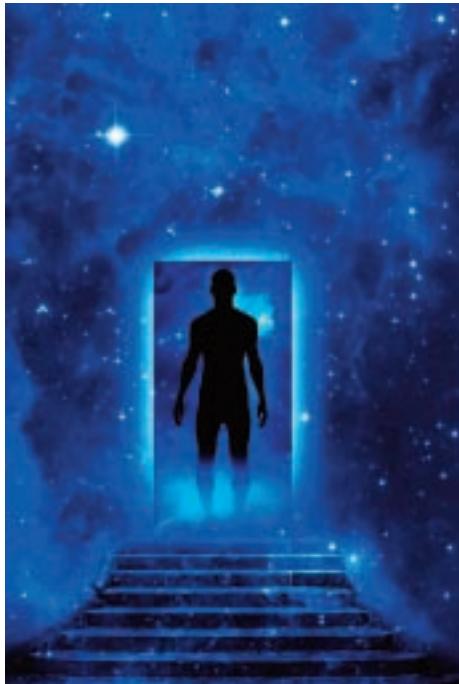
58 घड़ी घर की 2 घड़ी हर की।

58 घड़ी कर्म की 2 घड़ी धर्म की।

58 घड़ी जीव की 2 घड़ी शिव की।

यह बात मात्र ग्रामीण जनता के लिए ही काम की नहीं है अपितु शहरी जनता के लिए भी बहुत काम की है। क्योंकि उनका अधिकतर समय तनाव में ही बीतता है। वह तनाव चेतना के लिए, मन के लिए और तन के लिए भी हानिकारक हो सकता है। इसलिए तनावमुक्त रहने के लिए भी आदमी कुछ समय अपनी चेतना के लिए अर्पित करे। इस भागदौङ की जिंदगी में व्यक्ति कुछ समय अपने लिए भी निकाले और स्वाध्याय, सत्संग आदि में लगाए।

आदमी के जीवन में कार्य तो चलते रहते हैं किन्तु लक्ष्य हो तो कुछ समय स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि के लिए भी निकल सकता है। कभी-कभी अच्छे ग्रन्थों के स्वाध्याय से कोई ऐसी बात मिल जाती है जिससे जीवन की दिशा और दशा बदल जाती है। भले भगवत् गीता का स्वाध्याय करे, उत्तराध्ययन का स्वाध्याय करे, बाईविल या कुरान आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें और उनमें जो अध्यात्म के सूत्र हैं, उन पर मनन करें तो वह स्वाध्याय भी चेतना की शुद्धि में सहायक बन सकता है। कुछ कार्य



“
भारतीय परम्परा में
देवी-देवताओं की पूजा की
जाती है, उसका अपना
मूल्य है। किंतु मैं यदा-कदा
कहा करता हूँ कि
ईमानदारी एक प्रकार की
आध्यात्मिक देवी है, उसकी
पूजा करनी चाहिए। उसकी पूजा फल-फूल आदि से
नहीं होती। वह तो मात्र हमारे जीवन व्यवहार
में विराजमान हो जाए तो अपने आप ईमानदारी
देवी की पूजा हो जाती है। यदि जीवन में ईमानदारी
है, नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा है, भाव सुनुलित है,
आवेश, आवेग नहीं है, खान-पान का संयम है तो
शरीर के लिए भी ठीक है और चेतना के लिए भी
ठीक है।

आदमी समय का अंकन करे। जैसे लोग सोच-सोचकर पैसा खर्च करते हैं, वैसे ही समय भी एक प्रकार का धन है, उसको यों ही खर्च नहीं करना चाहिए। ज्यादा लाभ कहां होगा? यह सोचकर अपने समय का नियोजन करना चाहिए। जो व्यक्ति समय प्रबंधन को सीख लेता है और उपयोगितापूर्ण कार्यों में समय लगाता है, अध्यात्म के लिए समय निकालता है तो चेतना शुद्धि हो सकती है।

हमारी दुनिया द्वन्द्वात्मक है। हमारा जीवन भी द्वन्द्वात्मक है। हम शरीर का भी ध्यान रखें और साथ में चेतना पर भी ध्यान दें। श्रीमद् भगवद्गीता में सुंदर कहा गया—

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य, योगो भवति दुःखहा॥

हमारा आहार-विहार उपयुक्त हो, हमारी हर क्रिया उपयुक्त हो, हमारा सोना-जागना भी उपयुक्त हो। हम शरीर का भी उपयुक्त ध्यान रखें और चेतना का भी उपयुक्त ध्यान रखें तो हमारा जीवन शार्तिमय और मगलमय बन सकता है।

-प्रस्तुति: साध्वी सुमतिप्रभा

धन भी ईश्वर का अंश है, उसका सम्मान करें

वास्तव में सारे दुख अवास्तविक होते हैं और प्रसन्नता वास्तविक, क्योंकि वही आपका मूल स्वभाव है। अप्रसन्नता आपकी स्मरण शक्ति की देन होती है। जब आप सब कुछ को एक सपने की तरह देखने लगते हैं तो आप अपने प्राकृतिक स्वभाव में रहने लगते हैं, जो प्रेम, आनंद और शांति है।

धन स्वामित्व और स्वतंत्रता का भाव देता है। किसी चीज के स्वामित्व का अर्थ है, उसके अस्तित्व पर संपूर्ण नियंत्रण। जब आप कोई जमीन खरीदते हैं, तो सोचते हैं कि आप उसके मालिक हैं, जबकि उस जमीन का अस्तित्व उसके मालिक के मृत्यु के बाद भी रहता है। आप किसी ऐसी चीज के मालिक कैसे हो सकते हैं, जो आप की मृत्यु के बाद भी रहेगी?

धन यह भी कल्पना देता है कि आप शक्तिशाली और स्वतंत्र हैं। और ऐसा सोचते ही आप अंधे हो जाते हैं। यह भूल जाते हैं कि आप पारस्परिक निर्भरता की दुनिया में रहते हैं। सोचते हैं कि आप धन के बल पर किसी के भी मालिक बन सकते हैं और किसी की सेवा के लिए उसका मूल्य लगा सकते हैं।

हम कृषक, चालक और रसोइये और कई अन्य लोगों की सेवा पर निर्भर हैं। एक विशेषज्ञ सर्जन भी किसी की सहायता के बिना कोई ऑपरेशन नहीं कर सकता। वह भी दूसरों पर निर्भर है। सिर्फ कुछ रुपये देकर आप इस सचाई से ध्यान हटा देते हैं कि आप उन पर निर्भर हैं। उनका कृतज्ञ होने के बजाय आप सोचते हैं कि कुछ पैसे देकर आप न ही उन पर उपकार किया है।

अगर आप धनी लोगों के घमंडी होने का कारण देखें तो पायेंगे कि यह धन द्वारा पाई गई स्वतंत्रता का भाव है। दूसरी तरफ निर्भरता की सजगता व्यक्ति को नम्र बना देती है। स्वतंत्रता का झूठा भाव मनुष्य से विनम्रता का उसका मूल गुण छीन लेता है।

संपत्ति को कौशल, योग्यता, विरासत या किसी भ्रष्ट तरीके से भी प्राप्त किया जा सकता है। संपत्ति कमाने के साधन के अनुसार उसके परिणाम मिलते हैं। भ्रष्टाचार का लक्ष्य शांति और सुख है। फिर भी अगर तरीका भ्रष्ट हो तो शांति और सुख भ्रामक हो जाते हैं।

एक तरफ कुछ लोग धन को समाज की बुराइयों का कारण मानते हैं।

कुछ लोग इसे ही बुराई मानते हैं। जिस तरह धन का होना घमंड का कारण बन सकता है, वैसे ही धन का तिरस्कार करना भी घमंड पैदा करता है। कई लोग जो धन को त्याग देते हैं, वे दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और सहानुभूति पाने के लिए अपनी निर्धनता पर गर्व करते हैं। परन्तु प्राचीन साधुओं ने धन की कभी निंदा नहीं की। उन्होंने उसे ईश्वर का अश मानकर उसका सम्मान किया और उसके भ्रम के मायाजाल की पकड़ से परे हो गये। वे जानते थे कि यदि हम किसी बात का तिरस्कार करते हैं या उससे घृणा करते हैं, तो उससे कभी भी परे नहीं हो सकते। उन्होंने धन का सम्मान भगवान नारायण की पत्नी, देवी लक्ष्मी के रूप में किया।

अज्ञान की स्थिति में लोग यह भूल जाते हैं कि इस ब्रह्मांड में जो सबसे विश्वसनीय चीज है, वह हमारे भीतर का स्वयं है। इसके बदले लोग धन को सुरक्षा का स्रोत मानकर उस पर विश्वास करना प्रारंभ कर देते हैं। जब लोगों में अपनी योग्यता, समाज की अच्छाई या ईश्वर के प्रति श्रद्धा कम हो जाती है तो वे असुरक्षा के गहरे भाव से पीड़ित हो जाते हैं। यही आज की प्रमुख समस्या है।

इसी की बजह से लोगों को लगता है कि केवल धन की प्राप्ति ही सुरक्षा प्रदान कर सकती है। वे उस पर विश्वास करते हैं जो निश्चित नहीं है और अंत में निराश हो जाते हैं। संसार परिवर्तनशील है और आत्मा परिवर्तित नहीं होती। हमें जो बदलता नहीं, उस पर विश्वास करना होगा और परिवर्तन को स्वीकार करना होगा।

वास्तव में सारे दुख अवास्तविक होते हैं और प्रसन्नता वास्तविक, क्योंकि वही आपका मूल स्वभाव है। अप्रसन्नता आपकी स्मरण शक्ति की देन होती है। जब आप सब कुछ को एक सपने की तरह देखने लगते हैं तो आप अपने प्राकृतिक स्वभाव में रहने लगते हैं, जो प्रेम, आनंद और शांति है। फिर हम यह समझ जाते हैं कि धन इतना महत्वपूर्ण नहीं है। मानवीय मूल्य, अपनापन, प्रेम और सेवा अधिक महत्वपूर्ण है। ■



मां, बेटा और बहू

मां, बेटा और बहू त्रिभुज के तीन शीर्ष बिन्दु हैं और त्रिभुज परिवार रूपी भवन की नींव है। इस त्रिभुज की तीनों भुजाएँ मां-बेटा, बेटा-बहू और सास-बहू के बीच में संबंध की घोटक हैं।

माता अपने बेटे को नौ महीने गर्भ में रखकर उसे जीवन देती है। उसे पाल पोष कर उसका शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक विकास करती है। ममतामयी मां और अधिकतर आज्ञाकारी बेटे के बीच में अटूट संबंध स्थापित हो जाते हैं। एक दूसरे के प्रति प्रेम और त्याग की भावना कूट-कूट कर भरी रहती है। मां से पिता की उम्र ज्यादा होती है, इसलिए मां अपने लड़के को देखकर अपने आपको अधिक सुरक्षित महसूस करती है। मां अपने बेटे को देखकर फूली नहीं समाती। बेटे मां के प्यार और दुलार के द्वारा ही अपना सर्वांगीण विकास कर पाते हैं। मां का बेटे के प्रति स्वेह अत्यंत निश्छल, अत्यंत निर्मल और बिना किसी स्वार्थ की भावना वाला होता है। संसार में अचल प्रेम के साथ उपकार करने वाला, मनुष्य को शक्तिशाली बनाने वाला सदुपदेश देकर उचित मार्ग पर अग्रसर करने वाला, बेटे को शक्तिशाली बनाने वाला माता के अतिरिक्त कोई दूसरी नहीं। बेटा बाप से ज्यादा मां को प्यार करता है क्योंकि पैदा होने से लेकर जीवनी तक उसका संपर्क मां से अधिक रहता है। मां अपने बेटे को इतना ज्यादा प्यार करती है कि वह पुत्र का वियोग सहन नहीं कर सकती।

जीवन बेटे को अपना भविष्य सुधारने के लिए विवाह करना पड़ता है। बेटे की बहू अपने पिता के साथ जीवन यापन करने में ही परमसुख अनुभव करती है एवं वह निरन्तर उसके पास रहना चाहती है। बेटे की शादी के बाद मां चाहती है कि बेटा मां के पास रहे और उसकी हर बात माने लेकिन

- नेता शहर का चेहरा तो बदल सकता है, लेकिन आदमी का नहीं। आदमी का चेहरा और चरित्र को बदलने का सामर्थ्य सिर्फ संत में होता है। कानून और दंड के भय से समाज को नहीं सुधारा जा सकता। समाज-सुधार का कार्य कोई संत और मुनि ही कर सकता है। नेता समाज में आता है तो नोट, बोट और सपोर्ट मांगने के लिए आता है। लेकिन संत नोट, बोट और सपोर्ट नहीं बल्कि तुम से तुम्हारी खोट मांगने के लिए आता है। संत-मुनि चलते-फिरते पावरहाउस हैं, जिन किहीं के भी मन में जीवन-ऊर्जा पाने की भावना है, उन्हें चाहिए वे संतों से जुड़े और संतोषी बनें।

- लोग कहते हैं कि संत पारस-मणी पत्थर है। मगर मैं कहता हूं संत-मील का पत्थर है। संत उस मील के पत्थर की तरह है, जो तुम्हें तुम्हारी मर्जिल की दूरी बताता है। जो कहता है- इतना चल चुके हो और अभी इतना

बेटा अपनी पत्नी के साथ अधिक समय तक बिताना चाहता है और उसकी हर बात को ज्यादा मानने लगता है। पति-पत्नी का संबंध भावभूमि पर होता है। उसमें प्रेम को उनम्यता होती है और एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। पत्नी पति की अर्धांगीनी होती है। पति का पत्नी के साथ अधिक रहने से माता से मोह कम हो जाता है और मां की बात की ओर कम ध्यान देता है। ऐसी परिस्थिति में मां सोचती है कि बेटे को बहू ने उससे छीन लिया है और वह बहू को बात-बात पर कोसती रहती है। ऐसी परिस्थिति में बेटे की भूमिका को सफलता से निभाने के लिए अपनी बुद्धि का सहारा लेना चाहिए। मां की हर बात में पक्ष लेने पर पत्नी नाराज हो जायेगी और पत्नी का पक्ष लेने में मां से संबंध बिगड़ जायेंगे। बेटे के लिए मां को और पत्नी को खुश रखना एक समस्या का रूप धारण कर लेता है। ऐसी परिस्थिति में बेटे को एकतरफा पक्ष नहीं लेना चाहिए। जिससे दूसरी ओर का संबंध टूट न जाए। बेटे को समन्वयक होशियारी से काम लेना चाहिए, जिससे मां और पत्नी दोनों को खुश रख सके।

सास और बहू में अक्सर छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़े होते रहते हैं। बहू को हमेशा चुप रहना चाहिए जिससे सास के अहं को ठेस न पहुंचे। सास को भी छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ा या जिद नहीं करना चाहिए। नये जमाने के परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अपने आप को नये माहौल में ढालकर रहना चाहिए। सास और बहू तो एक ही छत के नीचे 24 घंटे रहती हैं। बहू अपनी सास को अपनी मां के समान समझकर उसकी छोटी-मोटी बातों को सहन करना चाहिए। दोनों ही हिल-मिलकर काम करें। एक-दूसरे की सहायता दे, एक दूसरे को समझकर बात करें, एक दूसरे को सहन करे और वातावरण को दृष्टित न होने दे तो घर के 'मुखिया' (बेटे) को शार्ति और खुशी से जीवन बिताने का मौका मिलेगा। घर का चहमुखी विकास अवश्य होगा। बेटा, बहू और मां के बीच में सही तालमेल हो तो जीवन सुंदर लगने लगेगा।

मां, बेटा और बहू त्रिभुज के तीन शीर्ष बिन्दु हैं और त्रिभुज परिवार रूपी भवन की नींव है। इस त्रिभुज की तीनों भुजाएँ मां-बेटा, बेटा-बहू और सास-बहू के बीच में संबंध की घोटक है। इन तीनों के आपस के संबंध में समन्वय हो तो परिवार में सुख और शार्ति होगी और परिवार का लगातार विकास होगा। प्रत्येक परिवार की समुद्धि से समाज और देश की सर्वव्यापी उन्नति होगी और संपूर्ण दुनिया स्वर्ग बन जायेगी।

-68, गोल्फ कोर्स स्कीम,
जोधपुर-342011 (राजस्थान)

और चलना है। संत तो केवल मार्ग दिखा सकता है, चलना तो तुम्हें ही होगा। कहते हैं न कि घोड़े को नदी तक तो ले जा सकते हो, पानी भी दिखा सकते हो, मगर पिला नहीं सकते। मैं तुम्हें नदी तक ले आया हूं, पानी भी दिखा रहा हूं। अब पीना तो तुम्हें ही होगा।

- जीवन में दो-चार आलोचक भी जरूरी हैं। यदि फिल्म में खलनायक न हो तो नायक के व्यक्तित्व में चमक नहीं आती। और जीवन में दो-चार निंदक न हो तो आदमी लापरवाह हो जाता है। निंदक हमें सावधान रखता है, जिस गली में दो-चार सुअर होते हैं, वह गली स्वच्छ रहती है। निंदक सुअर के समान हैं, वह हमें शुद्ध रखता है। कोई तुम्हारी निन्दा करे तो सोचना लोग उसी पेड़ पर पत्थर फेंकते हैं जिस पर मीठे-मीठे फल लटक रहे होते हैं। दुनिया में आलोचना भी उसी की होती है जिसमें कई दम-खम होता है।

संतवाणी

॥ मुनि तरुणसागर



गणेश मुनि शास्त्री



आदमी सबके बाद क्यों?

प्रेम की कोई सीमा नहीं है। वह व्यक्ति समाज, भाषा, धर्म, लिंग, राष्ट्र एवं विश्व से भी हो सकता है। व्यक्ति-प्रेम तो सामान्य बात है। अग्रवाल जाति का समाज-प्रेम देखकर आज भी लोग दांतों तले अंगुली दबाते हैं। अग्रवाल जाति की जन्मस्थली अग्रोहा में यदि कोई बाहर का अग्रवाल पहुंच जाता है तो उसे प्रत्येक घर से एक रुपया व एक ईंट देकर उसका सम्मान किया जाता है। अग्रोहा में उस समय हजारों अग्रवाल जाति के घर थे। समाज के व्यक्ति को संपन्न बनाने वाले ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं। पुराने समय में राजस्थान के पालीवाल समाज में भी इस प्रकार की प्रथा थी यह जाति-प्रेम का अनुपम उदाहरण है।

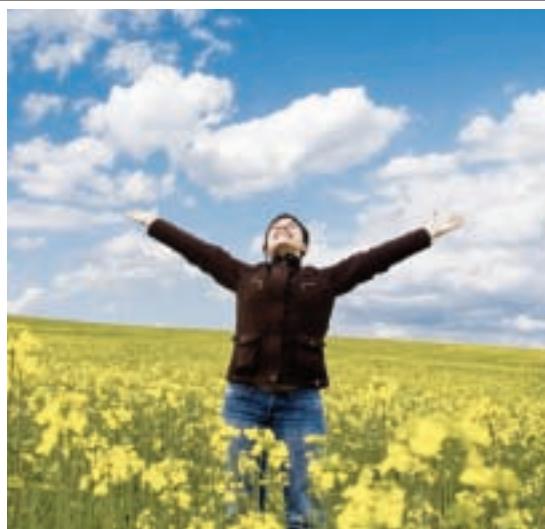
राष्ट्र-प्रेम के उदाहरणों से तो इतिहास भरा पड़ा है। प्रेम मित्राता की जड़ों को प्रगाढ़ करता है। प्रेम से मनुष्य तो क्या, जनवर भी वश में हो जाते हैं। सुना है खेन में गायों का दूध निकालने से पूर्व वहाँ के ग्वाले मधुर वीणा बजाते हैं। मधुर संगीत के प्रभाव से गायें भाव-विभोर होकर अधिक मात्रा में दूध देती हैं। गर्भस्थ शिशु पर भी मां के प्रेम व्यवहार का अद्भुत मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है।

प्रेम जोड़ने का कार्य करता है तो द्वेष तोड़ने का। जिस प्रकार सुई और कैंची दो अलग-अलग वस्तुएं हैं। कैंची जहाँ काटने का कार्य करती है वहां सुई उन्हें जोड़ने का। द्वेष कैंची की तरह है तो सुई प्रेम की तरह। आज मैत्री भाव को प्रगाढ़ करने के लिए हमारे हाथ में प्रेम रुपी सुई का होना आवश्यक है। प्रेम में यदि मात्र दिखावा है तो मित्रता का निवाह नहीं हो सकता। आज का मनुष्य स्वार्थ की अंधी दौड़ में चालाक हो गया है।

परमात्मा ने जब सृष्टि का निर्माण किया और सभी जीवों को बनाकर छोड़ दिया, तब सबसे अंत में उन्होंने मनुष्य को बनाकर कहा—‘यह दुनिया के सब जीवों में सबसे अधिक बुद्धिमान होगा।’ तभी पास खड़े, देवदूत ने पूछा—‘प्रभो! ऐसे बुद्धिमान प्राणी को सबसे अंत में क्यों बनाया? इसे तो सबसे पहले बनाना चाहिए था।’

यह सुन परमात्मा ने कहा—‘मनुष्य बड़ा चालाक और स्वार्थी है। यदि मैं इसको सबसे पहले बना देता तो यह सभी जीवों से कहता फिरता कि मैंने तुमको बनाया है। कम से कम ये जीव इस बात को तो जानते हैं कि मनुष्य हमारे बाद में पैदा हुआ है, यह हमारा निर्माता नहीं हमारा निर्माता तो परमात्मा है।’

मनुष्य आज अपने कार्यों से परमात्मा के कामों में हस्तक्षेप कर रहा है। वह स्वार्थ के अंतिम बिन्दु तक पहुंच गया है। दूसरे महायुद्ध का नाम आपने सुना है। मेरे कुछ बुजुर्ग भाई उस काल को देख भी चुके हैं या न भी देखा हो उससे कोई अतर नहीं पड़ता, पर यह सत्य है। सत्य को नकारा नहीं जा सकता। तो सुनिए—पांच साल तक चले उस युद्ध में करीब पांच करोड़ लोग मारे गए। आज की इस प्रतिस्पर्धा ने दुनिया को तीसरे महायुद्ध



प्रेम जोड़ने का कार्य करता है तो द्वेष तोड़ने का। जिस प्रकार सुई और कैंची दो अलग-अलग वस्तुएं हैं। कैंची जहाँ काटने का कार्य करती है वहां सुई उन्हें जोड़ने का। द्वेष कैंची की तरह है तो सुई प्रेम की तरह।

सर्वप्रथम परमात्मा ने अमेरिका के प्रतिनिधि को अपने पास बुलाया और पूछा—‘बोलो, तुम्हारी क्या इच्छा है?’

अमेरिका के प्रतिनिधि ने कहा—‘हे परमपिता! हमारी इच्छा है कि धरती तो रहे, मगर उस पर रूस का अस्तित्व नहीं रहना चाहिए।’ यह सुनकर परमात्मा मन ही मन बड़े दुखी हुए और उसके बाद रूस के प्रतिनिधि को बुलाकर उसकी मनोकामना पूछी तो वह बोला—‘हे परमपिता परमात्मा! यह अमेरिका दकियानूसी पुराने विचारों का है। विश्व के मानचित्र पर इसका अंशमात्र कलर भी नहीं रहना चाहिए। बस, यही मेरी तमन्ना है।’

रूस के प्रतिनिधि की बात सुनकर परमात्मा और अधिक दुःखी हुए। मन में घबराहट बढ़ गई। पर्सीने से सारा शरीर भीग गया। कुछ आश्वस्त होने के बाद आशा-सफलता के भाव लेकर इंग्लैंड के प्रतिनिधि को बुलाया। इंग्लैंड के प्रतिनिधि ने क्या कहा? उसे सुनकर आप भी आश्चर्य में पड़ जायेंगे। वह बोला—‘हे प्रभु! हमारी अपनी कोई निजी इच्छा नहीं है... अमेरिका और रूस दोनों ही मेरे घनिष्ठ मित्र हैं, बस आप इन दोनों की इच्छा पूर्ण कर दें तो हमारी इच्छा स्वतः पूर्ण हो जाएगी।’

हां तो आज यहां सभी की यही स्थिति है। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का अस्तित्व मिटाने हेतु परमात्मा से वरदान मांग रहे हैं।

जैन धर्म और महावीर की वाणी तो सह-अस्तित्व के साथ ‘जीओ और जीने दो’ का स्वर अभिगूजित कर रही है। मैत्री भाव हमारे रग-रग में समाया हुआ है। हम तो सदैव यही कहते आये हैं—

खुद जीओ औरों को भी जीने दो, यही तो है जिन्दगी का रास्ता। नहीं दुःखी हो जग में कोई, हमें अमन का शांति का वास्ता॥ ■

The Turning of the Wheel of Dharma

MAN'S greatest invention is the wheel. In practical day-to-day life, the wheel has been put to use in many profitable ways. Spiritually too, the wheel represents a whole corpus of teachings to the Buddhist. Once upon a time, there were three kings, all of whom had a wheel each. The one with a golden wheel had to just send word to the people of a region that he wanted to conquer their area — they would themselves come and receive him as their king and crown him.

The king with a silver wheel had to send his wheel to the area he wanted to conquer. Not only that, he had to physically go to the region — he would then be accepted as king and crowned. The third king did not have a bronze wheel in keeping with the Olympic order, but had an iron wheel. This king would not only have to follow his wheel, he would also have to show off all his strength before he could impress the people of a new area to accept him as king.

The wheel that was far above all these wheels was the Wheel of Dharma or the Dharma Chakra. Into the dharma chakra or the Wheel is read the basic teachings of Buddhism. This wheel has eight spokes. They represent the noble eightfold path: right views, right resolve, right speech, right conduct, right livelihood, right effort, right mindfulness and right concentration. These constitute Dhamma, scrupulous observance and pursuit of which helps one attain Nirvana. The spokes have sharp edges for they embody the idea that wisdom cuts through ignorance.

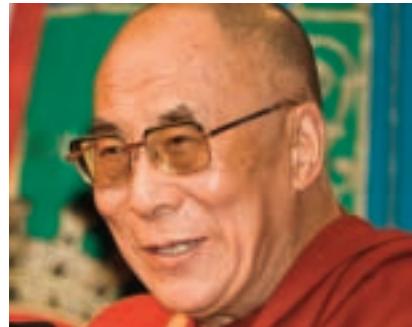
The rim which holds the spokes represents mindfulness and perfect samadhi. The centre or the hub of the wheel is shila or moral discipline. The

■ Lama Doboom Tulku

whole wheel therefore represents the three sikkhas: shila or discipline, prajna or wisdom and samadhi or mindfulness. The Turning of the Wheel or Dharmachakra pravartana is a phrase used to refer to Buddhist teachings.

There have been three main teachings. The well-known convention of this three turnings of the wheel derives from Samdhinirmocana-sutra, Elucidating the Thought of the Noble Ones. In the seventh chapter of this work, the Bodhisattva Paramarthasamudgata asks the Buddha what he had in mind when, on certain occasions, he had said that phenomena have true existence and on other occasions that they do not; for these statements appear to be directly contradictory. Buddha's reply crystallised as the third Turning of the Wheel, and as Cittamatrin, or Mind Only school of thought.

The first Turning of the Wheel taught true existence, the second non-true existence and the third that some phenomena exist truly whereas others do not — this is the classification of the scriptures into three turnings, in order to explain selflessness. The first Turning of the Wheel forms the Dharma Chakra Sutra wherein Buddha taught his five disciples the four noble truths. This took place in Varanasi soon after Siddhartha attained enlightenment. These teachings became the foundations of Buddhism. The phrase noble truth is a translation of Arya Satya, which actually means truth to the noble. It is truth to those who have perceived them. A common simile given is that of a small piece of hair. If that hair is lodged on the palm, then one may not even note it,



but if it gets into the eye, then it hurts. The enlightened, the noble ones are likened to the eye while the ignorant are like the palm.

The second Turning of the Wheel took place at Rajgir on the peak of the Mountain of Vultures, near Nalanda. This is regarded as Pragya-paramita sutras or the Wisdom of Perfection. There are six perfections, the last of them being perfection of wisdom or pragya. There are three kinds of wisdom: knowledge of subjects, such as medicine or the arts; knowledge of shunyata and knowledge that is beneficial to others, that is, possessing a skill.

The three kinds of wisdom are not necessarily progressive. They can be ends to themselves. The second Turning deals with the realisation of the ultimate nature of all phenomena and the subject of shunyata, or the complete whole, the void of self-existence. The third Turning is said to have taken place at different places on different topics. One of the main features of this turning Tathagatha garbha, which means that all sentient beings possess the potential to become Buddha. ■

Goal of this tradition

The tradition of this land does not answer any questions. Instead, it gives you methods and tools to be able to perceive all those dimensions which are not in your perception right now because if an answer is given to your question about something that is not yet in your experience and if you like the answer you will believe me and have an interesting story to tell; if you dislike the answer you will disbelieve me and will have something to deride about; but neither your belief nor your disbelief gets you any closer to truth and reality than the way you are right now.

You know only what you perceive; the rest is just a psychological process and can change at any moment - it doesn't mean anything. The psychological is your making and it need not have anything to do with reality because you can imagine whatever you want; there is nothing to stop you.

People are so enamoured and so deeply identi-

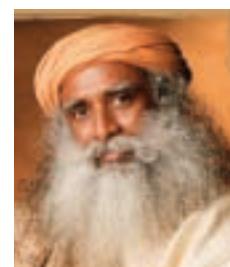
■ Jaggi Vasudev

fied with the petty creation in their mind that they completely miss the creator's creation; but the existential is far bigger than the psychological.

So if you have a longing, a method can be given to you to enhance your perception so that you will know it by your own perception. The question is about creation and the answer should also be about creation; it should not be psychological. The psychological leads to a belief system which provides great solace to a human being; it is a great psychological tool. The eastern cultures are not looking for solace; they're looking for a solution. Psychological solace has never been the goal; the goal has always been ultimate liberation or mukti.

A human being has a body, a mind, his emotions and his inner energies. He can use any of these four and transcend certain limitations within him-

self. In the Hindu way of life, all these four were considered in the pursuit of the ultimate. You can be a gnana yogi and use your intellect. You can be a bhakti yogi and use your devotion or emotion. You can pursue the ultimate through your physical action which is known as karma yoga or you can reach your ultimate nature by transforming your inner energies which is known as kriya yoga. This is not known as Hinduism - this is known as Sanathana Dharma which means universal religion. No matter who you are, you can only do any one of those four things; there is nothing else that you can do. Religion was never looked at as a belief system in the East; it was only seen as a human possibility; how a human being could rise to his highest possible level. ■



Humankind's greatest virtue

Non-violence is not only the greatest virtue of man but also the basis of all his other virtues. Without non-violence, other qualities lose their worth. This is exactly what is happening in the world today. Neglecting non-violence is depriving us of other virtues. The greatest crisis of the times is the loss of human values.

Lord Mahavira says, "Joys are welcomed, sorrows shunned. All want to live and nobody wants to die. We must do to others as we wish them to do unto



■ Gani Rajendra Vijay

us. This is the foundation of humanity. Hurting, murdering or torturing any man, animal, bird or living creature is evidently brutal. Violence, murder and massacre never have anything to do with human values. These lie in the simple and elevated echoes of live and let live." Non-violence is the prerequisite of peaceful co-existence. Efforts to undermine others' existence in order to preserve one's own is futile and

potentially harmful. Acharya Shree Umaswati has said, "Paras paropagragaho jivnam. (Thereby all are friends and peers to each other.)"

Progress and development of a society is based on this theory of non-violence. Through the centuries, mankind has endured the ill-effects of war and violence. While killing others, man kills himself and his divine qualities. Lord Mahavira says in the Acharang Sutra, "Whosoever you want to kill — that is you. Whom you intend to torture is you and whom you want to discipline is also yourself." This advait bhav is the basis of non-violence. One act of violence sparks an endless cycle. Non-violence ushers in prosperity. All human values grow, blossom and spread under the aegis of non-violence. In fact, non-violence is the life-giving oxygen to humanity. It is the preserver of nature, environment, earth, water and all living creatures.

Man has made amazing progress in science and technology. Yet respect for others' and one's own lives has been lost. In the Sootrakritanga Sootr, it is said, "Aivam khoo nannin saram jam na hisai kinchan. Ahinsa samayam chaiv atavantam viyaniya. (Being knowledgeable means not killing anyone. Equality based on non-violence is the essence of religion)." This must be remembered at all times. "Vasudhaiva kutumbakam (The whole world is a family)," goes a popular Sanskrit saying. ■

Engage Karma through devotion

Of all forms of knowledge, self knowledge is the most precious. Human birth is said to be a gift and a privilege for this reason because among all other creations, only human beings have been afforded the facility to attain self realization by the Creator.

The key to obtain a good life lies in performing good karmas because it is only good karmas that can wipe out the effects of bad karmas. While karma cannot be obliterated, its intensity can be significantly reduced through the practice of devotion.

Everything that happens in the universe hap-



■ Ramnath Narayanswami

pens because of a reason. Nothing happens by accident. This reason is the law of karma. The functioning of this law is strict. Its essence lies in understanding that we have to pay the price of bad deeds committed in the past. No one can escape it. What goes around must come around.

The law cannot be relaxed. There are no exemptions. It is said that human beings are likely to disregard the law if there are exceptions to the rule. For this reason, the law of karma is relentless. Fear of its consequences acts as a deterrent to negative actions. However, there are ways in which the effects of past actions can be mitigated. These ways consist of devotion, faith and surrender. Those who follow the path of devotion can reduce their karmic burden through faith and selfless service.

According to Sakthi Amma, the Divine Mother in Her form as the Goddess Narayani: When you are on the path of devotion, it will reduce the intensity of past karma and not create karma for the present and

the future. The first benefit is prevention of doing bad things and having bad thoughts.

The second benefit is that if there is no bad karma in the present, there will be no bad karma in the future. What you do today is going to be the karma for tomorrow. When you are devoted to the Divine, you engage yourself in good actions and you are prevented from bad activities. Consequently, you will have good thoughts and you will not create bad karma in the present or in the future.

For this to happen, we must meet the challenges we face in our lives with positive energy and overcome them with patience and forbearance. Successfully engaging our challenges actually reduces our karma. Difficulties are given to us to make us strong and perfect.

Life must therefore be greeted with equanimity. There is nobody in this world who is without difficulty. Joy and sorrow and good and bad alternate in the complex drama of life. Devotion opens the wellspring of love in our hearts. It is the ultimate solution. ■



डॉ. श्याम मनोहर व्यास

सफलता और साधन

अक्सर अकर्मण्य, आलसी एवं निक्रिय व्यक्ति हताश होकर कहा करते हैं— “मैं तो तुच्छ हूं, अभागा हूं और साधनहीन हूं। यदि मुझ भी अमुक व्यक्ति के समान साधन सुलभ होते तो मैं भी महान बनता, उच्च पद पाता, अमुक व्यक्ति के समान ऐश्वर्यशाली होता।”

संसार में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं जो साधनों की कमी के बारे में ही सोचा करते हैं और आगे बढ़ने का कोई प्रयास नहीं करते।

किसी विद्वान पुरुष का यह कथन कितना सच है कि किसी भी मनुष्य को वह सफलता बिना परिश्रम किये नहीं मिल सकती जिसको वह चाहता है।

महान कार्यों के सृजन के लिए दृढ़ आत्मबल की आवश्यकता है। यही एक ऐसा महान साधन है जो व्यक्ति को तुच्छ से महान बनाता है।

भगवान राम ने रावण से युद्ध किया था। रावण के पास युद्ध संबंधी सब साधन थे। विशाल सेना, अस्त्र-शस्त्र, हाथी, रथ, धन एवं विमान आदि यत्र भी।

इसके विपरीत राम के पास युद्ध संबंधी नगण्य साधन थे। वानरों, भालुओं की सेना थी। फिर भी राम ने रावण पर विजय प्राप्त की। भगवान राम के पास एक अमूल्य वस्तु थी जो रावण के पास नहीं थी। वह वस्तु थी— आत्मबल। भगवान राम आत्मविश्वासी, सदाचारी, निर्भीक एवं निराभिमानी थे।

श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में हुआ। उनका पालन-पोषण एक राज-दरबार में न होकर एक सामान्य घराने में हुआ। बाल्यकाल ग्वाल बालों के बीच व्यतीत हुआ, पर वे आत्मविश्वासी, निर्भीक एवं साहसी थे। आत्म-बल उनमें कूट-कूट कर भरा था। असाधारण प्रतिभा उनमें थी। वे अकेले ही अपने भाई बलराम के साथ कंस के दरबार में गये थे। अपने महान गुणों के कारण वे पूर्णावतार माने जाते हैं। गीता जैसा महान व गूढ़ ग्रंथ का उन्होंने निर्माण किया।

भक्त कवि तुलसीदासजी के पास भी कौन से बड़े साधन थे? चित्रकूट की कुटिया में बैठ दीपक की मंद-मंद रोशनी में उन्होंने महान ग्रंथ ‘रामचरित मानस’ की रचना की।

बंगाल के ईश्वरचंद्र विद्यासागर को कौन नहीं जानता? निर्धन होने के कारण बाल्यकाल में वे सड़क पर लगे प्रकाश के खंभे के नीचे बैठकर विद्याध्ययन करते थे। भविष्य में वे इतने विद्वान, परोपकारी व देशभक्त बने कि लोगों ने उन्हें ‘विद्यासागर’ की उपाधि से विभूषित किया। विपत्तियों से घबराना कायरता है। जीवन का निर्माण विपत्तियों के बीच से होता है। धैर्य की परीक्षा विपत्तियों के बीच ही होती है। श्रम, आत्मबल, उत्साह, लगन



“
यदि आप परिश्रमी हैं तो
भाग्य भी आपके
अनुकूल रहेगा। आगे
बढ़िए। उत्तम पुस्तकों
का स्वाध्याय करिए,
उनका चिंतन करिए।
उत्साह बनाये रखिए।
उत्साह ही वह कल्पवृक्ष
है जो आपकी लक्ष्य की
प्राप्ति कराएगा।”
”

और कर्मठता ही सुखी और समृद्ध जीवन का निर्माण करते हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन कहा करते थे कि वे निर्धनता में ही पैदा हुए और निर्धनता में ही पले। बाइस वर्ष की आयु तक अनेक विपत्तियों का उन्होंने समाना किया। पर आखिर में अपनी विद्वता व लोकप्रियता के कारण एक दिन वे राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। प्रसिद्ध वैज्ञानिक एडीसन ने अपना जीवन एक समाचार पत्र विक्रेता के रूप में शुरू किया था। प्रति माह वह अखबार की मुद्रित प्रतियां

प्रेस से बीस मील दूरी पीठ पर लाद कर ले जाते थे, पर अध्ययन में उनकी रुचि थी। रसायन व धैर्यात्मक विज्ञान का उन्होंने पूरा अध्ययन किया। आगे चलकर एडीसन ने ग्रामोफोन, चित्रपट आदि वैज्ञानिक यंत्रों का अविष्कार किया।

अमेरिका का अब्राहम लिंकन एक निर्धन व्यक्ति था। उसे किसी पाठशाला में शिक्षा नहीं मिली। बचपन में वह अपने मित्रों की की पुस्तकों से ही पढ़ लेता था। यही बालक आगे चलकर राष्ट्रपति बना। अपनी दयालुता, सौजन्यता व देशभक्ति के कारण उसका नाम अमेरिका के इतिहास में अमर रहेगा।

आज के छात्र अध्ययन के पूर्व साधनों के बारे में सोचते हैं। पढ़ने के कमरे में सारी सुख-सुविधा चाहते हैं। निर्धन मां-बाप कर्जा लेकर भी उन्हें सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं, पर अधिकांश ऐसे छात्र जीवन में सफल नहीं हो पाते जो सैर-सपाटे में ही अपना समय गुजार देते हैं। यह भी देखा गया है कि कई अभावों में जीकर भी विद्यार्थी प्रतियोगिताओं में श्रम कर सफलता प्राप्त करते हैं और डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी बनते हैं।

विद्या सरस्वती है। इसको वही अपना सकता है जो विनम्र है, सात्विक है, विश्वासी है और जिज्ञासु है। छात्रों को याद रखना चाहिए कि आत्मविश्वास, लगन, परिश्रम, एकाग्रता, साहस, निर्भयता एवं आस्तिकता ही सफलता के सच्चे साधन हैं।

यदि आप परिश्रमी हैं तो भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आगे बढ़िए। उत्तम पुस्तकों का स्वाध्याय करिए, उनका चिंतन करिए। उत्साह बनाये रखिए। उत्साह ही वह कल्पवृक्ष है जो आपकी लक्ष्य की प्राप्ति करायेगा। ईश्वर व अपनी आत्मिक शक्तियों पर पूर्ण विश्वास रखिए। तुच्छ साधनों का अभाव आपको जीवन पथ पर आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता। दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर ही आपको आगे बढ़ना है।

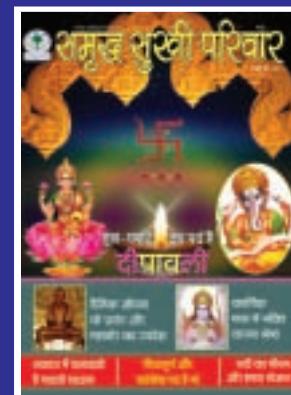
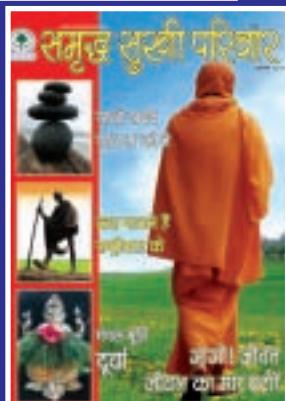
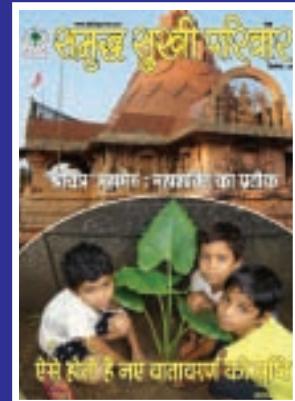
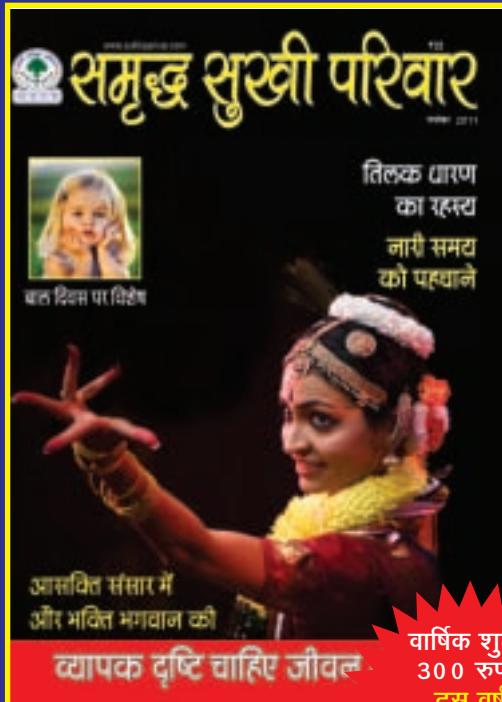
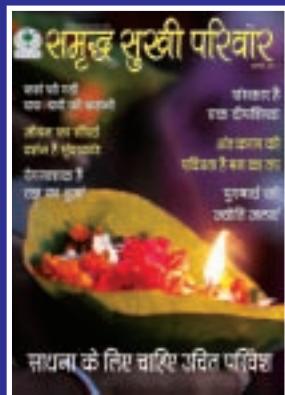
-15, पंचवटी, उदयपुर-313004 (राज.)

समृद्ध सुखी परिवार

सुखी और समृद्ध परिवार का मुख्यपत्र

विज्ञापन और
सदस्य बनाने
हेतु प्रतिनिधि
संपर्क करें

पत्रिका के स्वयं ग्राहक बनें, परिचितों, मित्रों को ग्राहक बनाने के लिए प्रेरित करें



कवर अंतिम पृष्ठ	25,000
कवर द्वितीय/तृतीय	20,000
भीतरी रंगीन पृष्ठ	10,000

वार्षिक शुल्क
300 रुपये
दस वर्ष
2100 रुपये
आजीवन
3100 रुपये

विज्ञापन देकर अपने प्रतिष्ठान को जन-जन तक पहुंचाएं

कृपया निम्नलिखित विवरण के अनुसार मुझे 'समृद्ध सुखी परिवार' सदस्यता सूची में शामिल करें:

नाम.....

पता.....

फोन..... ई-मेल.....

सदस्यता अवधि..... राशि रूपए..... द्वारा मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट संख्या.....

दिनांक.....

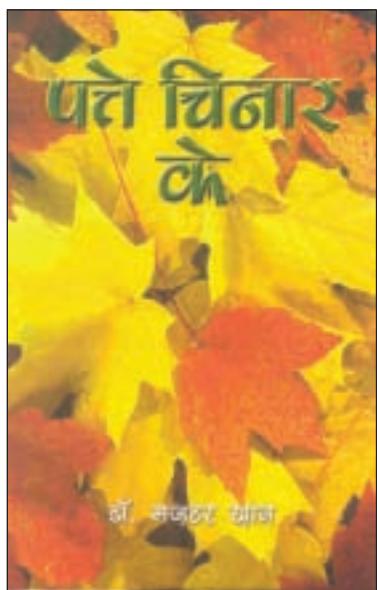
आवेदक के हस्ताक्षर

नोट: सदस्यता शुल्क की राशि का चेक/ड्राफ्ट सुखी परिवार फाउंडेशन, नई दिल्ली के नाम से बनाएं या एक्सिस बैंक खाता संख्या 119010100184519 में सीधा जमा करवाएं। मनी ट्रान्सफर के लिए IFS CODE UTIB0000119 का प्रयोग करें।

सुखी परिवार फाउंडेशन

ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110 092

फोन: +91-11-26782036, 26782037, मोबाइल: 09811051133



प्रथम काव्य संकलन कविता के नये मूल्य मानकों को गढ़ता है। अपने इस प्रथम काव्य संकलन के प्रकाशन के कुछ ही समय बाद वे हम सबके बीच से अल्पायु में विदा हो गए। इस समीक्षा के माध्यम से उस उभरते हुए शब्दों के जातूगर को विनप्र श्रद्धांजलि व्यक्त करने का मेरा प्रयास है। वे आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका यह काव्य संकलन और इसके बाद आई कृतियां उन्हें हम लोगों के बीच सदा जीवंत रखेगी।

प्रस्तुत काव्य संकलन में कुल चौबीस कविताओं को संकलित किया गया है। प्रथ्यात् कवियत्री एवं शब्द-मनीषी पद्मा सचदेव ने अपनी भूमिका

पते चिनार के : डॉ. मज़हर खान की सद्य प्रकाशित काव्य कृति है। कवि कश्मीर घाटी से जुड़े रहे हैं। इसलिए उन्होंने कश्मीर और वहां की संस्कृति पर अनेक कविताएं लिखी हैं। यही नहीं उन्होंने भारतीय लोकमानस, प्रकृति और भारत के मिट्टी को भी अनेक रूपों में चित्रित किया है। वहीं मानवीय और सामाजिक संबंधों पर भी उन्होंने मार्मिक अभिव्यक्तियां दी। इन्हीं सब इन्द्रधनुषी रंगों को लिए हुए प्रस्तुत हुआ उनका यह काव्य संकलन और इसके

में कश्मीर और वहां चिनार के पतों में जोगिया रंग के मौसमें खिजां वाले जाफ़रानी झोंके को महसूस करते हुए लिखा है कि डॉ. मज़हर खान की हिन्दी में पहली किताब 'पते चिनार के' आज मुझे फिर उनके साथे में खड़ा कर गए। डॉ. खान ने अपनी कविताओं में चिनार के जाफ़रानी पतों से दुआएं ली हैं। उनकी कलम से फुटी ये कविताएं जैसे गिर गये चिनार के दरखतों की नयी कोपलें हैं।"

सुखी परिवार फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित इस काव्य-संकलन के लिए अपना आशीर्वाद देते हुए गण राजेन्द्र विजय लिखते हैं कि 'पते चिनार के' में शब्द-संयोजना का जितना मूल्य है, उससे अधिक मूल्य है प्राण-संयोजना का। छोटे-छोटे शब्द अपनी सादगी के बावजूद बहुत बड़ा संदेश दे जाते हैं। शब्द-शक्ति अभिव्यक्ति का प्रमुख सौंदर्य विधायक तत्व है। काव्य में शब्द अपनी शक्ति से ही जीवित रहता है। जो कवि शब्द की विशिष्ट शक्ति को पहचानकर उसे अनुभूति से अभिस्नात करके प्रयोग करता है उसके काव्य में जीवंता आ जाती है।

कश्मीर घाटी में गत दो दशकों से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हिन्दी की अलख को जगाये रखने वाले डॉ. खान की कविताओं में जहां तीखा क्षोभ है, वहीं मार्मिकता भी है, वहीं भावनात्मक कसाव भी है। इस संग्रह की कविताएं अपने युग को अभिव्यक्त करने में सफल रही हैं, साथ ही इन कविताओं में जीवन का उल्लास भी दिखाई देता है।

पुस्तक : पते चिनार के

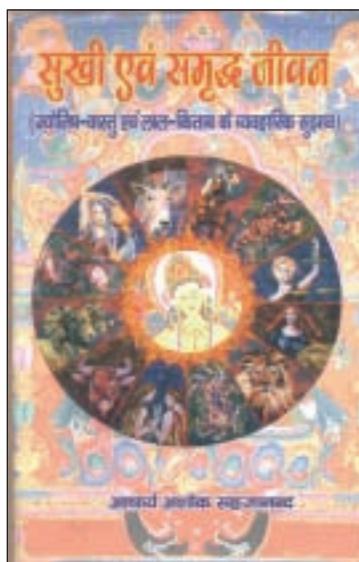
लेखक : डॉ. मज़हर खान

प्रकाशक : सुखी परिवार फाउंडेशन

टी.एम.डब्ल्यू सेन्टर, ए-४१/ए, रोड नं.-१

महिपालपुर चौक, नई दिल्ली-३७

मूल्य : रु. 150, पृष्ठ सं. : 64



प्रश्नों को इस पुस्तक में उठाया गया है।

पुस्तक की प्रस्तावना अत्यंत प्रामाणिक, विवेचनात्मक एवं विद्वात्पूर्ण ढंग से लिखी गई है। ज्योतिष पर विश्वास करने वालों के लिए तो यह आलेख महत्वपूर्ण है ही, परन्तु जो लोग मानने, न मानने जैसे तर्कों पर अटके हैं उनके लिए भी अत्यंत सुरुचिपूर्ण सिद्ध होगा। विद्वान लेखक का

सुखी और समृद्ध जीवन

■■■ बरुण कुमार सिंह

ग्रहों के संबंध में गंभीर एवं गवेषणात्मक अध्ययन है। उनके शुभाशुभ प्रभावों का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन किया गया है।

ग्रह पीड़ा निवारण के लिए रत्न धारण के प्रकारों का प्रामाणिकता से विवेचन है। ग्रह पीड़ा का शमन जड़ी-बूटियों द्वारा भी किया जा सकता है, इसके लिए स्नान के प्रकारों का विवेचन, उपवास, रुद्राक्ष धारण करने के तरीके, उनकी पहचान और कसौटी का भी विवेचन है। ग्रह पीड़ा निवारण में मंत्रों की क्या भूमिका है आदि विविध कारण तरीकों, लाल-किताब के अचूक उपायों, फॅंगशुई व पिरावास्तु के उपायों की विस्तार से चर्चा है।

'स्वप्न मीमांसा' के अंतर्गत यह बताने का सफल प्रयास किया गया है कि मनुष्य यदि चाहे तो उसके जीवन में जो अनचाहा नियंत्रण एवं परवशता सामने आती रहती है, उसे इस पुस्तक में बताए गए उपायों द्वारा दूर कर सकता है। वस्तुतः ग्रहों के अशुभ प्रभावों को शुभ प्रभावों में बदला जा सकता है।

पुस्तक : सुखी और समृद्ध जीवन

लेखक : आचार्य अशोक संहाजानंद

प्रकाशक : मेघ प्रकाशन, 239, गली कुंजस

दरीबाकला, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

मूल्य : रु. 200, पृष्ठ सं. : 206

पुखराज सेठिया



प्रकृति की रंगशाला अल्मोड़ा

अपनी नैनीताल की यात्रा के समय ही मैं अल्मोड़ा और कौसानी की भी यात्रा का निश्चय कर चुका था। यहां की प्राकृतिक सुंदरता के बारे में मैंने काफी कुछ सुन रखा था। वैसे तो पूरा कुमायूं मण्डल ही अपनी

स्थान पर हम कुछ देर के लिए रुके। यहां 'नीम करौली' नामक एक आश्रम है। आश्रम का शांत बातावरण उसे स्वतः: एक आध्यात्मिक गरिमा प्रदान कर रहा था। आश्रम में कुछ विश्राम के बाद हम पुनः चल पड़े। नैनीताल से लगभग साठ कि.मी. की यात्रा करके अन्ततः हम अल्मोड़ा पहुंच गए।

कभी कुमायूं की राजधानी अल्मोड़ा को सन् 1963 में राजा बालो कल्याणचंद ने बसाया था। अल्मोड़ा घोड़े की नाल के आकार के अर्ध गोलाकार पर्वत शिखर पर बसा है। इस नगर ने आज भी अपने प्राचीन स्वरूप को संजोए रखा है। यहां पर चीड़ एवं देवदार के घने पेड़ हैं। हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां इसके सौंदर्य में चार चांद लगाती हैं।

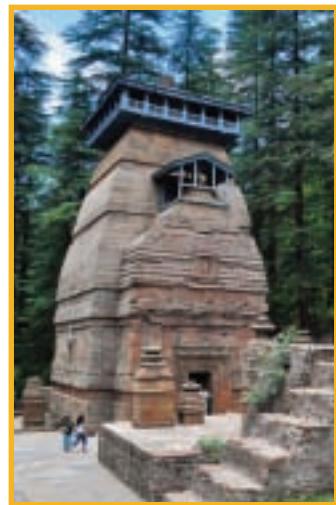
अल्मोड़ा के बस स्टैंड के पास ही गोविन्दवल्लभ पं राजकीय संग्रहालय में कुमायूं के इतिहास व संस्कृति की झलक मिलती है। यहां विभिन्न स्थानों से खुदाई में मिली पुरातन प्रतिमाओं तथा स्थानीय लोक कलाओं को भी देखा जा सकता है।

अल्मोड़ा से तीन कि.मी. की दूरी पर डियर पार्क घूमने-फिरने के लिए उत्तम स्थान है। पर्यटक अपने परिवारों के साथ यहां पिकनिक मनाने आते हैं। इसका शांत और सौंध बातावरण पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

अल्मोड़ा से पांच कि.मी. की दूरी पर स्थित काली-मठ एक आदर्श परिवारिक पिकनिक स्थल है। यहां से अल्मोड़ा की खूबसूरती को जी भर कर निहारा जा सकता है। काली-मठ के पास ही कसार देवी मंदिर है, जहां नवविवाहित जोड़े आशीर्वाद लेने बहुत दूर-दूर से आते हैं।

अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध बिनसर में पर्यटक विकास निगम के रेस्ट हाउस भी हैं। बिनसर का अर्थ भगवान शिव से है। सैकड़ों वर्ष पुराना नंदादेवी मंदिर अपनी दीवारों पर उकेरी गई मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

यहां पर स्थित 'गणनाथ' एक प्रसिद्ध शिव मंदिर है। धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से कटार मठ काफी महत्वपूर्ण स्थान है। यहां 800 वर्ष पुराना सूर्य मंदिर है। उड़ीसा में कोणार्क के सूर्य मंदिर के बाद यह देश का दूसरा महत्वपूर्ण सूर्य मंदिर है। अल्मोड़ा से सत्रह कि.मी. की दूर



प्राकृतिक सुषमा और सुंदरता के लिए विख्यात है। नैनीताल, मसूरी, चक्रताल, रानीखेत, पौड़ी, टिहरी, गढ़वाल, पिथौरागढ़, ऋषिकेश, उत्तरकाशी, हल्द्वानी, देहरादून-सभी की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। किन्तु मेरे लिए अल्मोड़ा और कौसानी के आकर्षण का प्रमुख कारण उसकी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पत की जन्मस्थली होना है। वे मेरे प्रिय कवि रहे हैं। इस अद्भुत चित्तरे और छायावाद के प्रमुख स्तंभ ने मुझे बहुत प्रभावित किया। विद्यार्थी जीवन में 'ग्राम्या', 'पल्लव' आदि की कितनी ही कविताएं मुझे कंठस्थ थी। 'मौन निमंत्रण' और 'नौका विहार' जैसी कविताएं मुझे आज भी वैसी ही भावभूमि में पहुंचा देती हैं।

प्रायः कवि व्यक्ति के मनोभावों में सीमित होकर कविता लिखते हैं। पंतजी ने व्यक्ति को समाज में, समाज को मानवता में और मानवता को सृष्टि के अन्तर्वाह्य विकास क्रम में रखकर देखा है। प्रकृति ही उनकी सहचरी है। वे जीवनभर अविवाहित रहे। प्रकृति के अतिरिक्त और किसी का रूपजाल उन्हें सम्पोहित नहीं कर सका।

नैनीताल की यात्रा सानंद संपन्न कर मैं अल्मोड़ा के लिए रवाना हुआ। भवाली, भीमताल होते हुए देवदार के वृक्षों से ढकी मोहक घाटियों के बीच सर्पली सड़क पर हमारी कार तेज रफ्तर से दौड़ रही थी। पहाड़ी दृश्यों ने जैसे मुझे सम्मोहित-सा कर दिया था।

यह पहाड़ी प्रदेश जितना खूबसूरत है, उतना ही यहां के निवासी भी। श्रम से अपनी जीविका चलाने वाले लोगों के चेहरों पर अजीब तरह की अलमस्ती और निश्चंता झलकती है। शहरी काइयांपन से अभी वे अछूत हैं। पहाड़ की हिमानी हवा गालों पर थपकी-सी लगाती है। औषधीय वनस्पतियों का संस्पर्श करके आई ऐसी संजीवनी हवा हम शहरी लोगों के नसीब में कहां? मन जैसे कह उठा-तुम लोग भाग्यशाली हो प्रकृति पुरो! हम तो एक संवेदनहीन शहर की गंधाती हवा में घुले शीशे और कॉबैन को हर सास के साथ पीने के लिए अभिशप्त हैं और अभ्यस्त भी। तुम्हारी हमारी क्या तुलना।

हम अल्मोड़ा के काफी निकट पहुंच चुके थे। मार्ग में 'कैंची' नामक



पर स्थित यह सूर्य मंदिर पर्यटकों के लिए मनभावन स्थान है। अल्मोड़ा से आठ कि.मी. की दूरी पर चित्तर्इ मंदिर कुमायूं के लोगों की अटूट आस्था का प्रतीक है। अल्मोड़ा से तेरह कि.मी. की दूरी पर देवदार के वृक्षों से ढकी 'जोगेश्वर' एक मनोहारी घाटी है। अल्मोड़ा से मात्र बारह कि.मी. की दूरी पर ब्राइट एण्ड कार्नर एक ऐसा स्थान है, जहां से हिमालय के शिखरों के बीच सूर्योदय का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है। कुमायूं की संस्कृतिक विविधताओं का केन्द्र भी अल्मोड़ा को कहा जा सकता है।

-9, लाजपत राय मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली-11006

● अध्यक्षीय ●

मनीष जैन

जीवन एक उत्सव है



अपने आप से प्रश्न किया- नए वर्ष की अगावानी में हम किसे अलविदा कहें? अलविदा और अगावानी कालचक्र के दो पहिए हैं। हम जीवन को न अतीत से अलग कर सकते हैं और न भविष्य से अनछुआ रख सकते हैं, क्योंकि एक जीवन का जीवा सच है और दूसरा जीवन विकास का सपना। इसलिये बड़े आदर्शों की अपेक्षा एक छोटा-सा सवाल ही अपने आपसे हल करने की कोशिश करें कि नए वर्ष की अगावानी में हम उन चीजों को अलविदा कहें जो हमें तनाव दें और उन चीजों का स्वागत करें जो हमारे जीवन में उत्सव एवं आनन्द का संचार करें।

आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, वहां तनाव का स्तर बहुत ज्यादा है। जिदी में आराम कम और भागदौड़ ज्यादा है। प्रतियोगिता इस कदर बढ़ चुकी है कि हर कोई आगे बढ़ने की चाह में बहुत कुछ खोता जा रहा है। इसका अंदाजा उसे खुद नहीं, क्योंकि इस भागमभाग में यह सोचने की फुरसत भी किसी के पास नहीं कि हम क्या पाने के लिए क्या खोते जा रहे हैं? मनोरंजन को ही हमने खुशी मान लिया है और यह खुशी हमें यांत्रिक वस्तुओं से मिल रही है, लेकिन मन की जिस सच्ची खुशी-शांति व आनंद की जरूरत हमारे जीवन को है, उसे हम कितना जी रहे हैं, कितना भोग रहे हैं? कितना भोग पा रहे हैं। इसी पर हमें चिन्तन-मंथन करना है। हम कई बार सोचते हैं, खासतौर पर तब, जब नया साल दस्तक देता है कि कुछ समय अपने लिए जरूर निकालेंगे। नए साल पर कई तरह के संकल्प हम करते हैं। कुछ अपने लिए, कुछ भविष्य की योजनाओं से जुड़े, लेकिन जब काम करने या प्राथमिकता की बाबा आती है तो सबसे पहले हम खुद को अनदेखा करते हैं। कई संपन्न लोग हैं, जिनके पास बड़ा घर है, अपनी गाड़ी है, घर में काम करने वाले नौकर-चाकर हैं, उनके पास सुबह नाश्ता करने या सायं परिवार के साथ मिलकर भोजन करने के लिए फुरसत के दो पल नहीं हैं। ऐसे लोग भला क्या मायने समझेंगे जीवन में उत्सव एवं आनन्द के?

इसलिये नये वर्ष की अगावानी के प्रथम चरण में हम तनाव एवं चिन्ताओं को खूंटी पर टांग कर सुख, आनन्द और उत्सव को जीने के लिये संकलिप्त हो जायें। उत्सवधर्मिता जीवन को नये मायने दे सकती है। जरूरत है जीवन में उत्सवधर्मिता को विकसित करने की और इसके लिये नये वर्ष के संकल्पों में आप स्वयं को उत्सवप्रिय एवं उत्सवधर्मी बनायें।

आप स्वयं को देखें। यदि आप उगती भोर को देखकर अपने अंतर में एक पवित्रता-बोध महसूस करते हैं, नदियों का प्रवाह आपके भीतर यात्राएं जगा जाता है और खिलते हुए फूलों, बारिश में भीगते हरित-पत्रों की सिहरन में जीवन-राग गूंजता हुआ सुनते हैं, तो आपमें यह उत्सव-भाव बसा हुआ है। यह कब, कहां, कैसे जाग उठेगा कहा नहीं जा सकता। पर इसके जागने के बाद जीवन के नए आयाम खुलने लगते हैं, नई दिशाएं बुलाने लगती हैं। रंगों में नए अर्थ प्रस्फुटित हो उठते हैं।

आनन्द का संचार जीवन में उत्सव का माहौल पैदा करता है। रही बात पूरा जीवन की उत्सवमयी हो जाए तो यह एक स्थिति है, जिसकी ओर बढ़ने की कोशिश में हम अपने जीवन में खुशियां और आनंद भरने का प्रयास करते हैं। चूंकि जीवन का अपना स्वरूप है। जिदी के अपने उत्तर-चढ़ाव हैं। जीवन में अच्छा समय भी आता है और बुरा भी, इसलिए हर दिन उत्सव बन जाए, ये आसान नहीं। बस बेहतर आनंदमयी जीवन के लिए एक सकारात्मक सोच और पहल करने का एक खुशनुमा सकारात्मक विचार चाहिए।

नेक होना और नेक काम करते रहना, खुश रहना और अपने चारों ओर खुशियां खिखेरते रहना उत्सवधर्मिता का प्रथम लक्षण है। ऐसा करने से न सिर्फ आपकी जिंदगी को नया अर्थ मिलता है, बल्कि आपकी मौजूदगी पूरे वातावरण को खुशनुमा व खूबसूरत बनाए रखती है।

श्रीकृष्ण ने कहा है- जीवन एक उत्सव है। उनके इस कथन पर हम भरतीयों का पूर्ण विश्वास है। हम जीवन के हर दिन को उत्सव की तरह जीते हैं, ढेरों विसंगतियों और विद्रूपताओं से जूँझते हुए। संकट में होशमंद रहने और हर मुसीबत के बाद उठ खड़े होने का जब्बा विशुद्ध भरतीय है और ऋतु-राग गुनगुनाते हुए अलग-अलग मौसम में उत्सव मनाने का भी। यही वजह है कि हम दुखों एवं संकटों से घिरे होने पर भी कहते हैं- जब कल नहीं रहा तो आज भी नहीं रहेगा। यही सोच हमें पूरे विश्वास से खड़े होने की सामर्थ्य देती है।

नये वर्ष की अगावानी से पूर्व अलविदा उस सोच, समय, शक्ति, श्रम, संकल्प, चाह, भाग्य, नियति और कर्म को दें जिनका साथ अशुभ को जन्म देता है या आपकी उत्सवधर्मिता को लीलता है। नये वर्ष के स्वागत में अगावानी करें उस क्षण की जो सरजता जाए आत्मविकास की अनन्त संभावनाएं, खोलता चला जाए आनन्द और खुशी की खिड़कियां। ■

The Miracle of Life nurtured by a woman who gave us love and sacrifice...MOTHER



We deeply mourn the demise of our loving

PUSHPA JAIN

22 September 1939 - 9 November 2011

We miss your love, care and affection. You will remain in our hearts forever.
Remembered by

NIRMAL KUMAR JAIN (HUSBAND)	+91– 9888005336
SANJIV JAIN (SON)	+91 – 9815199268
PRASHANT JAIN (SON)	+91– 9815101168

RESIDANCE: 267, ADARSH NAGAR, JALANDHAR

L.M.G. ENGINEERING COMPANY

Manufacturers and Exporters of:

LIVE BRAND [ISI] MARKED HOT GALVANISED MALLEABLE PIPE FITTINGS & SCAFFOLDINGS
B-23 INDUSTRIAL FOCAL POINT, JALANDHAR (PUNJAB) – 144004

LIVE

IDOL

IDEAL

LIFE

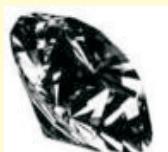
SUPREME METAL INDUSTRIES THE MAHAVIR VALVES INDUSTRIES

Manufacturers and Exporters of:

LIFE & IDEAL BRAND [ISI] MARKED GUNMETAL AND BRASS VALVES AND COCKS
C-71 INDUSTRIAL FOCAL POINT, JALANDHAR (PUNJAB) – 144004



SHREE AADINATH TRADING COMPANY

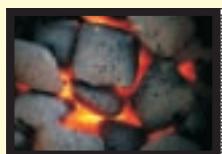


BLACK DIAMOND MOVERS

COAL CONSULTANTS, COAL CO ORDINATORS, COAL MERCHANTS ,COAL HANDLING AGENTS



HIGHLIGHTS



- ◆ Leading Coal Handling Agents and Coordinators since 45 years.
- ◆ Complete Coal Solutions under one Roof.
- ◆ Handling bulk Coal requirements of Power Plants, Iron and Steel Plants and Paper Mills from the various subsidiaries of Coal India Ltd.
- ◆ Expertise in Coal Linkage from Ministry of Coal and Coal India Ltd.
- ◆ Expertise in Rake Loading/Unloading and Liasioning.



JAIN GROUP

Branches: Assam, Madhya Pradesh
Maharashtra, Uttar Pradesh
Uttarakhand, West Bengal
Jharkhand

CONTACT DETAILS:

Address – BJ 63, Ground Floor, Sec-2,
Salt Lake, Kolkata. (W.B)

Contact Person:

Amit Jain- +91 9412702749

Ankit Jain- +91 9830773397

blackdiamondmovers@gmail.com

If undelivered please return to:

Editor, Samridha Sukhi Pariwar, E-253, Saraswati Kunj Apartment, 25 I. P. Extension, Patparganj, Delhi-110092